लघु संस्कृत व्याकरण तथा रचना-विधि



लघु संस्कृत व्याकरण
तथा
रचना-विधि

लेखक

डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल

संशोधन कर्त्री

डॉ॰ अनुपमा सेठ

एम॰ए॰ (संस्कृत), पी-एच॰डी॰

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा॰ लि॰

888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़,

नई दिल्ली-110 005 (भारत)

शाखाएँ

बैंगलोर : आवास न॰ 6/2, III मेन रोड, एस॰के॰ गार्डेन, बेन्सन टाउन पोस्ट, बैंगलोर-560046 दूरभाष : 080-3534673

चेन्नई : 176, पीटर्स रोड, इंदिरा गार्डेन्स, रायपेट, चेन्नई-600014 दूरभाष : 044-8413413

हैदराबाद : 1-1-230/6, विवेक नगर, चिक्कडपल्ली, हैदराबाद-500020 दूरभाष : 040-7645614

जयपुर : 165, इंद्रा कालोनी, वनी पार्क, जयपुर-302016

प्रकाशक:
पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०
888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग़,
नई दिल्ली-110 005 (भारत)
दूरभाष : 7770067, 3522997, 7525528
फैक्स : 91-11-7776058

संस्करण : संशोधित, 2000

कोड नं. : 12739
मूल्य : Rs 40-00 पये
ISBN : 81-209-0644-6

प्रिय ग्राहक

आपको जाली/नकली पुस्तकों से बचाने के लिए हमने इस पुस्तक में यह होलोग्राम चिपकाया हुआ है । यदि यह होलोग्राम यहाँ नहीं है तो कृपया पुस्तक को न खरीदें क्योंकि यह जाली/नकली हो सकती है । अगर आपको कोई पुस्तक बिना होलोग्राम के मिले, तो हमें सूचित करें ।

प्रकाशक

मुद्रक
पीयूष प्रिंटर्स पब्लिशर्स प्रा० लि०
जी-12, उद्योग नगर,
रोहतक रोड इन्डस्ट्रीयल एरिया,
नई दिल्ली-110 041 दूरभाष : 5472440

संशोधित संस्करण की भूमिका

समय गतिमान है। यह उक्ति सिर्फ समय के साथ ही नहीं बल्कि शिक्षा के साथ भी चरितार्थ होती है। समय के परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा में भी परिवर्तन विद्यमान है। शिक्षा की धाराएँ लगातार इधर-उधर मुड़ती रहती हैं।

'लघु संस्कृत व्याकरण तथा रचना-विधि' का यह संस्करण विद्वान अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को सौंपते हुए हमें अपार खुशी हो रही है। प्रस्तुत पुस्तक में समय के अनुकूल कई परिवर्तन किए गए हैं। जिसे हम शिक्षा की गतिशील धारा कह सकते हैं।

पूर्व प्रकाशित पुस्तक की सफलता ने प्रेरित किया और हम सचेत रहे कि पुस्तक विद्यार्थियों के लिए लगातार प्रासंगिक बनी रहे। इसी का ध्यान रखते हुए तथा प्राप्त सुझावों का सम्मान करते हुए लगभग सभी अध्यायों में समयानुकूल परिवर्तन किया गया है तथा चित्रों के माध्यम से पुस्तक को उत्कृष्ट तथा सहज बनाया गया है। एक तरफ जहाँ **पर्यायवाची शब्द** तथा **विपरीतार्थक शब्द** के नए अध्याय जोड़े गए हैं वहीं **नए निबंधों** का भी समावेश किया गया है तथा यह भी बताया गया है कि रूपों को याद करने की विधि क्या है।

प्रस्तुत संस्करण के बारे में आपके विचारों का हम स्वागत करेंगे।

— प्रकाशक

भूमिका

संस्कृत में प्रवेश लेने वाले प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए इस 'लघु संस्कृत व्याकरण' की रचना की गई है । इसमें संस्कृत सिखाने की नवीन मनोवैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया गया है । यह इस प्रकार है :

आरम्भिक पाठों में अकारान्त कर्त्ता शब्द और छोटी-छोटी क्रियाओं का मेल सिखाया गया है और साथ ही पुँल्लिग शब्दों और धातुओं के वर्तमान काल के रूप देकर उनकी बार-बार आवृत्ति एवं अध्ययन कराया गया है ।

इसके बाद 'आदर्श अनुवाद' (Model Translation of Hindi into Sanskrit) कराके फिर विद्यार्थी को थोड़े-से छोटे-छोटे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया गया है ।

इस (Slow and steady wins the race) की धीमी गति से एक प्रकार के रूपों को धीरे-धीरे आवृत्तिपूर्वक सिखाने का प्रयास किया गया है, जिनको एक बार ध्यान से पढ़ता हुआ विद्यार्थी अनायास ही संस्कृत के रूपों और अनुवाद-प्रणाली से परिचित हो जाता है, मानो उसकी वह मातृ-भाषा हो । विद्यार्थी को तोता-रटाई से दूर रखा गया है ।

आदर्श अनुवाद और अभ्यासों में जहाँ संस्कृत में अनुवाद करने की आवृत्ति कराई गई है वहाँ साथ-ही अभ्यासों में शब्दों और धातुओं के रूपों की जानकारी के प्रश्न, बालक की बुद्धि परखने के लिए रिक्त स्थानों में उचित शब्दों के प्रयोग भी दिए गए हैं जिनसे अध्येता एक के बाद एक विभिन्न प्रकार के शब्दों एवं धातुओं के विभिन्न रूपों से अनायास ही परिचय प्राप्त करता जायेगा ।

एक शब्द और एक धातु के काल को सिखाने के पश्चात् तत्सम शब्दों और तत्सम धातुओं का ज्ञान कराये जाने की यह अनुभूत और मनोवैज्ञानिक

पद्धति है जिस पर चलकर विद्यार्थी बिना परिश्रम के संस्कृत सीखता चला जायेगा और उसे तनिक भी कठिनता प्रतीत नहीं होगी ।

सरल संस्कृत में पत्र और छोटे-छोटे निबन्ध लिखना भी योग्यता का परिचायक होता है । अन्त में सरल संस्कृत में पत्रों और प्रस्तावों के कुछ नमूने दिए गए हैं जो विद्यार्थी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे ।

पुस्तक के अन्त में दिया गया व्यावहारिक हिन्दी-संस्कृत क़ोश अनुवाद करते समय हिन्दी शब्दों की संस्कृत जानने में परम सहायक सिद्ध होगा ।

पुस्तक से परिचय प्राप्त कराना अपना कर्त्तव्य था सो करा दिया । इससे आगे तो विद्वान् अध्यापक और संस्कृतेच्छु विद्यार्थी ही इसका मूल्याँकन कर सकेंगे ।

प्रस्तुत पुस्तक में यदि किसी महानुभाव को विषय वस्तु में कुछ अभाव का अनुभव हो तो उसे निःसंकोच प्रकाशक को पत्र द्वारा सूचित करना चाहिए । आगामी संस्करण में उसे पूर्ण करने का यत्न किया जायेगा ।

— लेखक

विषय सूची

विषय		पृष्ठ
प्रथम अध्याय		
प्रथम परिच्छेद	....	1
विषय-प्रवेश		
द्वितीय परिच्छेद	....	8
शब्द-विचार		
तृतीय परिच्छेद	....	22
अकारान्त नपुँसकलिंग शब्द एवम् कारकों का अध्ययन		
चतुर्थ परिच्छेद	....	27
कारकों का अध्ययन		
पञ्चम् परिच्छेद	....	33
इकारान्त पुँल्लिग शब्द, भविष्यत्काल		
षष्ठ परिच्छेद	....	39
उकारान्त पुँल्लिग शब्द, भूतकाल		
सप्तम् परिच्छेद	....	43
ऋकारान्त पुँल्लिग शब्द, लोट् (आज्ञा)		
अष्टम् परिच्छेद	....	47
ओकारान्त शब्द, विधिलिङ्		
द्वितीय अध्याय		
प्रथम परिच्छेद	....	50
अजन्त स्त्रीलिंग शब्द और भ्वादिगण आत्मनेपद		
द्वितीय परिच्छेद	....	56
अजन्त स्त्रीलिंग शब्द, तुदादिगण		
तृतीय परिच्छेद	....	61
अजन्त स्त्रीलिंग शब्द, दिवादिगण		

विषय		पृष्ठ

चतुर्थ परिच्छेद 64

अजन्त नपुंसकलिंग शब्द, चुरादिगण

पञ्चम् परिच्छेद 67

अव्यय शब्द और अदादिगण

तृतीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद 71

सर्वनाम शब्द

द्वितीय परिच्छेद 77

संख्यावाचक शब्द

तृतीय परिच्छेद 83

स्वर-संधि

चतुर्थ अध्याय

प्रथम परिच्छेद 88

हलन्त शब्द और तनादिगण

द्वितीय परिच्छेद 94

हलन्त शब्द, स्वादिगण

तृतीय परिच्छेद 98

हलन्त शब्द

पञ्चम् अध्याय

प्रथम परिच्छेद 101

व्यंजन सन्धि

द्वितीय परिच्छेद 104

विसर्ग-सन्धि

तृतीय परिच्छेद 106

क्त्वा (त्वा) प्रत्यय

चतुर्थ परिच्छेद 109

तुमुन् (तुम्) प्रत्यय

विषय पृष्ठ

पञ्चम् परिच्छेद 110

कृत्प्रत्यय – शतृ, शानच्, क्त

षष्ठ परिच्छेद 113

समास-प्रकरण

सप्तम् परिच्छेद 116

पूरणार्थक संख्यावाचक शब्द

अष्टम् परिच्छेद 119

णिजन्त प्रकरण (प्रेरणार्थक)

नवम् परिच्छेद 120

वाच्य-प्रकरण

दशम् परिच्छेद 124

स्त्रीप्रत्यय

षष्ठ अध्याय

प्रथम परिच्छेद 127

पत्र-लेखन-विधि

द्वितीय परिच्छेद 132

प्रस्ताव-लेखन-विधि

सप्तम् अध्याय

अंग्रेजी में संस्कृत में अनुवाद 146

अष्ट अध्याय

प्रथम परिच्छेद 170

पर्यायवाची शब्द

द्वितीय परिच्छेद 172

विपरीतार्थक शब्द

तृतीय परिच्छेद 175

संस्कृत की सूक्तियाँ

परिशिष्ट

अनुवादार्थ हिन्दी-संस्कृत-कोश 176

प्रथम अध्याय

प्रथम परिच्छेद

विषय-प्रवेश

भाषा – भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मुनष्य अपने विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करता है। भाषा एक सागर के समान है जो निरन्तर गतिशील है। भाषा वाक्यों के समूह से बनती है और वाक्य का निर्माण अनेक शब्दों के समुच्चय से होता है और शब्द मूल ध्वनियों से बनते हैं। उदाहरण के लिए – 'रामचन्द्र' इस एक शब्द में 'र् + आ + म् + अ + च् + अ + न् + द् + र् + अ' इन दस ध्वनियों का मिश्रण है। व्याकरण में इन्हीं का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार व्याकरण भाषा पर आश्रित है।

व्याकरण – व्याकरण वह शास्त्र है जिसमें वर्णों के स्थान-प्रयत्न के निरूपण के साथ-साथ शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय-विवेचन, उनके विशुद्ध रूप तथा वाक्यों में उनके प्रयोग आदि के नियमों का वर्णन होता है। संक्षेप में वर्ण, पद और वाक्य—भाषा के तीन खण्डों का निरूपण करना ही व्याकरण-शास्त्र का प्रधान उद्देश्य है।

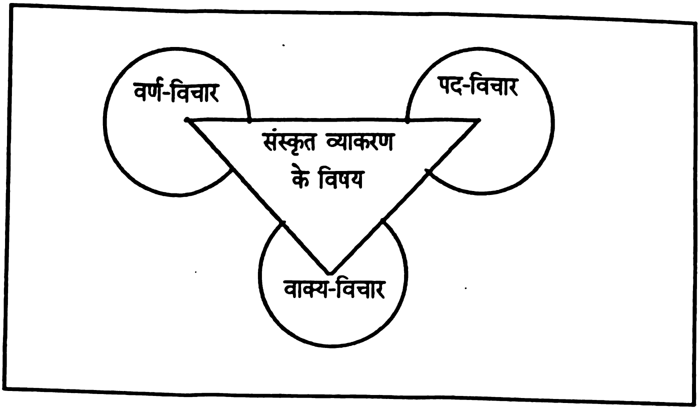
व्याकरण के विषय

व्याकरण में तीन विषयों पर विचार किया जाता है –

1. वर्ण-विचार, 2. पद-विचार, 3. वाक्य-विचार।

1. **वर्ण-विचार**—इस भाग में वर्णों के आकार, प्रकार, संयोग उच्चारण-स्थान और सन्धि आदि का ज्ञान कराया जाता है।
2. **पद-विचार**—इस भाग में शब्दों के रूप, लिंग और वचन तथा धातुओं के पुरुष, वचन एवं काल आदि का ज्ञान कराया जाता है।

3. **वाक्य-विचार** — इस भाग में शब्दों द्वारा वाक्यों की रचना, वाक्यों में शब्दों का विशेष प्रयोग एवं पत्र-प्रस्ताव आदि की रचना का विस्तृत वर्णन होता है ।



1. वर्ण-विचार

वर्ण — छोटी-से-छोटी ध्वनि को 'वर्ण' कहते हैं । वर्ण का दूसरा नाम 'अक्षर' भी है ।

'वर्ण एक ऐसी व्यक्त तथा छोटी-से-छोटी अखण्ड ध्वनि है जो मुख के भीतर तालु, कण्ठ तथा जिह्वा आदि के योग से उत्पन्न होती है ।' जैसे —अ, इ, उ, क, च इत्यादि ये सारी ध्वनियाँ 'अखण्ड' हैं क्योंकि इन्हें दो खण्डों में विभाजित नहीं किया जा सकता ।

वर्ण दो प्रकार के हैं — 1. स्वर, 2. व्यञ्जन ।

1. **स्वर** – जिन वर्णों के उच्चारण के लिए किसी दूसरे वर्ण की सहायता न लेनी पड़े उन्हें 'स्वर' कहते हैं । संस्कृत भाषा के स्वर वर्ण ये हैं — अ आ, इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, लृ, ए ऐ, ओ, औ ।

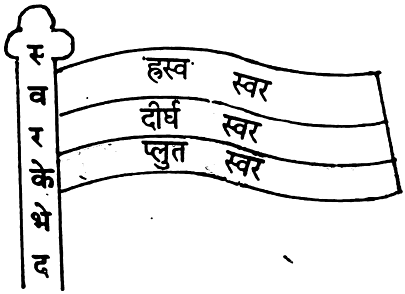
ये स्वर तीन प्रकार के हैं — 1. ह्रस्व, 2. दीर्घ, 3. प्लुत ।

1. **ह्रस्व**—जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगे वे 'ह्रस्व स्वर' कहलाते हैं । ह्रस्व स्वर ये हैं—अ, इ, उ, ऋ, लृ

	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	कवर्ग
	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	चवर्ग
स्पर्श	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	टवर्ग
	त्	थ्	द्	ध्	न्	तवर्ग
	प्	फ्	ब्	भ्	म्	पवर्ग
अन्तःस्थ		य्	र्	ल्	व्	
ऊष्म	श्	ष्	स्	ह्		

2. **दीर्घ स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगे वे 'दीर्घ स्वर' होते हैं। दीर्घ स्वर ये हैं—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

प्लुत—वे स्वर जिनके उच्चारण में ह्रस्व की अपेक्षा तिगुना समय लगे उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। जैसे—ओ३म् इत्यादि। इसके लिए ३ का चिन्ह लगाया जाता है। किसी को दूर से पुकारने पर भी प्लुत स्वर का ही प्रयोग होता है। वैदिक भाषा में प्रायः इसका प्रयोग होता था।



3. **संयुक्त स्वर या सन्धि स्वर**—ए, ऐ और ओ, औ इन्हें संयुक्त स्वर अथवा 'सन्धि स्वर' भी कहते हैं क्योंकि ये दो भिन्न स्वरों के संयोग से बने हैं। जैसे—

अ + इ = ए। अ + ए = ऐ। अ + उ = ओ और अ + ओ = औ।

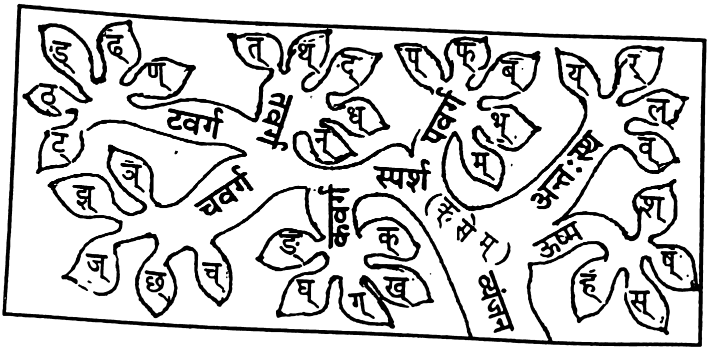
अं, अः — ये कोई भिन्न स्वर नहीं। ये तो अ के ऊपर अनुस्वार बिन्दु (ं) लगाने से अं और अ के आगे विसर्ग (:) लगाने से अः बने हैं।

स्वरों के भेद —साधारण रूप से स्वरों के दो भेद माने जाते हैं —

1. **साधारण स्वर**—वे स्वर जो किसी भिन्न स्वर के मेल से न बने हों जैसे—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ।
2. **सन्धि स्वर**—वे स्वर जो भिन्न-भिन्न स्वरों के मेल से बने हों। जैसे—ऐ (= अ + ऐ) (= अ + ए), ओ (= अ + उ), औ (= अ + ओ)।

2. **व्यञ्जन**—जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जायें उन्हें 'व्यञ्जन' कहते हैं। क से ह तक व्यञ्जन हैं।

हल् का चिह्न—जब किसी व्यञ्जन में स्वर नहीं लगा होता तो उसके नीचे (्) ऐसा चिह्न लगा देते हैं। उसे 'हल्' कहते हैं। जैसे—क्, ख्, ग्, प्, ह् इत्यादि।



वर्ग— क, च, ट, त, प के आगे 'वर्ग' शब्द जोड़ने से अपने विभाग के पाँच अक्षरों का बोध कराते हैं। जैसे—कवर्ग कहने से क, ख, ग, घ, ङ का ज्ञान हो जाता है। इसी प्रकार चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग को भी समझें।

मात्रा—स्वर जब व्यंजनों में लगते हैं तो उनका स्वरूप बदल जाता है, उन्हें 'मात्रा' कहते हैं।

स्वर और उनकी मात्राएँ

अ	x	ऋ	ृ
आ	ा	ॠ	ॄ
इ	ि	ए	े
ई	ी	ऐ	ै
उ	ु	ओ	ो
ऊ	ू	औ	ौ

नोट—ह्रस्व अ की कोई मात्रा नहीं होती, यह व्यंजनों में लगा हुआ होता है, यदि न लगा हो तो व्यंजन क्, ख्, ग् आदि हल् व्यंजन कहलाते हैं। 'लृ' इसी रूप में व्यंजन में लग जाता है। जैसे—क् + लृ = क्लृ।

मात्राओं सहित व्यंजन

क्	+	अ	=	क	क्	+	ृ	=	कृ
क्	+	ा	=	का	क्	+	ॄ	=	कॄ
क्	+	ि	=	कि	क्	+	े	=	के
क्	+	ी	=	की	क्	+	ै	=	कै
क्	+	ु	=	कु	क्	+	ो	=	को
क्	+	ू	=	कू	क्	+	ौ	=	कौ

इसी प्रकार ख्, ग्, घ् आदि सभी व्यंजनों में ये मात्राएँ लगती हैं। जैसे—ख खा, खि खी, खु खू, खृ खॄ, खे खै, खो, इत्यादि।

स्वर और व्यंजन वर्णों का परिगणन

संस्कृत भाषा में प्रयुक्त स्वरों और व्यंजनों की सूची अलग-अलग दी जा रही है—

स्वर —	ह्रस्व	—	अ, इ, उ, ऋ, लृ
	दीर्घ	—	आ, ई, ऊ, ॠ
	मिश्रित या संयुक्त	—	ए, ऐ, ओ, औ ।

इनमें से मुख्य रूप से 11 स्वरों की गणना की जाती है जो है—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ इत्यादि । लृ का प्रयोग वैदिक है जो अब नहीं मिलता ।

व्यञ्जन	क	ख	ग	घ	ङ ।	स्पर्श
	च	छ	ज	झ	ञ ।	स्पर्श
	ट	ठ	ड	ढ	ण ।	स्पर्श
	त	थ	द	ध	न ।	स्पर्श
	प	फ	ब	भ	म ।	स्पर्श
		य	र	ल	व ।	अन्तःस्थ
		श	ष	स	ह ।	ऊष्म

अनुस्वार और विसर्ग

उपर्युक्त वर्णों के अतिरिक्त अनुस्वार (ँ) और विसर्ग (:) इन दो का भी प्रयोग मिलता है । विद्वान लोग प्रायः स्वर और व्यंजन दोनों में इसकी गणना करते हैं ।

संयुक्त व्यंजन—इनमें वे व्यंजन आते हैं जो दो व्यंजनों के मेल से बने हैं जैसे—

क्ष = क् + ष्

त्र = त् + र्

ज्ञ = ज् + ञ्

इस प्रकार तीन संयुक्त व्यंजनों को छोड़कर शेष 33 व्यंजन बचते हैं । वैसे व्यंजन की संख्या 36 मानी जाती है ।

व्यंजन-संयोग

संस्कृत-भाषा में जो प्राय: देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, व्यंजनों को मिलाकर शुद्ध रूप से लिखने में बहुत से छात्रों को कभी-कभी कठिनाई का अनुभव होता है। इसीलिए संयुक्त व्यंजनों को लिखने के विषय में कुछ नियम दिए जा रहे हैं।

1. जिन स्वर-रहित व्यंजनों के अन्त में 'ा' इस प्रकार की खड़ी रेखा लगी होती है यदि उन्हें किसी अगले व्यंजन के साथ संयुक्त करना हो तो इस रेखा को हटाकर उसे अग्रिम व्यंजन के साथ लगा देते हैं। जैसे–

   स् + त = स्त; न् + त = न्त; म् + य = म्य;

   ख् + य = ख्य; ग् + य = ग्य; भ् + य = भ्य इत्यादि।

2. जब र् का किसी अन्य वर्ण के साथ संयोग करना होता है तो यदि र् उस व्यंजन के बाद में बोला जाता है तो वहाँ पर र् को उस व्यंजन के नीचे जोड़ देते हैं, जैसे–

   क् + र् = क्र; प् + र् = प्र; छ् + र् = छ्र; ट् + र् = ट्र;

   ग् + र् = ग्र; ध् + र् = ध्र; ब् + र् = ब्र इत्यादि।

3. यदि र् का उच्चारण पहले होता हो तो र् को अग्रिम वर्ण के ऊपर लिखते हैं, जैसे–

   र् + ण = र्ण ; र् + त = र्त; र् + ख = र्ख, इत्यादि।

4. कुछ संयुक्त वर्ण ऐसे लिखे जाते हैं कि उन दोनों का मौलिक रूप छिप जाता है। जैसे–

   क् + त = क्त; त् + त = त्त।

अभ्यास

1. व्याकरण किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं ?
2. ह्रस्व और दीर्घ स्वरों को अलग-अलग करके लिखिए।
3. व्यंजन किसे कहते हैं और वे कौन-से हैं ?
4. 'घ्' में सभी मात्राएँ लगाकर लिखिए।

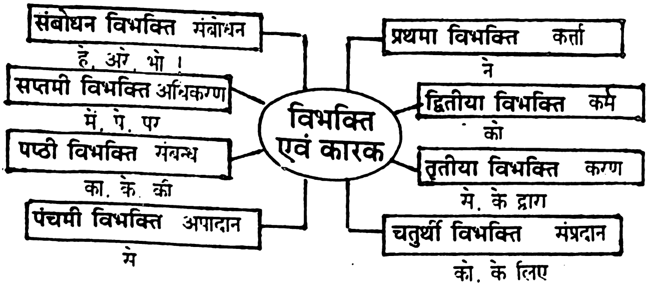
द्वितीय परिच्छेद

शब्द-विचार

शब्द– केवल सार्थक वर्ण या अक्षर अथवा अनेक वर्णों के मेल से बनी हुई सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं; जैसे– न् + अ + र् + अ = नर = मनुष्य । व्याकरण में सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है ।

संज्ञा शब्दों के साथ जिन विभक्तियों या कारकों का प्रयोग होता है, पहले चिह्नों सहित उन कारकों को देखिए ।

कारक, विभक्ति एवं चिह्नः–



विभक्ति या कारक और उनके चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्त्ता	०, ने
द्वितीया	कर्म	०, को
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	संप्रदान	को, के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होने में)
षष्ठी	संबन्ध	का, के, की
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर
संबोधन	संबोधन	हे, अरे, भो !

प्रत्यय

ऊपर कहे गये चिह्नों के लिए संस्कृत में प्रत्येक विभक्ति के तीनों वचनों के लिए अलग-अलग चिह्न हैं, इन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं। ये प्रत्यय शब्दों के साथ लगकर उनके संस्कृत के रूपों की रचना करते हैं। ये प्रत्यय शब्दों के साथ लगकर बदलते भी रहते हैं।

विभक्तियों के प्रत्यय (चिह्न) और अर्थ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
प्रथमा	स् (सु)	औ	जस् (<जस्)	ने
द्वितीया	म् अम्	औ	अस् (<शस्)	को
तृतीया	एन आ	भ्याम्	ऐस् (भिस्)	से, के द्वारा
चतुर्थी	य, यै, ए, स्मै, स्यै	भ्याम्	भ्यस्	को, के लिए
पंचमी	आत्, स्मात् याः, स्याः, अस्	भ्याम्	भ्यस्	से (=विभाजन के अर्थ में)
षष्ठी	स्य, स्याः याः, अस्	अयोः ओस्	नाम्, आम्	का, के, की
सप्तमी	याम्, स्याम् स्मिन्, औ, इ	अयोः ओस्	सु (ष)	में, पर
सम्बोधन	कोई नहीं	ओ, ई	अस्, इ	शब्द से पूर्व, हे, भोः, रे, हञ्जे आदि लगाया जाता है।

इस प्रकार विभक्तियों के 21 प्रत्यय होते हैं जिनके संयोग से संज्ञा पद बनता है; जैसे—

राम + सु = रामः यहाँ उ लोप तथा स् को विसर्ग हो जाता है।

प्रत्यय युक्त अकारान्त 'नर' शब्द के रूप अर्थ सहित (पुँल्लिग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नरः	नरौ	नराः
	(एक मनुष्य)	(दो मनुष्य)	(सब मनुष्य)
द्वितीया	नरम्	नरौ	नरान्
	(एक मनुष्य को)	(दो मनुष्यों को)	(सब मनुष्यों को)
तृतीया	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
	(एक मनुष्य से, के द्वारा)	(दो मनुष्यों से)	(सब मनुष्यों से)
चतुर्थी	नराय	नराभ्याम्	नरेभ्यः
	(एक मनुष्य के लिए)	(दो मनुष्यों के लिए)	(सब मनुष्यों के लिए)
पंचमी	नरात्	नराभ्याम्	नरेभ्यः
	(एक मनुष्य से)	(दो मनुष्यों से)	(सब मनुष्यों से)
षष्ठी	नरस्य	नरयोः	नराणाम्
	(एक मनुष्य का, के, की)	(दो मनुष्यों का)	(सब मनुष्यों का)
सप्तमी	नरे	नरयोः	नरेषु
	(एक मनुष्य में, पर)	(दो मनुष्यों में)	(सब मनुष्यों में)
सम्बोधन	हे नर !	हे नरौ !	हे नराः !
	(हे मनुष्य !)	(हे दो मनुष्यो !)	(हे सब मनुष्यो !)

(नर के समान) अकारान्त बाल—बालक, पुँल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालः	बालौ	बालाः
द्वितीया	बालम्	बालौ	बालान्
तृतीया	बालेन	बालाभ्याम्	बालैः
चतुर्थी	बालाय	बालाभ्याम्	बालेभ्यः
पंचमी	बालात्	बालाभ्याम्	बालेभ्यः
षष्ठी	बालस्य	बालयोः	बालानाम्
सप्तमी	बाले	बालयोः	बालेषु
सम्बोधन	हे बाल !	हे बालौ !	हे बालाः !

इस शब्द के सभी विभक्तियों और वचनों में नर शब्द के समान स्वयं अर्थ लिखो ।

नर के समान रूप वाले कुछ अकारान्त पुँल्लिग शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
छात्र	विद्यार्थी	अश्व	घोड़ा
अध्यापक	अध्यापक	गज	हाथी
विद्यालय	विद्यालय	जन	मनुष्य
कपोत	कबूतर	काक	कौआ
रजक	धोबी	शुक	तोता
पाचक	रसोइया	पिक	कोयल
नृप	राजा	मयूर	मोर
मूषक	चूहा	व्याध	शिकारी
मार्जार	बिलाव (बिल्ली)	कर	हाथ
भृत्य	नौकर	घट	घड़ा
अनल	आग	वक	बगुला
कुक्कुर	कुत्ता	अनिल	वायु, हवा
भूप	राजा	ज्वर	बुखार
शेष	क्रोध	पिक	कोयल
पितृण्य	चाचा	द्विज	ब्राह्मण, पक्षी
अनल	अग्नि	नद	दरिया, नदी
मातुल	मामा	गन्ध	बू
तुरंग	घोड़ा	व्याघ	शिकार
अज	बकरा	विहग	पक्षी
नर	मनुष्य	स्तेन	चोर
गज	हाथी, सर्प	धूर्त	गुण्डा
मनुज	मनुष्य	सिंह	शेर
कुरङ्ग	हिरण	मत्स्य	मछली
वृक्ष	पेड़	स्वेद	पसीना

न्याय	इन्साफ	द्विरेफ	भौंरा
सागर	समुद्र	पर्वत	पहाड़
कलह	झगड़ा	वैद्य	हक़ीम
चन्द्र	चन्द्रमा	मयूर	मोर

इसी प्रकार—सूर्य, पुत्र, पर्वत, समुद्र, वृक्ष, सिंह, ग्राम, देव, सर्प, कूप, चन्द्र, मंगल, चोर, मनुष्य, इत्यादि अकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप होते हैं ।

पुँल्लिग अकारान्त शब्द रूप

नियम— यदि शब्द में 'र्' या 'ष्' इन दो वर्णों में से कोई एक हो तों किसी अन्य वर्ण की रुकावट न होने पर इनसे अगले 'न' को 'ण' हो जाता है तथा स्वर ह्, य्, व्, पवर्ग एवं कवर्ग, इनमें से किसी एक या दो या अधिक का व्यवधान (रुकावट) होने पर भी न् को 'ण्' हो जाता है । जैसे—रामेण, रामाणाम्, इत्यादि ।

अपवाद—द्वितीया विभक्ति बहुवचन के 'न' के विषय में यह नियम लागू नहीं होता । इसीलिए 'रामान्', 'हरीन्' इत्यादि शब्दों में 'न' को 'ण' नहीं होता ।

अनुवाद करने के लिए कारकों का वर्णन

कर्त्ता का अध्ययन

कर्त्ता—क्रिया के करने वाले को 'कर्त्ता' कहते हैं । कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है । जैसे राम जाता है — 'रामः गच्छति । इस वाक्य में 'जाता है' (गच्छति) क्रिया है और इस क्रिया का कर्त्ता 'राम' है । अतः 'राम' में प्रथमा विभक्ति है ।

आवृत्ति	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्त्ता	प्रथमा	छात्रः	छात्रौ	छात्राः
		(एक छात्र)	(दो छात्र)	(सब छात्र)
,,	,,	गजः	गजौ	गजाः
,,	,,	जनः	जनौ	जनाः
,,	,,	पुत्रः	पुत्रौ	पुत्राः इत्यादि

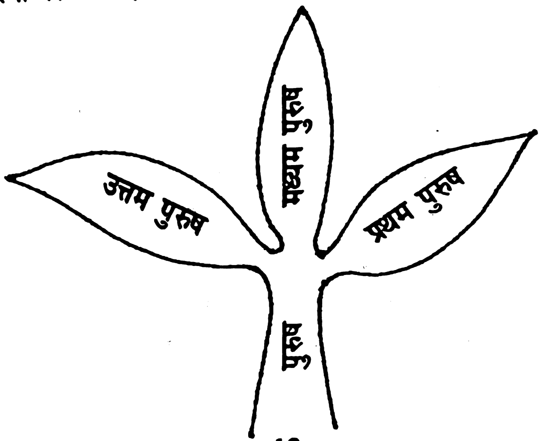
पुरुष

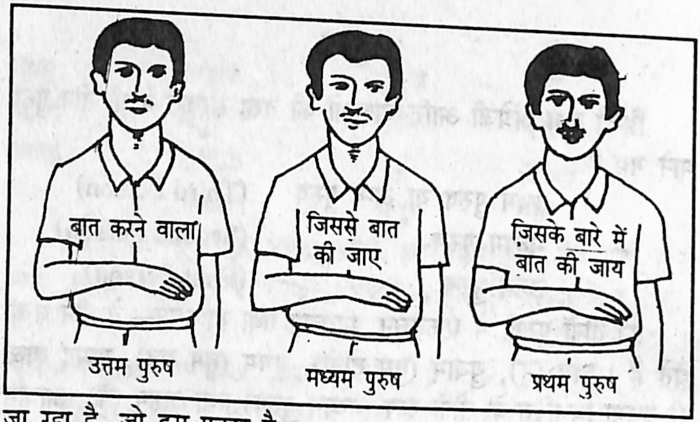
हिन्दी तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं की तरह संस्कृत में भी तीन पुरुष माने गए हैं :

प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष	(Third Person)
मध्यम पुरुष	(Second Person)
उत्तम पुरुष	(First Person)

इन तीनों पुरुषों में एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन—ये तीन वचन होते हैं । त्वम् (तू), युवाम् (तुम दोनों), यूयम् (तुम सब), युष्मद् शब्द की प्रथमा विभक्ति के तीनों रूप (मध्यम पुरुष) तथा अहम् (मैं), आवाम् (हम दोनों), वयम् (हम सब) अस्मद् शब्द की प्रथमा विभक्ति के तीनों रूप (उत्तम पुरुष) होते हैं । इनके अतिरिक्त सः (वह), तौ (वे दोनों), ते (वे सब) । सा (वह), ते (वे दोनों), ताः (वे सब), तत् (वह) ते (वे दोनों), तानि (वे सब), । तद् (पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग, और नपुंसकलिंग) की प्रथमा विभक्ति के तीनों रूप, भवान् (आप), भवन्तौ (आप दोनों), भवन्तः (आप सब) भवन् शब्द की प्रथमा विभक्ति के तीनों रूप तथा समस्त संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के कर्त्ता पद (प्रथम पुरुष) के होते हैं ।

पुरुषों का ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनका एक चक्र प्रस्तुत किया





जा रहा है, जो इस प्रकार है—

पुरुष चक्र

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
	सा (वह लड़की)	ते (वे दोनो लड़कियाँ)	ताः (वे सब लड़कियाँ)
	भवान् (आप)	भवन्तौ (आप दोनों)	भवन्तः (आप सब)
	रामः (एक राम)	रामौ (दो राम)	रामाः (बहुत से राम)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तू)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

अर्थात् उत्तम और मध्यम पुरुष के कर्तृपदों को छोड़कर सब कर्तृपद अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष कहलाते हैं। इस प्रकार देवः, रामः, श्यामः इत्यादि सब अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष के कर्तृपद हैं।

पीछे निर्दिष्ट कर्तृपदों का क्रियापदों के साथ सीधा सम्बन्ध होता है।

आदि कर्ता एकवचन प्रथम पुरुष का है तो क्रिया भी प्रथमपुरुष एकवचन की लगेगी, जैसे— राम पढ़ता है = रामः पठति । इस वाक्य में रामः प्रथम पुरुष एकवचन का है, इसलिए पठ् धातु प्रथम पुरुष एकवचन में ही प्रयुक्त हुई है ।

क्रिया (भ्वादिगण) प्रत्यय

जैसे संज्ञा-शब्दों के तीन पुरुष और तीन वचन होते हैं, उसी प्रकार क्रियाओं के भी तीन वचन और तीन पुरुष होते हैं । इसलिए धातु के साथ लगाकर उसे क्रिया बनाने वाले वर्तमान काल के प्रत्यय यहाँ दिए जाते हैं ।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

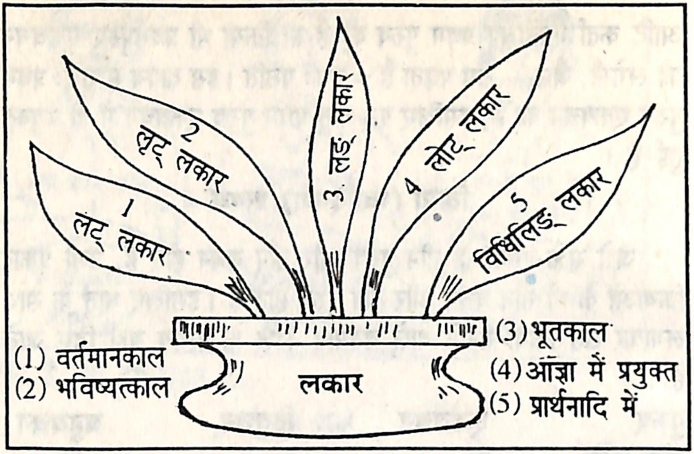
नोट—भ्वादिगण, तुदादिगण, दिवादिगण और चुरादिगण में उत्तम पुरुष में मि, वः, मः से पूर्व 'आ' भी लग जाता है ।

विकरण—प्रत्येक गण का अपना कोई-न-कोई चिह्न होता है, इस चिह्न को 'विकरण' कहते हैं । भ्वादिगण का विकरण 'अ' है जो धातुओं के साथ लग जाता है ।

पठ् धातु के साथ विकरण और प्रत्ययों का मेल

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ्+अ+ति=पठति,	पठ्+अ+तः=पठतः,	पठ्+अ+अन्ति= पठन्ति ।
पठ्+अ+सि=पठसि,	पठ्+अ+थः=पठथः,	पठ्+अ+थ=पठथ ।
पठ्+अ+आ+मि=पठामि,	पठ्+अ+आ+वः= पठावः,	पठ्+अ+आ+मः= पठामः ।

काल एवं लकार— संस्कृत व्याकरण में कालों को बताने के लिए लकारों



का प्रयोग होता है। वैसे तो लकार दस हैं, किन्तु मुख्यतया पाँच लकारों का ही प्रयोग होता है। वे भिन्न-भिन्न काल को प्रकट करते हैं। वे ये हैं—

लकार	**काल**
लट् लकार	वर्तमानकाल
लृट् लकार	भविष्यत्काल
लङ् लकार	भूतकाल
लोट् लकार	आज्ञा में प्रयुक्त
विधिलिङ् लकार	प्रार्थनादि में

वर्तमान काल—चल रहे समय को 'वर्तमान काल' कहते हैं। वर्तमान काल में लट् लकार का प्रयोग होता है। ऊपर बताए गए 'ति, तः, अन्ति' आदि प्रत्यय वर्तमान काल (लट् लकार) के ही हैं।

कर्त्ता और क्रिया का संयोग (अर्थ सहित)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति
	(वह पढ़ता है)	(वे दो पढ़ते हैं)	(वे सब पढ़ते हैं)

मध्यम पुरुष	त्वम् पठसि (तू पढ़ता है)	युवाम् पठथः (तुम दोनों पढ़ते हो)	यूयम् पठथ (तुम सब पढ़ते हो)
उत्तम पुरुष	अहम् पठामि (मैं पढ़ता हूँ)	आवाम् पठावः (हम दोनों पढ़ते हैं)	वयम् पठामः (हम सब पढ़ते हैं)

विशेष ज्ञातव्य—मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के कर्त्ताओं का दोनों लिंगों (पुँल्लिग और स्त्रीलिंग) में प्रयोग होता है। जैसे—

मध्यम पुरुष	त्वम् (तुम पुरुष या स्त्री)	युवाम् (तुम दोनों पुरुष या स्त्री)	यूयम् (तुम सब पुरुष या स्त्री)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं पुरुष या स्त्री)	आवाम् (हम दोनों पुरुष या स्त्री)	वयम् (हम सब पुरुष या स्त्री)

इनका स्त्रीलिंग का अर्थ—

मध्यम पुरुष	त्वम् पठसि (तू पढ़ती है)	युवाम् पठथः (तुम दो पढ़ती हो)	यूयम् पठथ (तुम सब पढ़ती हो)
उत्तम पुरुष	अहम् पठामि (मैं पढ़ती हूँ)	आवाम् पठावः (हम दो पढ़ती हैं)	वयम् पठामः (हम सब पढ़ती हैं)

एक और धातु के रूप वर्तमान काल में देखिए—

वद् = बोलना, वर्तमान काल (लट् लकार)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

प्रथम पुरुष कर्त्ता के शब्दों का क्रिया के साथ प्रयोग–पठ् = पढ़ना

एकवचन	=	बालः पठति	=	एक बालक पढ़ता है ।
द्विवचन	=	बालौ पठतः	=	दो बालक पढ़ते हैं ।
बहुवचन	=	बालाः पठन्ति	=	सब बालक पढ़ते हैं ।

चल् = चलना–

नरः चलति	=	एक मनुष्य चलता है ।
नरौ चलतः	=	दो मनुष्य चलते हैं ।
नराः चलन्ति	=	सब मनुष्य चलते हैं ।

वद् = बोलना–

छात्रः वदति	=	एक विद्यार्थी बोलता है ।
छात्रौ वदतः	=	दो विद्यार्थी बोलते हैं ।
छात्राः वदन्ति	=	सब विद्यार्थी बोलते हैं ।

भ्वादिगण की धातु

क्रीड्	= खेलना – क्रीडति		खाद्	= खाना – खादति	
धाव्	= दौड़ना – धावति		खेल्	= खेलना – खेलति	
रक्ष्	= रक्षा करना – रक्षति		हस्	= हँसना – हसति	
पच्	= पकाना – पचति		भ्रम्	= घूमना – भ्रमति	
पत्	= गिरना – पतति		भज्	= भजन करना – भजति	

इनके पूरे रूप पठ् अथवा वद् के समान स्वयं उच्चारण कीजिए ।

अनुवाद करने की सरल विधि

किसी भी भाषा से संस्कृत में अनुवाद करते समय निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखने से कभी अशुद्धि नहीं होगी—

1. जिस पुरुष का कर्त्ता हो उसी पुरुष की क्रिया लगाई जाये ।
2. जिस वचन का कर्त्ता हो उसी वचन की क्रिया लगाई जाए ।
   जैसे—बालः (प्रथम पुरुष एकवचन है), पठति (प्र० पु० एकवचन है) एवं बालौ (प्र० पु० द्विवचन), पठतः (प्र० पु० द्विवचन), तथा बालाः (प्र० पु० बहुवचन), पठन्ति (प्र० पु० बहुवचन) होंगे ।

इसी प्रकार—त्वम् के साथ (मध्यम पुरुष एकवचन) पठसि, युवाम् के साथ (म० पु० द्विवचन) पठथः, और यूयम् के साथ (म० पु० बहुवचन) पठथ क्रियाएँ लगती हैं ।

इसी तरह—अहम् के साथ (उ० पु० एकवचन) पठामि, आवाम् के साथ (उ० पु० द्विवचन) पठावः और वयम् के साथ (उ० पु० बहुवचन) पठामः क्रियाएँ लगती हैं । बस, इस पुरुष और वचन की विधि को ध्यान में रख लें, कभी अशुद्धि नहीं होगी ।

3. कारकों के चिह्नों के अनुसार संस्कृत शब्द की उसी विभक्ति का प्रयोग करें । जैसे—राम को = रामम् । बाण से =बाणेन ।
4. क्रिया का प्रयोग करते समय पुरुष और वचन के साथ काल का भी ध्यान रखना चाहिए ।

कर्त्ता का आदर्श अनुवाद

प्रथम पुरुष

एक बालक हँसता है ।	बालः हसति ।
दो छात्र भागते हैं ।	छात्रौ धावतः ।
सब बालक खेलते हैं ।	बालाः क्रीड़न्ति ।
वह खाता है ।	सः खादति ।
वे दो पकाते हैं ।	तौ पचतः ।
वे सब घूमते हैं ।	ते भ्रमन्ति ।

मध्यम पुरुष

तू चलता है ।	त्वम् चलसि ।
तुम दो भजन करते हो ।	युवाम् भजथः ।
तुम सब गिरते हो ।	यूयम् पतथ ।

उत्तम पुरुष

मैं खेलता हूँ ।	अहम् क्रीड़ामि ।
हम दो खाते हैं ।	आवाम् खादावः ।
हम सब घूमते हैं ।	वयम् भ्रमामः ।

रूपों को याद करने की विधि

पहले किसी एक शब्द का रूप याद कर लेना चाहिए, तब उसी प्रकार के रूपों को याद करते समय पहले शब्द के प्रत्यय को उसमें जोड़ते जाना चाहिये, यदि कोई अन्तर हो तो उसे भी समझ लेना चाहिए । लिखकर जितना अभ्यास करें वह अच्छा है ।

इसी प्रकार धातु रूपों को याद करने के विषय में समझ लेना चाहिए ।

नवीन शब्दों के रूप बनाने या याद करने से पहले यह देख लेना चाहिए कि शब्द का लिंग कौन-सा है, उसके अन्त में कौन-सा स्वर या व्यंजन लगा है, फिर उसी लिंग और स्वर या व्यंजन को अन्त में रखने वाले शब्द के अनुसार रूप चला लेने चाहिए । यथा—हमें 'कृष्ण' शब्द की षष्ठी विभक्ति के द्विवचन का रूप याद करना है, 'कृष्ण' शब्द पुँल्लिग है, उसके अन्त में 'अ' है, इससे पूर्व हमने 'राम' शब्द के रूप याद कर लिये हैं । यह भी पुँल्लिग है और इसके अन्त में 'अ' है, इसकी षष्ठी विभक्ति के द्विवचन में 'रामयोः' रूप होता है तो 'कृष्ण' का भी 'कृष्णयोः' रूप बना लेना चाहिए ।

अभ्यास

1. नीचे लिखे संस्कृत वाक्यों का अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए :
   1. नरः धावति । 2. गोपालः हसति ।
   3. त्वम् क्रीडसि । 4. युवाम् रक्षतः ।
   5. यूयम् हसथ । 6. अहम् वदामि ।
2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
   1. एक मनुष्य बोलता है । 2. दो बालक दौड़ते हैं ।
   3. तू पढ़ता है । 4. तुम दो घूमते हो ।
   5. तुम सब खेलते हो । 6. मैं चलता हूँ ।

3. 'वद्' धातु के समान 'हस्' धातु के रूप बोलिए और लिखिए ।

4. 'बाल' शब्द के समान 'गज' शब्द के रूप लिखिए ।

रिक्त-स्थान-पूर्ति—

1. नीचे लिखे वाक्यों में दी गई धातुओं का रूप बनाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति देखिए :

आदर्श अभ्यास

रामः (पठ्) .... = रामः पठति ।
भृत्याः (धाव्) .... = भृत्याः धावन्ति ।
त्वम् (क्रीड्) .... = त्वम् क्रीड़सि ।
यूयम् (पच्) .... = यूयम् पचथ ।
अहम् (क्रीड्) .... = अहम् क्रीड़ामि ।
वयम् (भ्रम्) .... = वयम् भ्रमामः ।

2. इसी प्रकार पुरुष और वचन का ध्यान रखिए आप स्वयं निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

छात्रः (हस्) हसति । नराः (चल्) चलन्ति ।
त्वम् (रक्ष्) रक्षसि । युवाम् (हस्) हसथः ।
यूयम् (भज्) भजथ । अहम् (चल्) चलामि ।
वयम् (पत्) पतामः । ते (भ्रम्) भ्रमन्ति ।

3. नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाओं के कर्त्ता लगाइए :

अहम् पचामि । वयं पतामः ।
त्वं क्रीडसि । यूयम् चलथ ।
ते वदन्ति । अश्वः धावति ।

4. नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाओं को शुद्ध कीजिए :

अहम् हसति । हसामि त्वम् वदामि । वदसि
सः पठन्ति । पठति ते गच्छामः । गच्छन्ति वयं हसथ । हसामः

तृतीय परिच्छेद

अकारान्त नपुँसकलिंग शब्द एवं कारको का अध्ययन

संस्कृत शब्दों के तीन लिंग होते हैं—पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुँसकलिंग। पीछे नर, बाल आदि पुँल्लिंग शब्दों के रूप बताये गये हैं। अब यहाँ नपुँसकलिंग शब्दों के रूप बताये जाते हैं—

अकारान्त नपुँसकलिंग 'फल' आदि शब्दों के रूप प्रायः 'नर' शब्द के समान ही होते हैं, केवल प्रथमा, द्वितीय और सम्बोधन के रूपों में अन्तर होता है। देखिए—

फल—नपुँसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

इसी प्रकार—जल, वन, उद्यान, भोजन, पुष्प, धन, दुग्ध, नेत्र, मुख, अन्न, सुख, दुःख, चित्र, रूप, वस्त्र, यन्त्र, पुस्तक, गृह, शरीर, सत्य, मित्र आदि शब्दों के रूप होते हैं।

नपुँसकलिंग के कुछ ऐसे शब्दों की सूची अभ्यास के लिए दी जा रही है जिनके रूप फलम् की भाँति ही चलते हैं।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
वस्त्र	कपड़ा	धन	सम्पत्ति
वित्त	धन	वन	जंगल

हिम	बर्फ	वचन	शब्द
चक्र	चक्र, पहिया	कुसुम	पुष्प
उपकरण	साधन, सामान	आकाश	आसमान
उपधान	तकिया	अस्त्र	हथियार
प्रवहण	डोली	खनित्र	कुदाली
चूर्ण	पाउडर	विवर	छिद्र
स्तेय	चोरी	लक्षण	चिह्न
दुकूल	कपड़ा	कारण	वजह
वातायन	झरोखा	रूप	शक्ल
छत्र	छाता	पुर	नगर
द्वार	दरवाज़ा	गृह	घर
अपत्य	सन्तान	उदक	जल
ताम्र	ताम्बा	निष्ठीवन	थूक
अनृत	झूठ	मुख	मुह
आम्र	आम का फल	गरल	जहर
व्यजन	पंखा	तक्र	मटठा
नवनीत	मक्खन	स्वर्ण	सुवर्ण

कर्म का अध्ययन

कर्म—जिस पर क्रिया का फल पड़े उसे 'कर्म' कहते हैं। कर्म का चिह्न 'को' है किन्तु कई बार यह चिह्न नहीं भी लगता।

मैं 'फल को' खाता हूँ = अहम् 'फलम्' खादामि।

राम 'पुस्तक को' पढ़ता है = रामः 'पुस्तकम्' पठति।

इन वाक्यों में 'पुस्तक' और 'फल' शब्दों में कर्म कारक है।

आवृत्ति—

	कर्म कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुँल्लिग	,,	छात्रम् (एक छत्र को)	छात्रौ (दो छात्रों को)	छात्रान् (सब छात्रों को)

कर्म कारक		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुँलिंग	,,	अश्वम्	अश्वौ	अश्वान्
नपुँसकलिंग	,,	वनम्	वने	वनानि
,,	,,	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पाणि

कर्म का आदर्श अनुवाद

छात्र लेख को पढ़ता है।	छात्रः लेखं पठति।
दो मनुष्य ईश्वर को भजते हैं।	नरौ ईश्वरं भजतः।
हम सब भोजन खाते हैं।	वयम् भोजनं खादामः।
तू शब्द बोलता है।	त्वम् शब्दान् वदसि।
मैं ईश्वर को भजता हूँ।	अहम् ईश्वरं भजामि।
हम दो घोड़ों को रखते हैं।	आवाम् अश्वौ रक्षावः।
तुम सब फल खाते हो।	यूयम् फलानि खादथ।

भ्वादिगण की परिवर्तनशील धातु

भ्वादिगण की कुछ धातु ऐसी हैं जिनके स्थान पर कुछ और ही रूप बदल कर आ जाता है। देखिए—

गम् = गच्छ (जाना)	पा = पिब (पीना)
दृश् = पश्य (देखना)	स्था = तिष्ठ (ठहरना)
दा = यच्छ (देना)	आ+गम् = आगच्छ (आना)

इन धातुओं के वर्तमान काल में पूरे रूप देखिए—

गम् = गच्छ (जाना) वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

पा = पिब (पीना) वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

दृश् = पश्य (देखना) वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

स्था = तिष्ठ (ठहरना) वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

दा = यच्छ (देना) वर्तमानकाल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथः	यच्छथ
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छावः	यच्छामः

कुछ अन्य धातु

जि = जय् (जीतना) — जयति   नी = नय् (ले जाना) — नयति

भू = भव् (होना) — भवति   स्मृ = स्मर् (याद करना) — स्मरति

हृ = हर् (हरण करना, चुराना) — हरति ।

आ + नी = आनय् (लाना) — आनयति ।

इनके वर्तमान काल में पूरे रूप 'वद्' के समान स्वयं उच्चारण करें ।

अव्यय शब्द—

कुत्र = कहाँ	तत्र = वहाँ	किम् = क्या
प्रतिदिनम् = हर रोज़	च = और	प्रातः = सवेरे
अत्र = यहाँ	अपि = भी	नमः = नमस्कार

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का अपनी भाषा में अनुवाद करिए—

रामः — मित्र मोहन ! कुत्र गच्छसि ?
मोहनः — मित्र ! अहं विद्यालयं गच्छामि ।
रामः — मोहन ! तत्र त्वं किं पठसि ?
मोहनः — अहं तत्र पुस्तकानि पठामि ।
रामः — मित्र ! किं त्वं प्रतिदिनं पाठं स्मरसि ?
मोहनः — आम् ! अहं प्रतिदिनं स्वपाठं स्मरामि ।
रामः — प्रातः त्वं किं खादसि ?
मोहनः — अहं प्रातः फलं खादामि, दुग्धं पिबामि च ।
रामः — मित्र ! अहं गृहं गच्छामि, नमस्ते ।
मोहनः — अहम् अपि विद्यालयं गच्छामि, नमस्ते ।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. सब छात्र गाँव को जाते हैं ।
   2. तुम सब पाठ याद करते हो ।
   3. मैं दूध पीता हूँ ।
   4. तू पानी पीता है ।
   5. दो घोड़े रथ को ले जाते हैं ।
   6. हम दोनों जीतते हैं ।
   7. तुम दोनों धन चुराते हो ।

3. रिक्त स्थानों को पूर्ण करिए—

श्यामः .... यच्छति ।	यूयम् .... पश्यथ ।
अहं चित्रं .... ।	छात्राः विद्यालयं .... ।
पाचकौ भोजनं .... ।	चौराः .... हरन्ति ।
त्वं कुत्र .... ।	वयम् जलं .... ।

4. पा (पिब) धातु के पिबति आदि और दा (यच्छ) धातु के यच्छति

आदि वर्तमानकाल में पूरे रूप लिखिए ।

5. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—

1. एक राजा घोड़े रखता है ।
2. तू भोजन खाता है ।
3. हम दो नौकर रखते हैं ।
4. तुम सब पुस्तकें पढ़ते हो ।
5. अध्यापक शब्द बोलता है ।
6. वह ईश्वर को भजता है ।

चतुर्थ परिच्छेद

कारकों का अध्ययन

करण का अध्ययन—

करण—जो शब्द क्रिया का साधक हो उसे 'करण' कहते हैं । इसके चिह्न 'से', 'के द्वारा' है । जैसे—मनुष्य मुख से खाते हैं =नराः मुखेन खादन्ति —यहाँ क्रिया का साधक होने से 'मुख' शब्द में करण कारक है ।

आवृत्ति :

पाद	=	पैर,	तृतीया	—	पादेन	पादाभ्याम्	पादैः
					(एक पैर से)	(दो पैरों से)	(सब पैरों से)
नेत्र	=	आँख	तृतीया	—	नेत्रेण	नेत्राभ्याम्	नेत्रैः
हस्त	=	हाथ	"	—	हस्तेन	हस्ताभ्याम्	हस्तैः
धन	=	धन	"	—	धनेन	धनाभ्याम्	धनैः

करण का आदर्श अनुवाद

मनुष्य पैरों से चलते हैं ।	नराः पादाभ्याम् चलन्ति ।
लोग आँखों से देखते हैं ।	जनाः नेत्राभ्याम् पश्यन्ति ।
धन से सुख होता है ।	धनेन सुखं भवति ।
मैं हाथ से खाता हूँ ।	अहं हस्तेन खादामि ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
    1. वे सब पैरों से चलते हैं ।
    2. गोपाल दोनों हाथों से खाता है ।
    3. मैं घोड़े से गाँव को जाता हूँ ।
    4. तुम सब आँखों से फलों को देखते हो ।
    5. पाप से दुःख होता है ।
2. रिक्त स्थानों में करण कारक के शब्द भरिए—

नरः .... खादति ।	मनुष्याः .... चलन्ति ।
युवाम् .... गच्छथः ।	आवाम् .... लिखावः ।
तौ .... क्रीडतः ।	वयम् .... जयामः ।

सम्प्रदान का अध्ययन—

सम्प्रदान—जिसके लिए कार्य हो या किया जाए उसे 'सम्प्रदान' कहते हैं । सम्प्रदान का चिह्न 'को', 'के लिए' है । जैसे— लोग धन के लिए पढ़ते हैं । = जनाः 'धनाय' पठन्ति । यहाँ 'धन' शब्द में सम्प्रदान कारक है ।

आवृत्ति :

छात्राय	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
(एक छात्र के लिए)	(दो छात्रों के लिए)	(सब छात्रों के लिए)
जलाय	जलाभ्याम्	जलेभ्यः
धनाय	धनाभ्याम्	धनेभ्यः
पुष्पाय	पुष्पाभ्याम्	पुष्पेभ्यः

सम्प्रदान का आदर्श अनुवाद

लड़के धन के लिए पढ़ते हैं ।	छात्राः धनाय पठन्ति ।
राम ब्राह्मण के लिए वस्त्र देता है ।	रामः ब्राह्मणाय वस्त्रं ददाति ।
मैं फूलों के लिए बाग़ जाता हूँ ।	अहं पुष्पेभ्यः उद्यानं गच्छामि ।
तू पानी के लिए तालाब को जाता है ।	त्वं जलाय तडागं गच्छसि ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. राम मोहन को (के लिए) धन देता है।
   2. लोग धन के लिए नगर को जाते हैं।
   3. मैं पढ़ने के लिए (पठनाय) विद्यालय को जाता हूँ।
   4. तुम सुख के लिए खेलते हो।
2. रिक्त स्थानों को सम्प्रदान कारक के शब्दों से पूर्ण करिए—

   अहं .... भोजनं यच्छामि।

   त्वं .... फलम् आनयसि।

   गोपालः .... दुग्धं यच्छति।

   नराः .... नगरं गच्छन्ति।

अपादान का अध्ययन—

अपादान— जिससे कोई वस्तु अलग हो वहाँ 'अपादान' कारक होता है। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' (अलग होना) है। जैसे—पेड़ से पत्ता गिरता है = 'वृक्षात्' पत्रं पतति। यहाँ 'वृक्ष' शब्द में अपादान कारक है।

आवृत्ति :

वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
(एक वृक्ष से)	(दो वृक्षों से)	(सब वृक्षों से)
गजात्	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
विद्यालयात्	विद्यालयाभ्याम्	विद्यालयेभ्यः

अपादान का आदर्श अनुवाद

लड़के विद्यालय से जाते हैं।	छात्राः विद्यालयात् गच्छन्ति।
पेड़ों से पत्ते गिरते हैं।	वृक्षेभ्यः पत्राणि पतन्ति।
तुम घर से चलते हो।	यूयम् गृहात् चलथ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. पेड़ से फल गिरते हैं ।
   2. बालक घर से चलता है ।
   3. प्रकाश सूर्य से आता है ।
   4. मैं घड़े से जल लाता हूँ ।
2. रिक्त स्थानों की अपादान कारक के शब्दों से पूर्ति करिए—

   गोपालः .... पतति ।
   जनाः .... नगरं गच्छन्ति ।
   वयम् .... विद्यालयं गच्छामः ।
   .... पत्राणि पतन्ति ।
   अहम् .... गृहम् गच्छामि ।
   त्वम् .... जलम् आनयसि ।

सम्बन्ध का अध्ययन—

सम्बन्ध—शब्दों के परस्पर सम्बन्ध को प्रकट करने वाले कारक को 'सम्बन्ध' कहते हैं । इसमें षष्ठी विभक्ति होती है । इसके चिह्न 'का', 'के', 'की' हैं । जैसे— राम का नौकर जाता है = रामस्य भृत्यः गच्छति — इसमें 'राम' शब्द में सम्बन्ध कारक है ।

आवृत्ति :

छात्रस्य	छात्रयोः	छात्राणाम्
(एक छात्र का)	(दो छात्रों का)	(सब छात्रों का)
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
ग्रामस्य	ग्रामयोः	ग्रामाणाम्

सम्बन्ध का आदर्श अनुवाद

राम का मित्र आता है ।	रामस्य मित्रम् आगच्छति ।
गाँव के लड़के खेलते हैं ।	ग्रामस्य बालाः क्रीडन्ति ।
भारत के गाँव अन्न देते हैं ।	भारतस्य ग्रामाः अन्नम् ददति ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. विद्यालय के छात्र घरों को जाते हैं ।
   2. तुम सब ग़ाँव के छात्र हो ।
   3. मोहन का नौकर भोजन बनाता है (पच्) ।
   4. हम देश की रक्षा करते हैं ।
2. रिक्त स्थानों को सम्बन्ध कारक के शब्दों से पूर्ण करिए—

.... भृत्यः आगच्छति । .... छात्राः पठन्ति ।

वयम् .... कार्याय गच्छामः ।

यूयम् .... पुत्राः भवथ ।

अहम् .... दासौ पश्यामि । .... बालाः हसन्ति ।

अधिकरण का अध्ययन—

अधिकरण—किसी वस्तु के आधार को 'अधिकरण' कहते हैं । अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है । इसके चिह्न 'में', 'पे', 'पर' हैं । जैसे—छात्र विद्यालय में पढ़ते हैं = छात्राः 'विद्यालये' पठन्ति — इस वाक्य में 'विद्यालय' शब्द में अधिकरण कारक है ।

आवृत्ति :

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
गृहे	गृहयोः	गृहेषु
(एक घर में)	(दो घरों में)	(सब घरों में)
नगरे	नगरयोः	नगरेषु
विद्यालये	विद्यालययोः	विद्यालयेषु
छात्रे	छात्रयोः	छात्रेषु

अधिकरण का आदर्श अनुवाद

वृक्षों पर बन्दर बैठते हैं ।	वृक्षेषु वानराः तिष्ठन्ति ।
लड़के घरों में रहते हैं ।	बालाः गृहेषु वसन्ति ।
मैं प्रकाश में पढ़ता हूँ ।	अहं प्रकाशे पठामि ।
तुम नगर में रहते हो ।	यूयम् नगरे वसथ ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. बन्दर पेड़ों पर रहते हैं।
   2. लोग घरों में रहते हैं।
   3. वह दोनों हाथों में फूल लेता है।
   4. तुम गाँव में रहते हो।
   5. हम विद्यालय में पढ़ते हैं।
2. रिक्त स्थानों को अधिकरण कारक के शब्दों से पूर्ण करिए—

   वयम् .... क्रीडामः। यूयम् .... चित्रं पश्यथ।

   छात्राः .... पुष्पाणि पश्यन्ति।

   मोहनः .... वसति। तौ .... जलं भरतः।

   अहम् .... सौंदर्यं पश्यामि।

सम्बोधन का अध्ययन—

सम्बोधन—किसी को बुलाने के लिए 'सम्बोधन' का प्रयोग होता है। इसमें प्रथमा विभक्ति होती है। इसमें प्रायः 'हे, अरे, भो' आदि शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे—हे राम !, तुम क्या पढ़ते हो = हे रामः ! त्वं किं पठसि ? – इसमें 'राम' शब्द में सम्बोधन है।

आवृत्ति :

हे नर !	हे नरौ !	हे नराः !
(हे मनुष्य)	(हे दो मनुष्यो)	(हे सब मनुष्यो)
हे छात्र !	हे छात्रौ !	हे छात्राः !

आदर्श अनुवाद

हे वीरो ! तुम युद्ध के लिए जाते हो।	हे वीरा ! यूयम् युद्धाय गच्छथ।
रे बन्दर ! तू क्या खाता है।	हे वानर ! त्वं किं खादसि ?
हे राम ! तुम मनुष्यों की रक्षा करते हो।	हे राम ! त्वं नरान् रक्षसि।

अभ्यास

1. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. हे बालको ! तुम क्या देखते हो ?
   2. हे अध्यापक महोदय ! मैं घर जाता हूँ।
   3. वीरो ! तुम देश की रक्षा करते हो।
   4. हे मोहन ! क्या (किम्) तू गाँव में रहता है ?
2. रिक्त स्थानों को पूर्ण करिए—

   .... ! कुत्र गच्छथ।

   .... ! ईश्वरं कथं न भजथ।

   .... ! अहं गृहं गच्छामि।

   .... ! किं त्वं पुस्तकं पठसि ?

पंचम् परिच्छेद

इकारान्त पुँल्लिग शब्द, भविष्यत्काल

इकारान्त कवि=कविता करने वाला (पुँल्लिग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा (ने, ०)	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया (को, ०)	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया (से, के द्वारा)	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी (को, के लिए)	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी (से, अलग)	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी (का, के, की)	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी (में, पर)	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन (हे, अरे)	हे कवे !	हे कवी !	हे कवयः !

इकारान्त मुनि शब्द (पुँल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

नियम—'सखि' और 'पति' इन दो शब्दों को छोड़कर समस्त इकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप मुनि शब्द की तरह चलते हैं ।

नीचे कुछ ऐसे शब्द दिये जा रहे हैं जिनके रूप मुनि की तरह चलते हैं ।

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
विधि	—	ब्रह्मा	भूपत्ति	—	राजा
निधि	—	खजाना	मणि	—	मणि
अद्रि	—	पर्वत	गिरि	—	पर्वत
हरि	—	विष्णु	व्याधि	—	रोग
वारिधि	—	समुद्र	यति	—	सन्यासी
रवि	—	सूर्य	कपि	—	बन्दर
अरि	—	शत्रु	जलधि	—	समुद्र
असि	—	तलवार			

इकारान्त पति शब्द (पुँल्लिग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः

चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते !	हे पती !	हे पतयः !

नियम—यदि पति शब्द किसी समस्त शब्द के अन्त में आया हो तो उसके रूप 'मुनि' शब्द के समान होंगे, अर्थात् रमापति, भूपति, आदि शब्दों के रूप मुनि शब्द की तरह होंगे।

इकारान्त सखि (मित्र) शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पंचमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !

भविष्यकाल के प्रत्यय

भविष्यत्काल—आनेवाले समय को 'भविष्यत्काल' कहते हैं। भविष्यत्काल में लृट् लकार का प्रयोग होता है। लृट् लकार में ति, तः, अन्ति आदि प्रत्ययों से पहले 'स्य' या 'इष्य' लग जाता है। जैसे—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इष्यति	इष्यतः	इष्यन्ति
मध्यम पुरुष	इष्यसि	इष्यथः	इष्यथ
उत्तम पुरुष	इष्यामि	इष्यावः	इष्यामः

नोट—लृट् लकार में गण का विकरण (अ आदि चिह्न) नहीं लगता।

उक्त प्रत्ययों का धातु के साथ मेल एवं रूप

उदाहरण—पठ् + इष्यति = पठिष्यति (पढ़ेगा) इसी प्रकार सब प्रत्यय धातु के साथ लगेंगे। देखिए—

कर्त्ता और क्रिया का मेल (अर्थ सहित)

पठ् = पढ़ना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः पठिष्यति (वह पढ़ेगा)	तौ पठिष्यतः (वे दो पढ़ेंगे)	ते पठिष्यन्ति (वे सब पढ़ेंगे)
मध्यम पुरुष	त्वं पठिष्यसि (तू पढ़ेगा)	युवां पठिष्यथः (तुम दो पढ़ोगे)	यूयं पठिष्यथ (तुम सब पढ़ोगे)
उत्तम पुरुष	अहं पठिष्यामि (मैं पढ़ूँगा)	आवां पठिष्यावः (हम दो पढ़ेंगे)	वयं पठिष्यामः (हम सब पढ़ेंगे)

वद्–बोलना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

इसी प्रकार पहले आयी प्रायः सभी धातुओं के रूप भविष्यत्काल में होंगे। प्रत्येक धातु का पहला रूप देखिए—

चल्	– चलिष्यति	क्रीड्	– क्रीड़िष्यति	धाव्	– धाविष्यति
रक्ष्	– रक्षिष्यति	पत्	– पतिष्यति	खाद्	– खादिष्यति
खेल्	– खेलिष्यति	हस्	– हसिष्यति	भ्रम्	– भ्रमिष्यति

परिवर्तनशील धातुओं का लृट् में परिवर्तन नहीं होता—

गम्	– गमिष्यति	भू	– भविष्यति	स्मृ	– स्मरिष्यति

अब 'स्य' लगने वाली धातुओं के रूप दिए जाते हैं ।

पच्=पकाना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

पच्+स्य+ति=पक्ष्यति (पकायेगा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

एवं—भज्+स्य+ति=भक्ष्यति आदि रूप होंगे ।

इसी प्रकार— वस्+स्य+ति=वत्स्यति के रूप होंगे ।

पा+स्य+ति=पास्यति	दृश्+स्य+ति=द्रक्ष्यति
स्था+स्य+ति=स्थास्यति	दा+स्य+ति=दास्यति
जि+स्य+ति=जेष्यति	नी+स्य+ति=नेष्यति

ये लृट् लकार के पहले रूप हैं । इनके शेष पूरे रूप देखिए—

पा = पीना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

स्था = ठहरना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

दा = देना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यंन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

दृश् = देखना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

जि = जीतना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उत्तम पुरुष	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

नी = लेजाना, भविष्यत्काल (लृट् लकार)

प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

आदर्श अनुवाद

मुनि सूर्य को देखेंगे ।	मुनयः रविं द्रक्ष्यन्ति ।
रसोइया भोजन पकायेगा ।	पाचकः भोजनं पक्ष्यति ।
लोग हरिद्वार जायेंगे ।	नराः हरिद्वारं गमिष्यन्ति ।
तुम सब पाठ पढ़ोगे ।	यूयं पाठं पठिष्यथ ।
मैं तलवार से जीतूँगा ।	अहम् असिना जेष्यामि ।
तू दूध कब पीयेगा ?	त्वं दुग्धं कदा पास्यसि ?
राजा लोगों की रक्षा करेंगे ।	भूपतयः जनान् रक्षिष्यन्ति ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. मैं गाँव जाऊँगा ।
   2. बालक दूध पीयेंगे ।
   3. राजा लोगों की रक्षा करेंगे ।
   4. ऋषि लोग आश्रमों में रहेंगे ।

5. हम सब चित्र देखेंगे ।

6. मैं बाग़ में घूमूँगा ।

7. तू आज (अद्य) क्या खायेगा ?

2. ख़ाली स्थानों को भविष्यत्काल की क्रियाओं से भरिए—

अहं पाठं .... । छात्राः चित्रं .... ।

त्वम् जलम् .... । सूदौ भोजनं .... ।

वयम् भोजनम् .... । यूयम् कदा ग्रामं .... ।

3. स्था, पच् और हृ के लृट् में रूप लिखिए ।

4. आ+नी=आनेष्यति और आ+गम्=आगमिष्यति आदि के लृट् में पूरे रूप लिखिए ।

5. शुद्ध करो—

रामः भोजनं खादिष्यसि । त्वं कुत्र गमिष्यामि । अहं पुस्तकं पठिष्यति । छात्राः क्रीडिष्यति ।

षष्ठ परिच्छेद

उकारान्त पुँल्लिंग शब्द, भूतकाल

साधु = सज्जन (पुँल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पंचमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो !	हे साधू !	हे साधवः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप साधु के समान होते हैं—

भानु	—	सूर्य	विधु	—	चन्द्रमा
शिशु	—	बच्चा	बन्धु	—	भाई
तरु	—	वृक्ष	हेतु	—	कारण
रिपु	—	शत्रु	परशु	—	कुल्हाड़ा
धातु	—	लोहा आदि धातु	सानु	—	चोटी
साधु	—	सज्जन, संन्यासी	बिन्दु	—	बूँद
मन्यु	—	क्रोध	ऋतु	—	मौसम
सिन्धु	—	समुद्र	गोमायु	—	गीदड़
पशु	—	जानवर	मृत्यु	—	मौत

नियम–क्रोष्टु शब्द को छोड़कर समस्त उकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप 'साधु' शब्द के समान चलेंगें ।

स्वयम्भू = ब्रह्मा (ऊकारान्त पुँल्लिग शब्द)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
द्वितीया	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृतीया	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
चतुर्थी	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वम्भूभ्यः
पंचमी	स्वयम्भुवः	स्वम्भूभ्याम्	स्वम्भूभ्यः
षष्ठी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
सप्तमी	स्वयम्भुवि	स्वयम्भूवोः	स्वयम्भुषु
सम्बोधन	हे स्वयम्भूः !	हे स्वयम्भुतौ !	हे स्वयम्भुवः !

भूतकाल (लङ् लकार)

भूतकाल—बीते हुए समय को 'भूतकाल' कहते हैं । भूतकाल में लङ् लकार का प्रयोग होता है । भूतकाल में (हलादि) धातुओं के शुरू में 'अ' भी लग जाता है ।

भूतकाल के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम

उदाहरण— अ + पठ + त् = अपठत् (पढ़ा) इसी प्रकार सब प्रत्यय पठ् आदि धातुओं के साथ लगेंगे । देखिए—

प्रत्यय सहित पठ् धातु के रूप, अर्थ सहित –

पठ् = पढ़ना, भूतकाल (लङ् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः अपठत् (उसने पढ़ा)	तौ अपठताम् (उन दो ने पढ़ा)	ते अपठन् (उन सबने पढ़ा)
मध्यम पुरुष	त्वम् अपठः (तूने पढ़ा)	युवाम् अपठतम् (तुम दो ने पढ़ा)	यूयम् अपठत (तुम सबने पढ़ा)
उत्तम पुरुष	अहम् अपठम् (मैंने पढ़ा)	आवाम् अपठाव (हम दो ने पढ़ा)	वयम् अपठाम (हम सबने पढ़ा)

वद् = बोलना, भूतकाल (लङ् लकार)

प्रथम पुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम पुरुष	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तम पुरुष	अवदम्	अवदाव	अवदाम

इसी प्रकार आगे लिखी धातुओं के रूप भी होंगे । प्रत्येक धातु का भूतकाल का पहला रूप दिया जाता है ।

चल् – अचलत्	हस् – अहस्त्	रक्ष् – अरक्षत्
पच् – अपचत्	पत् – अपतत्	धाव् – अधावत्
खेल् – अखेलत्	खाद् – अखादत्	भज् – अभजत्
वस् – अवसत्	नम् – अनमत्	भ्रम् – अभ्रमत्

गम् आदि परिवर्तनशील धातुओं के रूप

गम् = गच्छ (जाना) भूतकाल (लङ् लकार)

प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के रूप स्वयं चलायें। भूतकाल का एक-एक रूप दिया जाता है।

दृश् (पश्य)	— अपश्यत्	भू (भव्)	— अभवत्
स्था (तिष्ठ)	— अतिष्ठत्	नी (नय्)	— अनयत्
जि (जय्)	— अजयत्	स्मृ (स्मर)	— अस्मरत्
हृ (हर्)	— अहरत्	पा (पिब)	— अपिबत् इत्यादि

आदर्श अनुवाद

हवा चली और वृक्ष गिरे।	वायुः अचलत् वृक्षाः च अपतन्।
मैंने गुरुजी को देखा।	अहम् गुरुम् अपश्यम्।
राम लक्ष्मण ने शत्रुओं को जीता।	राम-लक्ष्मणौ शत्रून् अजयताम्।
देवताओं ने अमृत पिया।	देवाः अमृतम् अपिबन्।
मोहन ने फूल दिया।	मोहनः पुष्पम् अयच्छत्।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—
   1. मैं गया और देखा।
   2. एक मनुष्य कुएँ पर जल पीता था।
   3. तूने भोजन पकाया।
   4. मोहन ने ब्राह्मणों को धन दिया।
   5. तूने स्वयं क्या खाया? 6. मोहन वृक्ष से गिर पड़ा।
   7. बालकों ने चन्द्रमा को देखा।
2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरिए—

   विष्णुः .... रक्षति। बालाः क्रीड़ाक्षेत्रे ....।

अहं नगरम् ....। तत्र यूयम् पुस्तकं ....।
वयं सदा गुरुं ....। पाचकः भोजनं ....।

3. निम्नलिखित शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों के रूप लिखिए— शत्रु (षष्ठी), भानु (द्वितीया), शम्भु (चतुर्थी), बाहु (पंचमी)।
4. निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट लकारों और वचनों में रूप लिखिए :
धाव् (लङ् उत्तम पु॰), पच् (लृट् प्रथम् पु॰), पत् (लङ् मध्यम् पु॰), पा – पिब (लङ् मध्यम पु॰), दा – यच्छ (लङ उत्तम पु॰)।
5. स्था—तिष्ठ के भूतकाल में तथा 'दा' और 'जि' के भविष्यत्काल में पूरे रूप लिखिए।

सप्तम् परिच्छेद

ऋकारान्त पुँल्लिग शब्द, लोट् (आज्ञा)

पितृ = पिता, पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

इसी प्रकार – भ्रातृ = भाई, देवृ = देवर।

पितृ शब्द से कुछ भिन्न रूपों वाले ऋकारान्त शब्द

दातृ = देने वाला, पुँल्लिग

प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातृन्
सम्बोधन	हे दातः !	हे दातारौ !	हे दातारः !

शेष तृतीया से सप्तमी तक के रूप पितृ के समान होंगे। दातृ के समान अन्य शब्द—

कर्तृ = करने वाला —	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	इत्यादि।
हन्तृ = मारने वाला —	हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः	इत्यादि।

आज्ञा (लोट्)

आज्ञा— जब किसी को कोई आज्ञा दी जाए अथवा काम करने के लिए निवेदन किया जाए वहाँ आज्ञा में लोट् लकार का प्रयोग होता है।

आज्ञा (लोट्) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष		तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

क्रिया के साथ मेल (अर्थ सहित)

पठ् = पढ़ना, आज्ञा (लोट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः पठतु	तौ पठताम्	ते पठन्तु
	(वह पढ़े)	(वे दो पढ़ें)	(वे सब पढ़ें)
मध्यम पुरुष	त्वं पठ	युवां पठतम्	यूयं पठत
	(तू पढ़)	(तुम दो पढ़ो)	(तुम सब पढ़ो)
उत्तम पुरुष	अहं पठानि	आवां पठाव	वयं पठाम
	(मैं पढ़ूँ)	(हम दो पढ़ें)	(हम सब पढ़ें)

वद् = बोलना, आज्ञा (लोट् लकार)

प्रथम पुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यम पुरुष	वद	वदतम्	वदत
उत्तम पुरुष	वदानि	वदाव	वदाम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के रूप बनते हैं। प्रत्येक धातु के लोट् लकार का एक-एक रूप देखिए—

चल् – चलतु – चले	हस् – हसतु	क्रीड् – क्रीडतु
रक्ष् – रक्षतु	पच् – पचतु	पत् – पततु
खाद् – खादतु	खेल – खेलतु	धाव् – धावतु
भज् – भजतु	भ्रम् – भ्रमतु	वस् – वसतु

गम् (गच्छ) = जाना, आज्ञा (लोट् लकार)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के लोट् में रूप होंगे—

दृश् = पश्य – पश्यतु भू = भव् – भवतु

स्था = तिष्ठ – तिष्ठतु नी = नय् – नयतु

दा = यच्छ – यच्छतु पा = पिब – पिबतु इत्यादि ।

सबके पूरे रूप गम् (गच्छ) के समान स्वयं लिखिए ।

आदर्श अनुवाद

पुत्र ! तू पिता जी को जल दे ।	पुत्र ! त्वं पित्रे जलं यच्छ ।
बालको ! पाठ पढ़ो ।	बालाः ! पाठं पठत ।
वह सेवक घर जाये ।	सः भृत्यः गृहं गच्छतु ।
वे पुरुष दूध पीयें ।	ते जनाः दुग्धं पिबन्तु ।
मोहन फल दे ।	मोहनः फलानि यच्छतु ।
तुम सब चित्रों को देखो ।	यूयम् चित्राणि पश्यत ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
    1. बालको ! तुम सब घर जाओ और पाठ स्मरण करो ।
    2. छात्रो ! हँसो, खेलो और स्वस्थ होओ ।
    3. मनुष्य फल खायें ।
    4. तू विद्यालय जा ।
    5. हम सब दूध पीयें ।
    6. वे मैदान में (क्षेत्रे) गेंद से (कन्दुकेन) खेलें ।
    7. मनुष्य ग़रीबों को दान दें।
    8. हम शत्रुओं को जीतें ।
2. निम्नलिखित शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों में रूप लिखिए—
   भ्रातृ (प्रथमा), कर्तृ (द्वितीया), पितृ (षष्ठी) ।
3. निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट लकारों में रूप लिखिए—
   वद् (लोट् मध्यम् पु०), गम् (लोट् प्रथम पु०), दृश (लोट् उत्तम पु०), जि (लोट् प्रथम पु०), नी (लोट् मध्यम पु०) ।
4. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों को पूर्ण करिए—
    1. हे भ्रातरः ! आगच्छत, दुग्धं .... ।
    2. हे पुत्र ! जलम् .... ।
    3. अहं किं गृहं .... ।
    4. वयं सर्वत्र शत्रून् .... ।
    5. यूयं फलानि .... ।
    6. नराः ! धनं .... ।
5. इन धातुओं के आज्ञा (लोट्) में पूरे रूप लिखिए—
   रक्ष् (रक्षतु), वस् (वसतु), जि (जयतु) ।

ओकारान्त शब्द, विधिलिङ्

गो = बैल, गाय; पुँल्लिग और स्त्रीलिंग (समान रूप)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पंचमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः !	हे गावौ !	हे गावः !

विधिलिंङ् के प्रत्यय

विधिलिंङ्—इसका प्रयोग किसी को निमन्त्रण देने, सलाह देने, प्रार्थना करने, आग्रह करने और प्रेमपूर्वक किसी काम में लगाने के लिए होता है। 'चाहिए' अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है। इसका फल आज्ञा (लोट्) के समान होता है।

विधिलिङ् के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इत्	इताम्	इयुः
मध्यम पुरुष	इः	इतम	इत
उत्तम पुरुष	इयम्	इव	इम

इन प्रत्ययों से युक्त धातुरूप (अर्थ सहित)

पठ् = पढ़ना, विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः पठेत् (वह पढ़े)	तौ पठेताम् (वे दो पढ़ें)	ते पठेयुः (वे सब पढ़ें)
मध्यम पुरुष	त्वं पठेः (तू पढ़)	युवां पठेतम् (तुम दो पढ़ों)	यूयं पठेत (तुम सब पढ़ो)
उत्तम पुरुष	अहं पठेयम् (मैं पढ़ूँ)	आवां पठेव (हम दो पढ़ें)	वयं पठेम (हम सब पढ़ें)

वद् = बोलना, विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
मध्यम पुरुष	वदेः	वदेतम्	वदेत
उत्तम पुरुष	वदेयम्	वदेव	वदेम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के विधिलिङ् में रूप होंगें —

चल् – चलेत्	हस् – हसेत्	क्रीड् – क्रीड़ेत्
भ्रम् – भ्रमेत्	रक्ष् – रक्षेत्	पच् – पचेत्
पत् – पतेत्	भज् – भजेत्	खाद् – खादेत्
खेल् – खेलेत्	धाव् – धावेत्	वस् – वसेत्

गम् आदि परिवर्तनशील धातुओं के विधिलिङ् में रूप

प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के विधिलिंङ् में रूप होंगे—

दृश् (पश्य) – पश्येत्	पा (पिब) – पिबेत्
स्था (तिष्ठ) – तिष्ठेत्	दा (यच्छ) – यच्छेत्
जि (जय्) – जयेत्	नी (नय्) – नयेत्
भू (भव्) – भवेत्	स्मृ (स्मर्) – स्मरेत् इत्यादि ।

आदर्श अनुवाद

राजा शत्रुओं को जीतें ।	नृपतयः शत्रून् जयेयुः ।
बालको ! तुम्हें दूध पीना चाहिए ।	बालाः ! यूयं दुग्धं पिबेत ।
तुझे दान देना चाहिए ।	त्वं दानं यच्छेः ।
हमें विद्या पढ़नी चाहिए ।	वयं विद्यां पठेम ।
लोग झूठ न बोलें ।	नराः असत्यं न वदेयुः ।
गुरुजी ! क्या मैं आऊँ ?	हे गुरो ! किम् अहम् आगच्छानि ?

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. विद्यार्थी प्रातः विद्यालय जायें ।
   2. भारतीय भारत की रक्षा करें ।
   3. तुम दोनों फल खाओ ।
   4. तू गौ की रक्षा करे ।
   5. हम सब दूध पीएँ ।
   6. सब बच्चों को हँसना चाहिए ।
   7. मित्र ! तुम सदा सत्य बोलो ।
2. निम्नलिखित धातुओं के विधिलिङ् में रूप लिखिए—
   क्रीड् (उत्तम पु०), हस् (प्रथम पु०), गम् = गच्छ (मध्यम पु०) ।
3. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों को पूर्ण करिए—
   1. त्वं ग्राम् .... ।
   2. धार्मिक ब्राह्मणेभ्यः धनं .... ।
   3. वयं धनम् (रक्ष्) .... ।
   4. यूयम् निर्धनेभ्यः धन .... ।
   5. नराः सदा प्रातः उद्याने (भ्रम्) .... ।
4. दृश् (पश्य), पा (पिब्), स्था (तिष्ठ) और पत् धातुओं के सभी कालों में पूरे रूप लिखिए ।

द्वितीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद

अजन्त स्त्रीलिंग शब्द और भ्वादिगण आत्मनेपद

आकारान्त लता = बेल, स्त्रीलिंग (अर्थ-सहित)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता (एक बेल)	लते (दो बेलें)	लताः (सब बेलें)
द्वितीया	लताम् (एक बेल को)	लते (दो बेलों को)	लताः (सब बेलों को)
तृतीया	लतया (एक बेल से, के द्वारा)	लताभ्याम् (दो बेलों से)	लताभिः (सब बेलों से)
चतुर्थी	लतायै (एक बेल के लिए)	लताभ्याम् (दो बेलों के लिए)	लताभ्यः (सब बेलों के लिए)
पंचमी	लतायाः (एक बेल से)	लताभ्याम् (दो बेलों से)	लताभ्यः (सब बेलों से)
षष्ठी	लतायाः (एक बेल का)	लतयोः (दो बेलों का)	लतानाम् (सब बेलों का)
सप्तमी	लतायाम् (एक बेल में)	लतयोः (दो बेलों में)	लतासु (सब बेलों में)
सम्बोधन	हे लते ! (अरी एक बेल !)	हे लते ! (अरी दो बेलों !)	हे लताः ! (अरी सब बेलों !)

नियम—सब आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'लता' शब्द के समान होंगे। यदि किसी शब्द में र् या ष् होगा तो उसके आगे आने वाले न् का ण् हो जाएगा।

इसी प्रकार निम्नलिखित आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप होंगे—

निशा	रात	जरा	बुढ़ापा
ग्रीवा	गर्दन	सिता	चीनी
रसना	जीभ	क्षुधा	भूख
गुहा	गुफा	ललना	स्त्री
पिपासा	प्यास	खट्वा	खाट
शर्करा	शक्कर	वसुधा	पृथ्वी
सीता	(नाम विशेष)	याञ्चा	भीख, प्रार्थना
व्यथा	मानसिक पीड़ा	कला	गुण, हुनर
कक्षा	कमरा, श्रेणी	शङ्का	शङ्का
निन्दा	निन्दा	कान्ता	स्त्री, सुन्दरी
भार्या	पत्नी	कविका	लगाम
भृत्या	मज़दूरी	आशंका	शंका
रेखा	लकीर	कथा	कहानी
मंजूषा	सन्दूकची	गंगा	एक नदी का नाम
यमुना	एक नदी का नाम	अनुपदीका	जुराब
स्पर्धा	ईर्ष्या	पादुका	खड़ाऊँ
रमा	लक्ष्मी		

एवं अन्य शब्द— कन्या, घृणा, ईर्ष्या, जंघा, क्रीड़ा, कला, महिला, वाटिका, अहिंसा, पाठशाला, अध्यापिका, बालिका, शिला, गीता, स्वतन्त्रता, रक्षा, शोभा, प्रजा, जनता, कथा — के रूप भी लता के समान होंगे।

आत्मनेपद

धातुओं के दो पद होते हैं — 1. परस्मैपद । 2. आत्मनेपद । कुछ धातु परस्मैपद की होती हैं, कुछ धातु आत्मनेपद की होती हैं । अब तक जो धातु बताई गई हैं वे सब परस्मैपद की थीं । अब यहाँ आत्मनेपद की धातुओं और उनके साथ लगने वाले प्रत्ययों को बताया जाता है । आत्मनेपद के प्रत्यय भी अलग होते हैं । यहाँ पहले प्रत्यय, फिर रूप देखिए ।

आत्मनेपद वर्तमानकाल (लट्) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ते	इते	अन्ते
मध्यम पुरुष	से	इथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	इ	वहे	महे

नोट—आत्मनेपद में भी पहले की तरह लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में 'अ' विकरण लगता है और उत्तम पुरुष में 'आ' भी जुड़ जाता है।

सेव् धातु का कर्त्ता के साथ मेल (अर्थ-सहित)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः सेवते (वह सेवा करता है)	तौ सेवते (वे दो सेवा करते हैं)	ते सेवन्ते (वे सब करते हैं)
मध्यम पुरुष	त्वं सेवसे (तू सेवा करता है)	युवां सेवेथे (तुम दो सेवा करते हो)	यूयं सेवध्वे (तुम सब सेवा करते हो)
उत्तम पुरुष	अहं सेवे (मैं सेवा करता हूँ)	आवां सेवावहे (हम दो सेवा करते हैं)	वयं सेवामहे (हम सब सेवा करते हैं)

आत्मनेपद भविष्यकाल (लृट्) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम पुरुष	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उत्तम पुरुष	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लृट् में सेट् धातुओं के साथ इ भी लगता है और स् को ष् हो जाता है। जैसे— सेव्+इ+स्य+ते=सेविष्यते इत्यादि।

सेव्, भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते (सेवा करेगा)	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

आत्मनेपद भूतकाल (लङ्) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	इताम्	अन्त
मध्यम पुरुष	थाः	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इ	वहि	महि

नोट—आत्मनेपद में भी भूतकाल में धातुओं से पूर्व 'अ' लग जाता है।

सेव्, भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत (उसने सेवा की)	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

आत्मनेपद आज्ञा (लोट्) के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ताम्	इताम्	अन्ताम्
मध्यम पुरुष	स्व	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै

सेव्, आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम् (वह सेवा करे)	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

आत्मनेपद विधिलिङ् के प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ईत	ईयाताम्	ईरन्
मध्यम पुरुष	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उत्तम पुरुष	ईय	ईवहि	ईमहि

सेव्, विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत (वह सेवा करे)	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

सेव् के समान निम्नलिखित धातुओं के रूप भी आत्मनेपद में होंगे। प्रत्येक धातु के प्रत्येक लकार का एक-एक रूप दिया जता है, शेष पूरे रूप स्वयं चलाएं।

वृत् = होना	लभ् = पाना	वृध् = बढ़ना	मुद् = प्रसन्न होना
लट् = वर्तते	लभते	वर्धते	मोदते
लृट् = वर्तिष्यते	लप्स्यते	वर्धिष्यते	मोदिष्यते
लङ् = अवर्तत	अलभत	अवर्धत	अमोदत
लोट् = वर्तताम्	लभताम्	वर्धताम्	मोदताम्
विधिलिङ् = वर्तेत	लभेत	वर्धेत	मोदेत

इसी प्रकार—सह् = सहना, शिक्ष् = सीखना, वन्द् = नमस्कार करना, भिक्ष् = माँगना, यत् = कोशिश करना, शुभ् = सुशोभित होना, रुच् = अच्छा लगना आदि धातुओं के रूप होंगे।

लभ् = पाना के भविष्यत्काल में रूप देखिए—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

आदर्श अनुवाद

लताएँ बढ़ें ।	लताः वर्धन्ताम् ।
शिष्य गुरु की सेवा करते हैं ।	शिष्याः गुरुं सेवन्ते ।
स्त्रियाँ फूलों से प्रसन्न होती हैं ।	महिलाः पुष्पैः मोदन्ते ।
मैं धन प्राप्त करूँगा ।	अहं धनं लप्स्ये ।
ये योग्य स्त्रियाँ हैं ।	इमाः योग्याः महिलाः वर्तन्ते ।
तुम पढ़ने में यत्न करो ।	यूयं पठने यतध्वम् ।
हम भारत माता को नमस्कार करते हैं ।	वयं भारतमातरं वन्दामहे ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. मैं विद्या के लिए यत्न करूँगा ।
   2. तुम सब यदि कष्ट सहोगे तो सुख प्राप्त करोगे ।
   3. गोपाल को पुस्तकें अच्छी लगती हैं ।
   4. पण्डित नेहरू देश की रक्षा के लिए यत्न करते थे ।
   5. मित्र ! तुम पढ़ो और विद्या प्राप्त करो ।
2. निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट काल में रूप लिखिए—
   सेव् (आज्ञा लोट्), वृध्-वर्ध् (वर्तमान काल), वृत्-वर्त् (भूतकाल), सह् (विधिलिङ्), मुद् (भविष्यत्काल) ।
3. लभ् के सभी कालों में रूप लिखिए ।
4. रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए—
   1. यूयम् विद्यायै गुरुम् (सेव्) .... ।
   2. अहं धनम् (लभ्) .... ।
   3. बालाः ! संसारे (वृध्) .... ।
   4. जनाः कष्टं (सह्) .... ।

अजन्त स्त्रीलिंग शब्द, तुदादिगण

इकारान्त मति = बुद्धि, स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप भी होंगे—

गति — चाल	धृति — धैर्य	स्थिति — निवास
कान्ति — चमक	उक्ति — कथन	तृप्ति — संतोष
भूति — ऐश्वर्य	स्मृति — याद	मूर्ति — शक्ल
श्रुति — वेद	स्तुति — बढ़ाई	प्रीति — प्रेम
भक्ति — भक्ति	विपणि — दुकान	आसक्ति — लगाव
रीति — रिवाज	भणति — प्रमाण	कटि — कमर
सृष्टि — दुनिया	चुल्लि — चूल्हा	प्रकृति — स्वभाव, प्रजा
दर्वि — कलछी	बुद्धि — बुद्धि	शक्ति — सामर्थ्य, ताकत
सरणि — सड़क	रुचि — इच्छा	

एवम्–मुक्ति, प्रीति, कीर्ति, युक्ति, परिस्थिति, संगति, सम्पत्ति, विपत्ति, प्रवृत्ति, वृष्टि, स्तुति, भूमि, स्मृति, नीति, शक्ति, दृष्टि, हानि आदि के रूप भी होंगे ।

ईकारान्त नदी, स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदी !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप भी होंगे—

श्रीमती	पूज्या	विदुषी	पढ़ी-लिखी	नारी
भगिनी	बहिन	पुरी	कस्बा	पुत्री
रजनी	रात	मैत्री	मित्रता	पत्नी
राज्ञी	रानी	जननी	माता	गोपी
लेखनी	कलम	बुद्धिमती	बुद्धियुक्त स्त्री	पृथ्वी
सावित्री	नाम विशेष, गायत्री		धात्री	धाय
दासी	नौकरानी	वल्ली	लता	
प्रतोली	गली	शोधनी	झाड़, बुहारी	

एवम्—मुक्ति, प्रीति, कीर्ति, युक्ति, परिस्थिति, संगति, सम्पत्ति, विपत्ति, प्रवृत्ति, वृष्टि, स्तुति, भूमि, स्मृति, नीति, भक्ति, दृष्टि, हानि आदि के रूप भी होंगे।

अपवाद—कुछ ऐसे भी ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द हैं जिनके रूप नदी शब्द की तरह नहीं होते, प्रत्युत कहीं-कहीं कुछ अन्तर होता है; जैसे—

लक्ष्मी, तन्त्री = (वीणा के तार), अवी (= रजस्वला स्त्री) तथा तरी (= नौका)। इन शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में विसर्ग होते हैं और नदी शब्द में नहीं होते। इनके प्रथमा विभक्ति एकवचन में लक्ष्मीः, तरीः, तन्त्रीः, अवीः ये रूप होते हैं।

अध्ययन—नद्यौ = दो नदियाँ । नार्यः = बहुत-सी स्त्रियाँ । श्रीमत्या = श्रीमती से । पत्नीभिः = भार्याओं से । राज्ञ्यै = रानी के लिए । विदुष्याम् = शिक्षित स्त्री में । देव्योः = दो देवियों का ।

उकारान्त धेनु = गौ, (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
संबोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

इसी प्रकार हनु = ठोढ़ी, रेणु = धूल, रज्जु = रस्सी, चञ्चु = चोंच । तनु = शरीर, शतद्रु = सतलुज नदी ।

तुदादिगण

तुदादिगण में भी भ्वादिगण की तरह 'अ' विकरण लगता है किन्तु उपधा की 'इ, उ' को 'ए, ओ' गुण नहीं होता (भविष्यत्काल को छोड़कर) ।

लिख् = लिखना, वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

इसी प्रकार निम्नलिखित तुदादिगण की धातुओं के रूप होंगे। एक-एक रूप दिया जाता है— इष् = इच्छ = चाहना, प्रच्छ = पृच्छ = पूछना, स्पृश् = छूना, सिंच् = सींचना, मिल् = मिलना ।

लट्लकार	इच्छति	पृच्छति	स्पृशति	सिंचति	मिलति
लृट्लकार	एषिष्यति	प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यति	सेक्ष्यति	मेलिष्यति
लङ्लकार	ऐच्छत्	अपृच्छत्	अस्पृशत्	असिंचत्	अमिलत्
लोट्लकार	इच्छतु	पृच्छतु	स्पृशतु	सिंचतु	मिलतु
विधिलिङ्लकार	इच्छेत्	पृच्छेत्	स्पृशेत्	सिंचेत्	मिलेत्

आदर्श अनुवाद

बालको ! बुद्धि से काम लो ।	बालाः ! बुद्धया कार्य नयत ।
मैं चाहता हूँ कि विद्या पढ़ूँ ।	अहम् इच्छामि यत् विद्यां पठानि ।
अध्यापक ने छात्रों से प्रश्न पूछे ।	अध्यापकः छात्रान् प्रश्नान् अपृच्छत् ।

आग को मत छुओ।	अग्निं मा स्पृश।
माली पौधों को जल से सींचता है।	मालाकारः क्षुपान् जलेन सिंचति।
राम का भाई मुझे बाज़ार में मिला।	रामस्य भ्राता माम् आपणे अमिलत्।
विदुषी स्त्रियाँ आत्म-निर्भर होती हैं।	विदुष्यः नार्यः आत्म-निर्भराः भवन्ति।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. बुद्धिमती लड़कियाँ सदा पढ़ना (पठनम्) चाहती हैं।
   2. सज्जन सज्जनों से मिलते हैं।
   3. मोहन ने पौधों को जल से सींचा।
   4. तूने आग को क्यों छुआ ?
   5. इसलिए (अतः) हाथ जल गया।
   6. मित्र ! पूछो, क्या पूछते हो ?
   7. बालक चाहते हैं कि वे सदा खेलें।
   8. कापी में (पञ्चिकायां) लेख लिखो।
2. निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट कालों के रूप लिखिए—
   इष् = इच्छ (भूतकाल), प्रच्छ् (भविष्यत्काल), स्पृश् (विधिलिङ्), मिल् (आज्ञा-लोट्), सिंच् (वर्तमानकाल)।
3. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों को पूर्ण करिए—
   1. पुत्री मातरम् (प्रच्छ्) .... ।
   2. श्रीमति ! रमा लेखनीम् (इष्—इच्छ) .... ।
   3. योग्याः बालाः लेखान् (लिख्) .... ।
   4. अहं हस्तेन (स्पृश्) .... ।

तृतीय परिच्छेद

अजन्त स्त्रीलिंग शब्द, दिवादिगण

ऊकारान्त वधू = बहू, स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु !	हे वध्वौ !	हे वध्वः !

निम्नलिखित कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं जिनके रूप 'वधू' के समान ही चलेंगे—

यवागू — माँड की काँजी, विशेष प्रकार की लस्सी
चमू — सेना   चम्पू — गद्य-पद्य रचना
कर्कन्धू — बेर या बेर का वृक्ष
चञ्चू — चोंच   श्वश्रू — सास

ऋकारान्त मातृ = माता, स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु

सम्बोधन	हे मातः !	हे मातरौ !	हे मातरः !

इस मातृ शब्द के द्वितीया विभक्ति के बहुवचन के रूप—मातृः —को छोड़ कर सब रूप पितृ (पुँल्लिंग) के समान होते हैं। इसी प्रकार—दुहितृ=पुत्री शब्द के रूप होंगे।

दिवादिगण

दिवादिगण में धातु के साथ 'य' विकरण लगता है। ति, तः, अन्ति आदि प्रत्यय उसी प्रकार भ्वादिगण की तरह ही लगते हैं।

नृत् = नाचना (नृत्+य+ति=नृत्यति) वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के पाँचों लकारों में रूप होंगे ।

लकार	**नश् = नष्ट होना**	**दिव् = चमकना**
लट्	नश्यति	दीव्यति
लृट्	नशिष्यति	देविष्यति
लङ्	अनश्यत्	अदीव्यत्
लोट्	नश्यतु	दीव्यतु
विधिलिङ्	नश्येत्	दीव्येत्

लकार	**क्रुध् = गुस्सा करना**	**तुष् = प्रसन्न होना**	**त्रस् = डरना**
लट्	क्रुध्यति	तुष्यति	त्रस्यति
लृट्	क्रोत्स्यति	तोक्ष्यति	त्रसिष्यति
लङ्	अक्रुध्यत्	अतुष्यत्	अत्रस्यत्
लोट्	क्रुध्यतु	तुष्यतु	त्रस्यतु
विधिलिङ्	क्रुध्येत्	तुष्येत्	त्रस्येत्

आदर्श अनुवाद

दिन में सूर्य चमकता है ।	दिवा सूर्यः दीव्यति ।
वह लड़की नाची ।	सा कन्या अनृत्यत् ।
पाप के कर्त्ता नष्ट हों ।	पापस्य कर्तारः नश्यन्तु ।
हम सब विद्या से प्रसन्न होते हैं ।	वयं विद्यया तुष्यामः ।
सीता बन्दर से डरती थी ।	सीता कपेः अत्रस्यत् ।
लोभ से बुद्धि नष्ट हो जाती है ।	लोभेन बुद्धिः नश्यति ।
मैं अच्छे कार्यों से संसार में चमकूँगा ।	अहं सत्कार्यैः संसारे देविष्यामि ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
    1. रात हुई, तारे चमके, चाँद भी चमका ।
    2. हम भी गुणों से संसार में चमकेंगे ।
    3. बच्चो ! नाचो, गाओ और प्रसन्न होओ ।
    4. लोभ से बुद्धि नष्ट हो जायेगी ।
    5. गुरु राम पर क्रोध करता है ।
2. निम्नलिखित शब्दों के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए—

    भ्रातृ, वधू ।
3. निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट कालों में रूप लिखिए—

    दिव् (वर्तमानकाल), नश् (भूतकाल), क्रुध् (भविष्यत्काल), तुष् (आज्ञा लोट्) ।
4. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरिए—
    1. नार्यः कपिभ्यः (त्रस्) .... ।
    2. क्रोधेन मतिः (नश्) .... ।
    3. वयं देशसेवया (दीव्) .... ।
    4. नर्तिका शोभनम् (नृत्) .... ।

चतुर्थ परिच्छेद

अजन्त नपुंसकलिंग शब्द, चुरादिगण

इकारान्त वारि = पानी, नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः

चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारिणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारे, हे वारि !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

उकारान्त मधु = शहद, नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो ! हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

इसी प्रकार—वस्तु = चीज़, अश्रु = आँसू शब्दों के रूप भी होंगे ।

चुरादिगण

चुरादिगण की धातुओं के साथ 'अय' विकरण लगता है और धातु के इ उ को ए ओ गुण हो जाता है । जैसे—चुर्+अय+ति=चोरयति । ति, तः, अन्ति आदि सभी प्रत्यय भ्वादिगण के समान लगते हैं ।

चुर् = चुराना, वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

इसी प्रकार निम्नलिखित चुरादिगणी धातुओं के रूप याद रखें। चिन्त् =सोचना, कथ=कहना, गण=गिनना, तड्-ताड्=पीटना, भक्ष्=खाना, क्षाल्=धोना, तुल्-तोल्=तोलना, दण्ड्=सजा देना, रच्=बनाना, पूज्=पूजा करना, सूच्=सूचना देना, पीड्=पीड़ा देना।

आदर्श अनुवाद

राजा के नौकरों ने धन चुराया।	नृपस्य भृत्याः धनम् अचोरयन्।
संसार के सब लोग चिंता करते हैं।	संसारस्य सर्वमानवाः चिन्तयन्ति।

हम सब आज चावल खायेंगे ।	वयम् अद्य ओदनं भक्षयिष्यामः ।
मैं सायंकाल वस्त्र धोता हूँ ।	अहं सायंकाले वस्त्राणि क्षालयामि ।
तुम सब भगवान् की पूजा करो ।	यूयम् ईश्वरं पूजयत ।
कुम्हार घड़े बनायेगा ।	कुम्भकारः घटं रचयिष्यति ।
दुष्ट लोग सज्जनों को कष्ट देते हैं ।	दुष्टाः सज्जनान् पीडयन्ति ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. चोर रुपये चुरायेगा ।
   2. सिपाही (रक्षक) चोर को दण्ड देंगे ।
   3. मूर्ख सदा चिन्ता करते हैं ।
   4. राम ने मोहन को डण्डे से पीटा ।
   5. मैं आज फल खाऊँगा ।
   6. धोबी पानी से कपड़े धोते हैं ।
   7. हम सब सदा सच कहेंगे ।
2. निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट कालों में रूप लिखिए—
   चुर् (भविष्यत्काल), चिन्त् (वर्तमानकाल), कथ (भूतकाल) ।
3. निम्नलिखित शब्दों के रूप उच्चारण करके लिखिए—
   वारि, वस्तु, अश्रु ।
4. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को शुद्ध करिए—
   1. भृत्यः सुवर्णम् अचोरन् । 2. अहम् अंकान् गणयामः ।
   3. यूयम् असत्यं कथयिष्यसि । 4. वयम् मधु भक्षयन्ति ।

पंचम् परिच्छेद

अव्यय शब्द और अदादिगण

जो शब्द सदा एक जैसे रहें, जिनमें किसी भी प्रकार का विभक्ति, लिंग, वचन आदि का परिवर्तन न हो उन्हें 'अव्यय' कहते हैं । ये अनुवाद

करते समय काम आते हैं। कुछ अव्यय ये हैं—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अथ	आरम्भ, इसके बाद	तदा	तब	बहिः	बाहर
		तत्र	वहाँ	मा	नहीं
अत्र	यहाँ	तर्हि	तो	यत्र	जहाँ
अत्यन्तम्	अतीव्, बहुत	तथा	वैसे	यत्	कि
अद्य	आज	ततः	इसके बाद	यदि	अगर
अधुना	अब	तथापि	तो भी	यद्यपि	अगरचे
अथवा	या	तु	तो	यथा	जैसे
अपि	भी	तदानीम्	तब	यतः	क्योंकि, जहाँ से
अतः	इसलिए	तावत्	तब तक	यावत्	जब तक
अद्यत्वे	आजकल	दिवा	दिन	यदा	जब
इदानीम्	अब	न	नहीं	विना	बिना, बग़ैर
इतस्ततः	इधर-उधर	नीचैः	नीचे	वा	अथवा
उच्चैः	ज़ोर से, ऊपर	नोचेत्	नहीं तो	शीघ्रम्	जल्दी
एकदा	एक बार	नाना	अनेक	श्वः	आनेवाला कल
एव	ही	नमः	नमस्कार	शनैः	धीरे
एवम्	इस तरह	प्रातः	सवेरे	सह	साथ
किम्	क्या	पुनः	फिर	स्वयम्	अपने-आप
किन्तु	मग़र	परम्	परन्तु, किन्तु	सर्वत्र	सब जगह
कुत्र	कहाँ	पृथक्	अलग	सायम्	शाम को
कदा	कब	पश्चात्	बाद	सदा	हमेशा
कथम्	कैसे, क्यों	प्रभृति	लेकर	स्म	था, थी, थे
च	और	प्रायः	अक्सर	ह्यः	बीता हुआ कल

अदादिगण

इस गण में धातु के साथ कोई विकरण नहीं लगता। धातु सीधी ति,

तः, अन्ति प्रत्ययों के साथ लग जाती है। जैसे—
अस्+ति=अस्ति। अस् के अ का कई जगह लोप हो जाता है।

अस् = होना (परस्मैपद) वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति (वह है)	स्तः (वे दो हैं)	सन्ति (वे सब हैं)
मध्यम पुरुष	असि (तू है)	स्थः (तुम दो हो)	स्थ (तुम सब हो)
उत्तम पुरुष	अस्मि (मैं हूँ)	स्वः (हम दो हैं)	स्मः (हम सब हैं)

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत् (था)	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आस्तु (हो)	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात् (हो)	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

भविष्यत्काल में 'अस्' को 'भू' हो जाता है और उसके रूप भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति आदि पठ् के समान होते हैं।

आदर्श अनुवाद

रामेश्वर विद्यार्थी है ।	रामेश्वरः छात्रः अस्ति ।
वहाँ वे दो पशु हैं ।	तत्र तौ पशू स्तः ।
यहाँ संसार में सब यात्री हैं ।	अत्र संसारे सर्वे पथिकाः सन्ति ।
तू बड़ा बहादुर है ।	त्वम् अतीव वीरः असि ।
मैं सुनार हूँ ।	अहं स्वर्णकारः अस्मि ।
राम वीर था ।	रामः वीरः आसीत् ।
राम लक्ष्मण दशरथ के पुत्र थे ।	रामलक्ष्मणौ दशरथस्य पुत्रौ आस्ताम् ।
पहले तू जवान था ।	पुरा त्वं युवकः आसीः ।
मैं ईश्वर का भक्त था ।	अहम् ईश्वरस्य भक्तः आसम् ।
पुत्र ! ऐसा ही हो ।	पुत्र ! एवम् एव अस्तु ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
    1. दोनों बालक मूर्ख हैं ।
    2. गुरुजी के हम सब शिष्य हैं ।
    3. दुर्योधन बड़ा दुष्ट था ।
    4. सब लोग स्वस्थ हों ।
    5. हम सब बालक थे ।
2. अस् धातु के वर्तमानकाल और भूतकाल में रूप लिखिए ।
3. रिक्त स्थानों को पूर्ण करिए ।
    1. अहम् बालकः .... ।
    2. युवाम् वीरौ .... ।
    3. लक्ष्मणः दशरथस्य .... ।
    4. छात्राः तत्र .... ।
4. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाएँ शुद्ध करिए—
    1. त्वं मूर्खः अस्ति ।
    2. अहं सर्वज्ञः असि ।
    3. ते बालाः निपुणाः आसीत् ।
    4. युधिष्ठिरः सत्यवादो आसीः ।

तृतीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद

सर्वनाम शब्द

सर्वनाम—जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हों उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। जैसे—सः=वह, त्वम्=तू, अहम्=मैं, इदम्=यह, किम्=कौन, यत्=जो।

विशेष ज्ञातव्य—सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण के समान होता है। विशेष्य का जो लिंग, विभक्ति और वचन होता है, सर्वनाम का भी उसी लिंग, विभक्ति और वचन में प्रयोग होता है। जैसे—वह (पुरुष) के लिए 'सः', वह (स्त्री) के लिए 'सा' और वह (नपुंसक शब्द) के लिए 'तत्' आता है। इसी प्रकार सभी विभक्तियों में कारकों के आधार पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है—इस नियम को ध्यान में रखिए।

सर्वनाम शब्दों के रूप देने से पूर्व उनके सम्बन्ध में एक-दो नियम बताना आवश्यक है। जो इस प्रकार हैं—

(क) सर्वनाम शब्दों में देव आदि शब्दों की अपेक्षा कहीं-कहीं भिन्न प्रकार के विभक्ति चिह्न जोड़े जाते हैं, जैसे—

पुँल्लिंग	— प्र॰ वि॰ एकवचन=ई,	जैसे —	सर्वे
,,	— चतु॰ वि॰ एकवचन=स्मै,	जैसे —	सर्वस्मै
,,	— पंच॰ वि॰ एकवचन=स्मात्	जैसे —	सर्वस्मात्
,,	— षष्ठी॰ वि॰ बहुवचन=इषाम्	जैसे —	सर्वेषाम्
,,	— सप्त॰ वि॰ एकवचन=स्मिन्	जैसे —	सर्वस्मिन्

(ख) स्त्रीलिंग सर्वनाम शब्दों में निम्नलिखित विभक्ति चिह्न प्रयुक्त होते हैं। स्यै, स्याः तथा स्याम् इन विभक्ति चिन्हों के परे होने पर सर्वनाम के अन्तिम 'आ' का 'अ' हो जाता है।

चतु॰ वि॰ एकवचन — स्यै जैसे — सर्वा+स्यै=सर्वस्यै।

पंच॰ वि॰ एकवचन — स्याः, जैसे — सर्वा+स्याः=सर्वस्याः।

षष्ठी॰ वि॰ एकवचन — स्याः जैसे — सर्वा+स्याः=सर्वस्याः ।

षष्ठी॰ वि॰ बहुवचन — साम् जैसे — सर्वा+साम्=सर्वासाम् ।

(ग) नपुँसकलिंग सर्वनाम शब्दों के रूप प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति के 'फल' के समान चलते हैं, जैसे—

प्र॰	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि॰	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष विभक्तियों में उनके रूप पुल्लिंग सर्वनाम शब्दों के समान चलते हैं ।

(घ) युष्मद् और अस्मद इन दोनों शब्दों के तीनों लिंगों में समान रूप होते हैं ।

अब सर्वनाम शब्दों के प्रत्येक लिंग में पृथक्-पृथक् रूप दिए जा रहे हैं, जो इस प्रकार हैं —

तद्=वह पुँल्लिग (अर्थ-सहित)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः (वह)	तौ (वे दो)	ते (वे सब)
द्वितीया	तम् (उसे)	तौ (उन दो को)	तान् (उन सब को)
तृतीया	तेन (उस से)	ताभ्याम् (उन दो से)	तैः (उन सब से)
चतुर्थी	तस्मै (उसके लिए)	ताभ्याम् (उन दो के लिए)	तेभ्यः (उन सब के लिए)
पंचमी	तस्मात् (उस से)	ताभ्याम् (उन दो से)	तेभ्यः (उन सब से)
षष्ठी	तस्य (उसका)	तयोः (उन दो का)	तेषाम् (उन सब का)
सप्तमी	तस्मिन् (उसमें)	तयोः (उन दो में)	तेषु (उन सब में)

नोट–तद् आदि कई सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता ।

तद् = वह, स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् = वह, नपुँसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुल्लिंग के समान होंगे ।

युष्मद् = तू, (तीनों लिंगों में समान रूप)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् = मैं (तीनों लिंगों में समान रूप)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

यत्=जो पुँल्लिग / स्त्रीलिंग

	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	यः	यौ	ये	या	ये	याः
द्वितीया	यम्	यौ	यान्	याम्	ये	याः
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्	यस्याः	ययोः	यासास्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ते	यानि
द्वितीया	यत्	ते	यानि

शेष रूप पुँल्लिंग के समान होंगे।

किम्=कौन पुँल्लिग / स्त्रीलिंग

	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	कः	कौ	के	का	के	काः

द्वितीया	कम्	कौ	कान्	काम्	के	काः
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुँसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

शेष रूप पुँल्लिंग के समान होंगे ।

इदम्=यह पुँल्लिग — स्त्रीलिंग

	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु	अस्याम्	अनयोः	आसु

नपुँसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

शेष रूप पुँल्लिग के समान होंगे ।

सर्व=सब, पुँल्लिग | **स्त्रीलिंग**

	एक०	**द्वि०**	**बहु०**	**एक०**	**द्वि०**	**बहु०**
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
संबोधन	हे सर्व !	हे सर्वौ !	हे सर्वे !	हे सर्वे !	हे सर्वे !	हे सर्वाः !

नपुंसकलिंग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
सम्बोधन	हे सर्वे !	हे सर्वे !	हे सर्वाणि !

शेष रूप पुँल्लिंग के समान होंगे ।

आदर्श अनुवाद

उस पुरुष के लिए भोजन लाओ ।	तस्मै पुरुषाय भोजनम् आनय ।
उस वन में मृग रहते हैं ।	तस्मिन् वने मृगाः वसन्ति ।
जिसको कहोगे वही आयेगा ।	यं वदिष्यसि स एव आगमिष्यति ।
अरे ! वह कौन है ?	रे ! सः कः अस्ति ?
वह कौन जा रही है ?	सा का गच्छति ?
मोहन ! तू किसका पुत्र है ?	मोहन ! त्वं कस्य पुत्रः असि ?
यह उन स्त्रियों का मकान है ।	इदं तासां नारीणां भवनम् अस्ति ।
तेरा क्या नाम है ?	तव किम् अभिधानम् अस्ति ।
तुम्हारा विद्यालय कहाँ है ?	युष्माकं विद्यालयः कुत्र अस्ति ?

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
    1. हम तुम्हारे साथ बाज़ार (आपणम्) जाएँगे ।
    2. हमारे पिता जी हमें पढ़ने के लिए (पठनाय) कहते हैं ।
    3. बाहर कौन पुरुष है ?
    4. इस संसार में कोई आता है, कोई जाता है ।
    5. वे कन्याएँ किस गाँव की हैं ?
    6. गोविन्द, मैं तुझे (तुभ्यम्) धन दूँगा ।
    7. उन कन्याओं में रमा श्रेष्ठ है ।
    8. सब पुरुष और सब स्त्रियाँ मेले में (मेलके) जायेंगे ।
2. युष्मद् और अस्मद् शब्दों के सभी रूप कण्ठस्थ करिये ।
3. किम् (पुँल्लिंग), इदम् (स्त्री॰), तत् (पुँ॰) के रूप लिखिए ।
4. रिक्त स्थानों में सर्वनाम शब्द भरिए—
    1. इदं गृहं .... अस्ति ?
    2. मित्र ! .... अभिधानं किम् अस्ति ?
    3. ते बालकाः .... फलानि भक्षयिष्यन्ति ।
    4. यूयम् .... नगरे वसथ ।

द्वितीय परिच्छेद

संख्यावाचक शब्द

गणना-वाचक संख्या-शब्दों से साधारणतया किसी वस्तु की संख्या का ज्ञान होता है । जैसे—दो, चार, पाँच, छः, दस, बारह, आदि । उसके क्रम का अर्थात् दूसरा, चौथा, पाँचवा, छठा, दसवाँ, बारहवाँ—इत्यादि का ज्ञान नहीं होता । अतः गणना-वाचक संख्या शब्दों के विषय में कुछ नियम प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जो इस प्रकार हैं—

(क) 'दश' से 'विंशति' तक गणना-वाचक संख्या—शब्द बनाने के लिए, 'दश' शब्द से पूर्व ! एक, द्वि, आदि शब्द लगाए जाते हैं। जैसे—एकादश, द्वादश, त्रयोदश, आदि।

(ख) 'विंशति' से 'शतम्' तक गणनावाचक शब्द बनाने के लिए 'विंशति, त्रिंशत्' आदि शब्दों के पूर्व 'एक', 'द्वि', 'त्रि' आदि शब्द लगाए जाते हैं, जैसे—एकविंशतिः, त्रयोविंशतिः, इत्यादि।

(ग) 'सौ' से ऊपर की संख्या को प्रकट करने के लिए जितनी अधिक संख्या बनानी हैं उसके बोधक शब्द के आगे 'अधिक' शब्द जोड़ देते हैं और वह समस्त शब्द 'शत्' शब्द का विशेषण बन जाता है, जैसे—

एकाधिकं शतम् — एक सौ एक।
द्व्यधिकं शतम् — एक सौ दो।
त्र्यधिकं शतम् — एक सौ तीन।
चतुरधिकं शतम् — एक सौ चार, इत्यादि।

(घ) हज़ार से या लाख से आगे कुछ अधिक संख्या प्रकट करने के लिए छोटी संख्या के बोधक शब्द के आगे 'अधिक' शब्द जोड़कर उस समस्त शब्द को 'सहस्र' या 'लक्ष्य' शब्द से पहले जोड़ देते हैं, जैसे—

विंशत्यधिकं सहस्रम् — 1020
त्रिंशदधिकं सहस्रम् — 1030 इत्यादि।

एक (एकवचन में)

	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्

षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि=दो (द्विवचन में)

	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुँसकलिंग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	,,	,,	,,
पंचमी	,,	,,	,,
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	,,	,,	,,

त्रि=तीन (बहुवचन में)

	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुँसकलिंग
प्रथमा	त्रयः	त्रिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	,,	,,
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पंचमी	,,	,,	,,
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिसृषु	त्रिषु

चतुर्=चार (बहुवचन में)

	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुँसकलिंग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	,,	,,
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुभर्यः

पंचमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुभर्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

नीचे लिखे संख्यावाची शब्द सदा बहुवचनान्त और सभी लिंगों में समान हैं ।

पञ्चन् (5)	षष् (6)	सप्तन् (7)	अष्टन् (8)	नवन् (9)
पञ्च	षट्	सप्त	अष्टौ	नव
,,	,,	,,	,,	,,
पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टभिः	नवभिः
पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः
,,	,,	,,	,,	,,
पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्
पञ्चसु	षट्सु, षट्त्सु	सप्तसु	अष्टसु	नवसु

इसी प्रकार— दशन् (10), एकादशन् (11), द्वादशन् (12), त्रयोदशन् (13), चतुर्दशन् (14), पञ्चदशन् (15), षोडशन् (16), सप्तदशन् (17), अष्टादशन् (18), नवदशन् (19) तक सभी शब्द तीनों लिंगों में नवन् के समान होंगे ।

विंशति (20) स्त्रीलिंग में और केवल एकवचन में

प्रथमा	विंशतिः	पञ्चमी	विंशत्याः
द्वितीया	विंशतिम्	षष्ठी	विंशत्याः
तृतीया	विंशत्या	सप्तमी	विंशत्याम्
चतुर्थी	विंशत्यै		

एकविंशतिः (21) से नवनवतिः (99) तक की संख्या के रूप सदा एकवचन में और स्त्रीलिंग में होते हैं । सबका पहला रूप दिया जाता है । शतम् (100) नपुँसकलिंग में होगा ।

21 से 100 तक संख्यावाची शब्द

21	एकविंशतिः	22	द्वाविंशतिः	23	त्रयोविंशतिः
24	चतुर्विंशतिः	25	पञ्चविंशतिः	26	षड्विंशतिः
27	सप्तविंशतिः	28	अष्टाविंशतिः	29	एकोनत्रिंशत्
30	त्रिंशत्	31	एकत्रिंशत्	32	द्वात्रिंशत्
33	त्रयस्त्रिंशत्	34	चतुस्त्रिंशत्	35	पञ्चविंशत्
36	षट्त्रिंशत्	37	सप्तत्रिंशत्	38	अष्टत्रिंशत्
39	एकोनचत्वारिंशत्	40	चत्वारिंशत्	41	एकचत्वारिंशत्
42	द्विचत्वारिंशत्	43	त्रिचत्वारिंशत्	44	चतुश्चत्वारिंशत्
45	पञ्चचत्वारिंशत्	46	षट्चत्वारिंशत्	47	सप्तचत्वारिंशत्
48	अष्टचत्वारिंशत्	49	एकोनपञ्चाशत्	50	पञ्चाशत्
51	एकपञ्चाशत्	52	द्विपञ्चाशत्	53	त्रयःपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्	55	पञ्चपञ्चाशत्	56	षट्पञ्चाशत्
57	सप्तपञ्चाशत्	58	अष्टपञ्चाशत्	59	एकोनषष्टिः
60	षष्टिः	61	एकषष्टिः	62	द्विषष्टिः
63	त्रिषष्टिः	64	चतुःषष्टिः	65	पञ्चषष्टिः
66	षड्षष्टिः	67	सप्तषष्टिः	68	अष्टषष्टिः
69	एकोनसप्ततिः	70	सप्ततिः	71	एकसप्ततिः
72	द्विसप्ततिः	73	त्रयःसप्ततिः	74	चतुःसप्ततिः
75	पञ्चसप्ततिः	76	षट्सप्ततिः	77	सप्तसप्ततिः
78	अष्टसप्ततिः	79	एकोनाशीतिः	80	अशीतिः
81	एकाशीतिः	82	द्वयशीतिः	83	त्र्यशीतिः
84	चतुरशीतिः	85	पञ्चाशीतिः	86	षड्शीतिः
87	सप्ताशीतिः	88	अष्टाशीतिः	89	एकोननवतिः
90	नवतिः	91	एकनवतिः	92	द्विनवतिः
93	त्रयोनवति	94	चतुर्णवतिः	95	पञ्चनवतिः
96	षण्णवतिः	97	सप्तनवतिः	98	अष्टनवतिः
99	नवनवतिः	100	शतम्		

नोट–इन शब्दों में इकारान्त एकविंशति से अष्टाविंशति तक, और

एकोनषष्टि से नवनवति तक तो मति शब्द के एकवचन के समान रूप होंगे, जैसे विंशति के लिख दिये हैं। और एकोनत्रिंशत् से नवपञ्चाशत् तक के रूप आगे दिए गए हलन्त शब्द 'मरुत' के केवल एकवचन के समान होंगे।

आदर्श अनुवाद

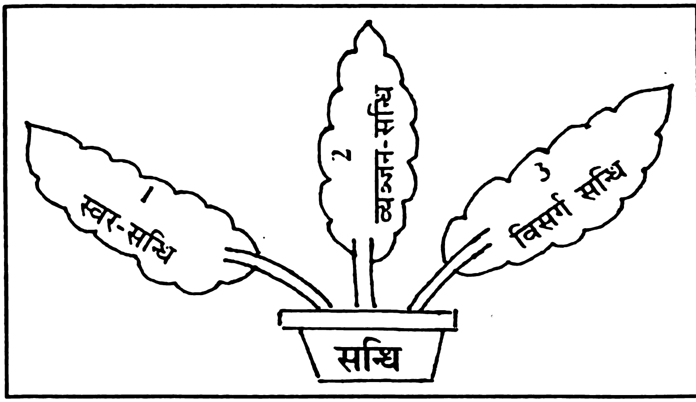
एक बाग में सात वृक्ष हैं।	एकस्मिन् उद्याने सप्त वृक्षाः सन्ति।
वृक्षों पर दस बन्दर बैठे हैं।	वृक्षेषु दस वानराः तिष्ठन्ति।
उस बाग़ में चार स्त्रियाँ घूमती है।	तस्मिन् उद्याने चतस्रः नार्यः भ्रमन्ति।
सेठ ने एक ग़रीब को दो रुपये दिए।	श्रेष्ठी एकस्मै निर्धनाय द्वे रुप्यके अयच्छत्।
दशम श्रेणी की फीस सात रुपये है।	दशम्याः श्रेण्याः शुल्कं सप्त रूप्यकाणि सन्ति।
आठ लड़कों की पुस्तकें लाओ।	अष्टानां छात्राणां पुस्तकानि आनय।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. इस मकान में चार स्त्रियाँ, दो पुरुष और छः बालक रहते हैं।
   2. हमारे विद्यालय में 25 अध्यापक हैं।
   3. एक सप्ताह के सात दिन होते हैं।
   4. एक पक्ष में 15 दिन और एक महीने में तीस दिन होते हैं।
   5. मेरी श्रेणी में चालीस छात्र पढ़ते हैं।
   6. दो और चार के मेल में (मेलनेन) छः होते हैं।
2. 'एक' शब्द के पुँल्लिंग में, 'त्रि' शब्द के स्त्रीलिंग में, चतुर् शब्द के पुँल्लिंग में और अष्टन् शब्द के सभी विभक्तियों के रूप लिखिए।
3. नीचे लिखे संख्या शब्दों की संस्कृत बताइए—
   चार स्त्रियों के लिए, पाँच पुरुषों में, दो बालकों का, एक फल, तीन मार्गों के द्वारा।

स्वर-सन्धि

सन्धि–दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को 'सन्धि' कहते हैं। सन्धियाँ तीन हैं — 1. स्वर-सन्धि, 2. व्यञ्जन-सन्धि, 3. विसर्ग-सन्धि।



स्वर-सन्धि– स्वरों के परस्पर मेल को 'स्वर-सन्धि' कहते हैं। ये कई हैं, जो क्रमशः नीचे दी जाती हैं—

1. **दीर्घ सन्धि**–ह्रस्व या दीर्घ अ आ इ ई उ ऊ और ऋ ॠ से परे समान जाति के ह्रस्व या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों को मिलाकर दीर्घ स्वर होता है। इसे 'दीर्घ सन्धि' कहते हैं। जैसे—

   अ+अ=आ। इ+इ=ई। उ+उ=ऊ। ऋ+ऋ=ॠ।

अ+अ=आ — धर्म+अर्थ=धर्मार्थ, च+अपि=चापि। परम+अर्थ=परमार्थ, मम+अपि=ममापि।

अ+आ=आ — हिम+आलय=हिमालय, शिष्ट+आचार=शिष्टाचार।

आ+अ=आ — विद्या+अर्थी=विद्यार्थी, तथा+अपि=तथापि।

आ+आ=आ — विद्या+आलय=विद्यालय, दया+आनन्द=दयानन्द ।
इ+इ=ई — मुनि+इन्द्र=मुनीन्द्र, कवीन्द्र, रवीन्द्र, गिरीन्द्र ।
इ+ई=ई — गिरि+ईश=गिरीश, हरीश ।
ई+इ=ई — मही+इन्द्र=महीन्द्र, सुधीन्द्र ।
ई+ई=ई — लक्ष्मी+ईश=लक्ष्मीश, श्रीश ।
उ+उ=ऊ — भानु+उदय=भानूदय, गुरूपदेश ।

2. **गुण सन्धि**—अ आ से परे इ ई, उ ऊ, ऋ और लृ आ जायें तो निम्न प्रकार से मिलकर गुण सन्धि होती है । जैसे—

अ+इ=ए — नर+इन्द्र=नरेन्द्र, गजेन्द्र, सुरेन्द्र ।
आ+इ=ए — महा+इन्द्र=महेन्द्र, तथा+इति=तथेति ।
अ+ई=ए — नर+ईश=नरेश । गण+ईश=गणेश ।
आ+ई=ए — रमा+ईश=रमेश, महेश, उमेश (शिवजी) ।
अ+उ=ओ — हित+उपदेश=हितोपदेश, चन्द्रोदय, सूर्योदय ।
आ+उ=ओ — गंगा+उदकम्=गंगोदकम् ।
आ+ऊ=ओ — जल+ऊर्मि=जलोर्मि (जल की लहर) ।
अ+ऋ=अर् — देव+ऋषि=देवर्षि, ब्रह्मर्षि, सप्तर्षि ।
आ+ऋ=अर् — महा+ऋषि=महर्षि, राजर्षि ।
अ+लृ=अल् — तव+लृकारः=तवल्कारः ।

3. **वृद्धि-सन्धि**—अ आ से परे ए ऐ और ओ औ हों तो दोनों मिलकर ऐ औ वृद्धि-सन्धि हो जाती है । जैसे—

अ+ए=ऐ — अद्य+एव=अद्यैव, तवैव, ममैवम्, चैव ।
आ+ए=ऐ — तथा+एव=तथैव, सदैव, लतैव ।
अ+ऐ=ऐ — तव+ऐश्वर्यम्=तवैश्वर्यम्, ममैश्वर्यम् ।
आ+ऐ=ऐ — महा+ऐश्वर्यम्=महैश्वर्यम् ।
अ+ओ=औ — मम+ओषधि=ममौषधि, तवौषधि ।
अ+औ=औ — जन+औदार्यम्=जनौदार्यम् ।
आ+औ=औ — महा+औषधम्=महौषधम् ।

4. **यण्-सन्धि**—इ, ई, उ, ऊ, और ऋ से अ सवर्ण स्वर परे रहते तो इ को य्, उ को व् और ऋ को र् यण् हो जाता है। जैसे—

इ को य्— इ+अ=य — यदि+अपि=यद्यपि ।

इ+आ=या — इति+आदि=इत्यादि, अत्याचारः ।

ई+आ=या — नदी+आगच्छति=नद्यागच्छति ।

इ+उ=यु — रवि+उदयः=रव्युदयः ।

उ को व्— उ+अ=व — सु+अच्छम्=स्वच्छम् ।

उ+आ=वा — सु+आगतम्=स्वागतम् ।

ऋ को र्— ऋ+अ=र — पितृ+अर्थम्=पित्रर्थम्, मात्रर्थम् ।

ऋ+आ=रा — पितृ+आज्ञा=पित्राज्ञा, मात्राज्ञा ।

5. **अयादि-सन्धि**—एक ही पद में ए ऐ, ओ औ से परे कोई स्वर हो तो ए को अय्, ऐ का आय्, ओ को अव् और औ को आव् होते हैं। जैसे—

ए+अ=अय — ने+अन=नयन, शयन ।

ए+ए=अये — हरे+ए=हरये, कवये ।

ऐ+अ=आय — नै+अकः=नायकः, गै+अकः=गायकः ।

ओ+अ=अव — भो+अति=भवति । पो+अनः=पवनः, भवनम् ।

ओ+ए=अवे — भानो+ए=भानवे, साधवे, गुरवे ।

औ+अ=आव — पौ+अकः=पावकः ।

औ+इ=आवि — नौ+इकः=नाविकः ।

(ख) पदान्त ए ऐ ओ औ के स्थान पर हुए अयादि आदेशों के य् व् का विकल्प से लोप हो जाता है। य् व् का लोप हो जाने पर फिर सन्धि नहीं होती । ऐसे ही—

हरे+इह=हरयिह । विकल्प से य् का लोप होने पर दूसरा रूप हरइह बनेगा, फिर सन्धि नहीं होगी । ऐसे ही—

विष्णो+इह=विष्णविह, विष्णइह ।

तौ+आगतौ=तावागतौ, ता आगतौ ।

रमायै+आगतः=रमायायागतः, रमाया आगतः ।

6. **पूर्वरूप-सन्धि**—पदान्त ए ओ से परे ह्रस्व अ हो तो उस अ का पूर्वरूप हो जाता है। जैसे—

साधो+अत्र=साधोऽत्र, भानोऽत्र।

जले+अस्ति=जलेऽस्ति, वनेऽत्र।

आदर्श अनुवाद

पुत्र ! मेरी इच्छा है कि मैं भी जाऊँ।	पुत्र ! ममेच्छाऽस्ति यद् अहमपि गच्छानि।
बर्फ़ के घर को हिमालय कहते है।	हिमस्यालयं हिमालयं वदन्ति।
हम आज ही नगर जायेंगे।	वयम् अद्यैव नगरं गमिष्यामः।
भले की बात से लाभ होता है।	हितोपदेशेन लाभः भवति।
महान् ऋषि वन में रहते हैं।	महर्षयः वने वसन्ति।
छात्र गुरु के उपदेश से श्रेष्ठ बनते हैं।	छात्राः गुरुपदेशेन श्रेष्ठाः भवन्ति।
ओ हरि ! यहाँ बैठ।	हे हरेऽत्र तिष्ठ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. लोगों की एकता से स्वतन्त्रता मिली।
   2. महान् औषध से रोग नष्ट हुआ।
   3. मेरे लिए अभी भोजन लाओ।
   4. नदियों के ईश को समुद्र कहते हैं।
   5. बालक शिष्ट आचार से श्रेष्ठ होते हैं।
   6. धन का ईश धनी होता है।
2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करिए—
   1. मम+अपि। 2. भूमि+ईश्वरः।

3. विधु+उदयः ।
4. महा+उपदेशकः ।
5. मानव+इन्द्रः ।
6. तथा+इदम् ।
7. मत+ऐक्यम् ।
8. अधुना+एव ।
9. प्रति+उपकारः ।
10. मधु+आनय ।
11. पितृ+आज्ञा ।
12. भो+अन्ति ।
13. साधौ+अत्र ।
14. प्रति+एकम् ।

3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धिच्छेद करिए—

अद्यैव, गुरूपदेशेन, हितोपदेशः, अत्याचारः, राजर्षिः, विष्णविह ।

4. निम्नलिखित शब्दों में अयादि सन्धि से जो दो-दो रूप बनते हैं, उन्हें लिखिए—

1. नरौ+आगतौ ।
2. हरे+आगच्छ ।
3. विष्णो+उपतिष्ठ ।
4. बालौ+अपतताम् ।
5. नार्यै+उपकारः ।

चतुर्थ अध्याय

प्रथम परिच्छेद

हलन्त शब्द और तनादिगण

हलन्त शब्द—जिन शब्दों का अन्तिम अक्षर स्वर न होकर व्यंजन हो उन्हें हलन्त शब्द कहते हैं । जैसे—श्रीमत्, भगवत्, मरुत्, जगत् इत्यादि ।

हलन्त शब्दों के लिए विभक्तियों के प्रत्यय

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	०	औ	अः
द्वितीया	अम्	,,	,,
तृतीया	आ	भ्याम्	भिः
चतुर्थी	ए	,,	भ्यः
पंचमी	अः	,,	,,
षष्ठी	अः	ओः	आम्
सप्तमी	इ	ओः	सु
सम्बोधन	०	औ	अः

ये प्रत्यय सीधे हलन्त शब्दों के साथ लगते हैं और रूप बन जाते हैं । जैसे—

मरुत्=हवा, पुँल्लिंग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मरुत्	मरुतौ	मरुतः
द्वितीया	मरुतम्	,,	,,
तृतीया	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
चतुर्थी	मरुते	,,	मरुद्भ्यः
पंचमी	मरुतः	,,	,,
षष्ठी	मरुतः	मरुतोः	मरुताम्

सप्तमी	मरुति	मरुतोः	मरुत्सु
सम्बोधन	हे मरुत् !	हे मरुतौ !	हे मरुतः !

एवं दकारान्त सुहृद् (मित्र) शब्द के रूप भी होंगे—सुहृत् सुहृदौ सुहृदः इत्यादि ।

गच्छत्—शब्द के रूप प्रथमा, द्वितीया और सम्बोधन में मरुत् से भिन्न हैं । जैसे—

प्रथमा, सम्बोधन	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः

शेष रूप मरुत् के समान होते हैं ।

इसी प्रकार – पठत्=पढ़ता हुआ, हसत्=हँसता हुआ, रक्षत्=रक्षा करता हुआ । वदत्, पिबत्, पचत्, नमत्, स्मरत्, लिखत्, यच्छत्, चोरयत्, दीव्यत् इत्यादि ।

गुणवत्=गुणवाला, पुँल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुणवान्	गुणवन्तौ	गुणवन्तः
द्वितीया	गुणवन्तम्	गुणवन्तौ	गुणवतः
सम्बोधन	हे गुणवन् !	हे गुणवन्तौ !	हे गुणवन्तः !

शेष गुणवता आदि रूप मरुत् के समान होंगे ।

इसी प्रकार भवत्—भवान् (आप), बुद्धिमत्—बुद्धिमान्, भगवत्—भगवान्, धनवत्—धनवान्, बलवत्—बलवान्, शक्तिमत्—शक्तिमान्, श्रीमत्—श्रीमान्, मूर्तिमत्—मूर्तिमान्, शब्दों के रूप होंगे ।

महत्=बड़ा, पुँल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
सम्बोधन	हे महन् !	हे महान्तौ !	हे महान्तः !

शेष रूप मरुत् के समान होंगे ।

आत्मन् = आत्मा,अपना, पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	,,	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	,,	आत्मभ्यः
पंचमी	आत्मनः	,,	,,
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	,,	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप होंगेः—
शर्मन्=शर्मा । वर्मन्=वर्मा ।

राजन् = राजा, पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	,,	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	,,	राजभ्यः
पंचमी	राज्ञः	,,	,,
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	,,	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

शशिन् = चन्द्रमा, पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शशि	शशिनौ	शशिनः
द्वितीया	शशिंनम्	,,	,,

तृतीया	शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः
चतुर्थी	शशिने	,,	शशिभ्यः
पंचमी	शशिनः	,,	,,
षष्ठी	,,	शशिनोः	शशिनाम्
सप्तमी	शशिनि	,,	शशिषु
सम्बोधन	हे शशिन् !	हे शशिनौ !	हे शशिनः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप भी होंगे:

धनिन्	=	धनी	स्वामिन्	=	स्वामी
वैरिन्	=	वैरी	विद्यार्थिन्	=	छात्र
पापिन्	=	पापी	पक्षिन्	=	पक्षी
मन्त्रिन्	=	मन्त्री	रोगिन्	=	रोगी
गुणिन्	=	गुणी	तपस्विन्	=	तपस्वी

तनादिगण

तनादिगण का विकरण (चिन्ह) उ है ।

कृ=करना—कृ+उ+ति=करोति=करता है ।

वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथं
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

कृ धातु के पूर्व 'उप' उपसर्ग लग जाये तो उसका अर्थ बदल जाता है । देखिए :

उप+कृ=उपकार करना, उपकरोति=उपकार करता है ।

इसके रूप भी कृ के समान ही होते हैं ।

विशेषण विशेष्य का सम्बन्ध

अनुवाद करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि विशेष्य शब्द में जो लिंग, विभक्ति, वचन हो वही लिंग, विभक्ति और वचन विशेषण का भी हो । देखिए :

राम सुन्दर है = रामः सुन्दरः अस्ति ।

कन्या सुन्दर है = कन्या सुन्दरी अस्ति ।

फूल सुन्दर है = पुष्पं सुन्दरम् अस्ति ।

मित्र ! जाते हुए बालक को देखो = मित्र ! गच्छन्तं बालकं पश्य ।

मीठे फल गिरते हैं = मधुराणि फलानि पतन्ति ।

इन वाक्यों में आपने देखा कि जो लिंगादि विशेष्य का है वही लिंगादि

विशेषणों का भी है ।

आदर्श अनुवाद

श्याम हँसता हुआ काम करता है ।	श्यामः हसन् कार्यं करोति ।
खेलने वाले बालकों के लिए दूध लाओ ।	क्रीडद्भ्यः छात्रेभ्यः दुग्धम् आनय ।
गुणवान् पुरुष महान् बनते हैं ।	गुणवन्तः पुरुषाः महान्तः भवन्ति ।
अपने लिए शुभ कार्य करो ।	आत्मने शुभानि कार्याणि कुरुत ।
राजाओं के नौकरों ने देश की रक्षा की ।	राज्ञां भृत्याः देशम् अरक्षन् ।
गुणियों का सर्वत्र मान होता है ।	गुणिनां सर्वत्र सम्मानः भवति ।
फल वाले वृक्ष परोपकार करते हैं ।	फलवन्तः वृक्षाः परान् उपकुर्वन्ति ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. हवा से (मरुत्) सब जीव जीते हैं ।
   2. मित्र के (सुहृद्) वचन से कल्याण होता है ।
   3. जाओ, जाते हुए पशु के लिए घास लाओ ।
   4. ईश्वर तुम्हारा मंगल (कल्याणम्) करे ।
   5. बोलते हुए बालकों का भाषण सुनो ।
2. निम्नलिखित शब्दों के रूप लिखिए—
   (क) गच्छत्, धनवत्, महत्, राजन्, धनिन् के रूप लिखिए ।
   (ख) कृ धातु के भूतकाल में रूप लिखिए ।
3. रिक्त स्थानों को दिए गये शब्दों की सहायता से पूर्ण करिए :
   .... बालकाः तुष्यन्ति । .... नरः श्रेष्ठः अस्ति । .... महिलासु सीता श्रेष्ठा । .... नराः सुखम् अनुभवन्ति ।
   सहायक शब्द—सुहृद्, गुणवत्, पतिव्रता, गुणिन् ।

हलन्त शब्द, स्वादिगण

चन्द्रमस्=चन्द्रमा, पुँल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	,,	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः
पंचमी	चन्द्रमसः	,,	,,
षष्ठी	,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमःसु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः !	हे चन्द्रमसौ !	हे चन्द्रमसः !

विद्वस्=विद्वान्, पुँल्लिग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	,,	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

स्वादिगण

इस गण का विकरण 'नु' है।

शक्=समर्थ होना, शक्+नु+ति=शक्नोति (सकता है)

वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशुक्नुम

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातु के रूप होंगे ।

आप्=प्राप्त करना, आप्+नु+ति=आप्नोति=प्राप्त करता है ।

लट् – आप्नोति, लृट् – आप्स्यति, लङ् – आप्नोत्, लोट् – आप्नोतु, विधिलिङ् -- आप्नुयात् ।

श्रु=सुनना – (यह धातु भ्वादिगण की है किन्तु इसके रूप स्वादिगण के समान होते हैं, इसलिए यहाँ दी जाती है ।) यह प्रयोग में अधिक आती है, अतः इसके पूरे रूप कण्ठस्थ कर लें ।

वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः, शृण्वः	शृणुमः, शृण्मः

भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृणवम्	अशृणुव, अशृण्व	अशृणुव, अशृण्म

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

आदर्श अनुवाद

राजा ने गुणी के लिए धन दिया ।	राजा गुणिने धनम् अयच्छत् ।
बुद्धिमान् सब काम कर सकते हैं ।	बुद्धिमन्तः सर्वाणि कार्याणि साधयितुं शक्नुवन्ति ।
हम आपकी कृपा से यह काम कर सके ।	वयं भवतः कृपया एतत् कार्यं कुर्तुम् अशक्नुम ।
मोहन ने गाँधी जी का भाषण सुना ।	मोहनः गाँधि-महोदस्य भाषणम् अशृणोत् ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. परिश्रमी बालक विद्या को पढ़ सकते हैं ।
   2. सम्राट् की आज्ञा का पालन करो ।
   3. चन्द्रमा में शीतलता होती है ।
   4. विद्वानों का संग करो ।
   5. इससे तुम सफलता प्राप्त कर सकोगे ।
   6. मित्र ! मेरी बात सुनो, फिर अपनी कथा सुनाओ ।
2. चन्द्रमस् और विद्वस् के पूरे रूप लिखिए ।
3. शक् धातु के पाँचों लकारों में रूप लिखिए ।

हलन्त शब्द

वाच् = वाणि, स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, सम्बोधन	वाक्, वाग्	वाचौ	वाच
द्वितीया	वाचम्	,,	वाच
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	,,	वाग्भ्यः
पंचमी	वाचः	,,	,,
षष्ठी	,,	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	,,	वाक्षु

इसी प्रकार—त्वच्=चमड़ी शब्द के रूप होंगे ।

मनस्=मन, नपुँसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, सम्बोधन	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
चतुर्थी	मनसे	,,	मनोभ्यः
पंचमी	मनसः	,,	,,
षष्ठी	,,	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	,,	मनस्सु, मनःसु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप होंगे—

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सरस्=तालाब	—	सरः	सरसी	सरांसि
चेतस्=मन	—	चेतः	चेतसी	चेतांसि
शिरस्=सिर	—	शिरः	शिरसी	शिरांसि

यशस्=यश	—	यशः	यशसी	यशांसि
वचस्=वचन	—	वचः	वचसी	वचांसि
पयस्=दूध, पानी	—	पयः	पयसी	पयांसि
तेजस्=तेज	—	तेजः	तेजसी	तेजांसि
तमस्=अँधेरा	—	तमः	तमसी	तमांसि
नभस्=आकाश	—	नभः	नभसी	नभांसि
स्रोतस्=झरना	—	स्रोतः	स्रोतसी	स्रोतांसि

कर्मन्=कर्म, नपुँसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, सम्बोधन	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः
चतुर्थी	कर्मणे	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
पंचमी	कर्मणः	,,	,,
षष्ठी	,,	कर्मणोः	कर्मणाम्
सप्तमी	कर्मणि	,,	कर्मसु

इसी प्रकार—जन्मन्=जन्म, ब्रह्मन्=ब्रह्म, चर्मन्=चमड़ा।

नामन्=नाम, नपुँसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, सम्बोधन	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	,,	नामभ्यः
पंचमी	नाम्नः	,,	,,
षष्ठी	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
सप्तमी	नाम्नि, नामनि	,,	नामसु

जगत्=संसार, नपुँसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, सम्बोधन	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप मरुत् के समान होंगे ।

महत् — प्र० सं०	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप मरुत् के समान् होंगे ।

आदर्श अनुवाद

वाणी से मधुर वचन बोलो ।	वाचा मधुराणि वचांसि वदत ।
मेरे मन में अपार विचार हैं ।	मम मनसि बहवः विचाराः सन्ति ।
तालाबों में कमल खिलते हैं ।	सरःसु कमलानि विकसन्ति ।
सूर्य के प्रकाश से अँधेरा नष्ट होता है ।	सूर्यस्य प्रकाशेन तमः नश्यति ।
सिर पर काले बाल अच्छे लगते हैं ।	शिरसि कृष्णाः केशाः शोभन्ते ।
हे मनुष्य ! काम के करने में तेरा अधिकार है ।	हे मानव ! कर्मणः करणे तव अधिकारः अस्ति ।

अभ्यास

1. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. मधुर वचनों से सब वश में हो जाते हैं ।
   2. अच्छे कर्मों से मनुष्य सुख पाता है ।
   3. यश के लिए कामना करो ।
   4. दूध (पयः) शक्ति प्रदान करता है ।
   5. जगत् में जिसका नाम है वही पुण्यात्मा पुरुष है ।
2. वचस्, तेजस्, जन्मन् और जगत् शब्दों के सभी विभक्तियों में रूप बताइए ।
3. निम्नलिखित विभक्ति सहित शब्दों के अर्थ बताइए—
   वाचाम्, मनसि, यशसा, तमसाम्, कर्मणः, नाम्ने, महान्ति ।

पञ्चम अध्याय

प्रथम परिच्छेद

व्यंजन सन्धि

व्यञ्जन— क् से ह् तक के वर्णों को 'व्यञ्जन' कहते हैं ।

व्यञ्जन सन्धि—व्यञ्जनों का व्यञ्जनों के साथ या स्वरों के साथ मेल होना 'व्यञ्जन-सन्धि' कहलाता है ।

1. **वर्ग के प्रथम अक्षरों को तीसरा**—स्वर परे रहते या वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण और य र ल व ह परे रहते क् च् ट् त् प् को क्रमशः ग् ज् ड् द् ब् हो जाते हैं । उदाहरण—
   जगत्+ईशः=जगदीशः; महत्+दुःखम्=महद्दुःखम् ।
2. **पहले को पाँचवाँ**—क् ट् त् प् को ङ् ण् न् म् परे रहते ङ् ण् न् म् भी हो जाते हैं । (ऊपर के एक नियम से ग् ज् ड् ब् तो होते ही है) उदाहरण—
   जगत्+नाथः=जगन्नाथः, जगद्नाथः ।
3. **त् को च्, ट्, ल्**—त् से परे च, छ, ट, ल हों तो क्रम से त् को भी च् ट् ल् हो जाते हैं । उदाहरण—
   तत्+चक्रम्=तच्चक्रम् । तत्+छत्रम्=तच्छत्रम् ।
   उत्+लेखः=उल्लेखः । तत्+लेखः=तल्लेखः ।
4. **म् को अनुस्वार**—पदान्त म् को व्यञ्जन परे रहते अनुस्वार होता है । उदाहरण—
   रामम्+नमामि=रामं नमामि, अहम्+गच्छामि=अहं गच्छामि ।
   अन्य उदाहरण—वयं गच्छमः । हरिं वन्दे । त्वं गच्छसि । शीघ्रं गच्छ । रामः रावणं हन्ति ।
5. **न् को श्**—पदान्त न् से परे च् छ हों तो न् को श् होता है और

पूर्व अक्षर पर अनुस्वार या अनुनासिक हो जाता है । उदाहरण—
कस्मिन्+चित्=कस्मिंश्चित्, तस्मिंश्चन्द्रे ।

6. **न् को ण्**—यदि एक ही पद में न् से पूर्व ऋ र् ष् हों तो न् को ण् हो जाता है ।

ऋ र् ष् और न् के बीच स्वर, कवर्ग, पवर्ग और ह य व आ भी जाएँ तब भी न् को ण् हो जाता है ।

विस्तीर्+नम्=विस्तीर्णम् । रामा+नाम्=रामाणाम् ।

अन्य उदाहरण— रामेण, नराणाम्, ऋषीणाम्, तृष्+ना=तृष्णा । पितृणाम्।

अपवाद—पदान्त के न् को ण् नहीं होता । जैसे—रामान्, नरान्, ऋषीन्, पितृन् इत्यादि ।

7. **स् को ष्**—एक ही पद में यदि स् से पूर्व अ आ को छोड़कर कोई भी स्वर हो तो स् को ष् हो जाता है । उदाहरण—
नरे+सु=नरेषु । ऋषि+सु=ऋषिषु । गौरीषु । पठि+स्यति=पठिष्यति ।

अन्य उदाहरण—साधुषु, भानुषु, रामेषु, देवेषु, पितृषु, गोषु, भविष्यति, हसिष्यति, क्रीडिष्यति ।

8. **र् का लोप और दीर्घ**—यदि र् से परे र हो तो पहले र् का लोप हो जाता है तथा ह्रस्व स्वर हो तो उसे दीर्घ भी हो जाता है । उदाहरण— निर्+रसः=नीरसः । निर्+रोग=नीरोगः ।

9. **त् को च् और श् को छ्**—यदि त् से परे श् हो तो त् को च् हो जाता है और श् को विकल्प से छ् होता है । उदाहरण—
तत्+श्रुत्वा=तच्छ्रुत्वा, तच्श्रुत्वा ।
एतत्+श्रूयते=एतच्छ्रूयते । एतच्श्रूयते ।

10. **न् को द्वित्व**—यदि ह्रस्व स्वर के बाद पदान्त न् हो और आगे कोई स्वर हो तो न् को द्वित्व हो जाता है । जैसे—

कस्मिन्+इति=कस्मिन्निति ।
तस्मिन्+अयम्=तस्मिन्नयम् ।

धावन्+अश्वः=धावन्नश्वः ।

गच्छन्+अजः=गच्छन्नजः ।

कुर्वन्+आस्ते=कुर्वन्नास्ते ।

11. त् को ज्—हल् त् से परे ज् हो तो त् को ज् हो जाता है। जैसे—

महत्+जलम्=महज्जलम् ।

जगत्+जीवति=जगज्जीवति ।

विपत्+जालम्=विपज्जालम् ।

भक्त्+जीवनम्=भवज्जीवनम् ।

आदर्श अनुवाद

पिता ने पुत्री का वाग्दान किया ।	पिता पुत्र्याः वाग्दानम् अकरोत् ।
यह सुनकर सब प्रसन्न हुए ।	एतच्छुत्वा सर्वे अतुष्यन् ।
यह फल रसहीन है ।	इदं फलं नीरसम् अस्ति ।

अभ्यास

1. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—

   1. संसार के स्वामी को जगन्नाथ कहते हैं ।
   2. झूठ से लोग नष्ट होंगे ।
   3. यह सुनकर राम चल दिया ।
   4. पेड़ की छाया सबके लिए समान होती है ।
   5. मेरे कहने से (कथनेन) आपने बड़ा काम किया ।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धिच्छेद करिए—

   जगन्नाथः, तदनन्तरम्, तल्लेख, महद्दुःखम्, नीरसः, रामं नमामि, कस्मिंश्चित्, रामाणाम्, चतुर्षु, तच्छुत्वा, जगज्जालम्, यावज्जीवनम् ।

3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करिए—

   दिक्+गजः । गोविन्दम्+भज । कस्मिन्+चित् । नरा+नाम्
   जगत्+ईशः । गौरी+सु । महत्+जगत् । विपत्+जालम् ।

द्वितीय परिच्छेद

विसर्ग-सन्धि

विसर्ग—संस्कृत में स्वरों के आगे लगने वाले (:) दो बिन्दुओं को 'विसर्ग' कहते हैं। स्वर या व्यंजन परे रहते इस विसर्ग में कई परिवर्तन होते हैं, इसे 'विसर्ग सन्धि' कहते हैं।

1. **विसर्ग को श् ष् स्**—यदि विसर्ग से परे च छ हो तो विसर्ग को श्; ट ठ परे हों तो ष् और त थ परे हों तो स् हो जाता है।

विसर्ग को श्—पूर्णः+चन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः, रामश्चलति।

विसर्ग को स्—हरिः+तरति=हरिस्तरति, नद्यास्तीरम्।

2. **विसर्ग को विकल्प से श् स्**—यदि विसर्ग से परे श् स् हों तो विसर्ग को विकल्प से श् स् हो जाते हैं। जैसे—

   हरिः+शेते=हरिश्शेते, हरिःशेते।

   शम्भुः+शोचति=शम्भुश्शोचति, शम्भुःशोचति।

   सर्पः+सर्पति=सर्पस्सर्पति, सर्पः सर्पति।

   प्रथमः+सर्गः=प्रथमस्सर्गः, प्रथमः सर्गः।

3. **विसर्ग को र्**—यदि विसर्ग से पूर्व अ आ को छोड़ कर कोई स्वर हो और आगे कोई स्वर या वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें और य, र, व, ह वर्ण हों तो विसर्ग को र् हो जाता है।

   कविः+अहम्=कविरहम्। साधुः+अयम्=साधुरयम्।

   निः+धनः=निर्धनः। शिशुः+गच्छति=शिशुर्गच्छति।

4. **विसर्ग को उ—**

   (क) यदि विसर्ग से पूर्व ह्रस्व अ हो और आगे भी ह्रस्व अ हो तो विसर्ग को उ (ओ) हो जाता है और अ का पूर्व रूप हो जाता है।

   नरः+अयम्=नरोऽयम्। बालः+अस्ति=बालोऽस्ति।

अन्य उदाहरण—बालोऽयम्, गोपालोऽपश्यत्, सोऽवदत् ।

(ख) यदि विसर्ग से पूर्व ह्रस्व अ हो और आगे वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें, य र ल व, ह वर्ण हों तो विसर्ग को उ (ओ) हो जाता है ।

बालः+गच्छति=बालो गच्छति । नरः+वदति=नरो वदति ।

मनः+हरः=मनोहरः । सर्पः+दशति=सर्पो दशति ।

5. **विसर्ग का लोप**—

(क) विसर्ग से पूर्व आ हो और आगे कोई स्वर या वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें य र ल व ह वर्ण हों तो विसर्ग का लोप हो जाता है ।

नराः+आगच्छन्ति=नरा आगच्छन्ति । जनाः+एते=जना एते ।

बालाः+वदन्ति=बाला वदन्ति ।

छात्राः+गच्छन्ति=छात्रा गच्छन्ति ।

(ख) यदि विसर्ग से पूर्व अ हो और आगे ह्रस्व अ को छोड़ कर कोई भी स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है ।

नरः+आगच्छति=नर आगच्छति ।

कृष्णः+आसीत्=कृष्ण आसीत् । सूर्यः+उदेति=सूर्य उदेति ।

6. **सः और एषः के विसर्ग का लोप**—सः और एषः के परे ह्रस्व अ को छोड़कर कोई स्वर या व्यञ्जन हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है ।

सः+पठति=स पठति, स चलति, एष गोपालः ।

7. **विसर्ग को ष्**—निः दुः आदि उपसर्गों के विसर्ग को ष् हो जाता है, क ख प फ परे रहते । निः+फलम्=निष्फलम् । दुः+कृतम् =दुष्कृतम् ।

आदर्श अनुवाद

अध्यापक बोलता है ।	अध्यापको वदति ।
बालक सुनते हैं ।	बालकाश्शृण्वन्ति ।

गंगा नदी के किनारे एक आश्रम था ।	गङ्गानद्यास्तटे आश्रम आसीत् ।
वह कहाँ से आया ।	सः कुत आगच्छत् ।
मोहन ने देखा ।	मोहनोऽपश्यत् ।

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. सूर्य उदय होता है ।
   2. आजकल मनुष्य धर्म से हीन हैं ।
   3. गुरु की आज्ञा से अर्जुन ने बाण छोड़ा ।
   4. मोहन ने चोर को देखा ।
2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धिच्छेद करिए—
   गुरोरादेशान्, आचार्या वदन्ति, मोहनश्चौरः, सर्पो दर्शाति, मनोहरम्, दृश्यमिदम्, रामोऽपश्यत्, विष्णुश्शेते ।
3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करिए—
   रवेः+उदयः । जनाः+गच्छन्ति । सरः+वरः । बालः+तरति ।
   एषः+चलति । बालः+चञ्चलः । सः+वीरः+अस्ति ।
   शत्रुः+जयति । छात्रः+सरति । हरिः+शेते ।

तृतीय परिच्छेद

क्त्वा (त्वा) प्रत्यय

क्त्वा—जब एक काम करके दूसरा काम किया जाता है तो पहली क्रिया अपूर्ण होती है, उसका अर्थ 'करके' होता है; जैसे—राम भोजन खाकर गया—यहाँ 'खाकर' अपूर्ण क्रिया है । ऐसी अपूर्ण क्रियाओं को बनाने के लिए धातु के साथ क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगता है । सेट् धातुओं के साथ इ भी लग जाती है; जैसे—खाकर=खादित्वा । हँसकर=हसित्वा । नीचे कुछ धातुओं

के साथ त्वा लगाकर लिखा जाता है—

इकार युक्त त्वा	इकार रहित त्वा
पठ्+त्वा=पठित्वा=पढ़कर	गम्+त्वा=गत्वा=जाकर
सेव्+त्वा=सेवित्वा=सेवा करके	स्मृ+त्वा=स्मृत्वा=स्मरण करके
वृध्+त्वा=वर्धित्वा=बढ़कर	पा+त्वा=पीत्वा=पीकर
याच्+त्वा=याचित्वा=माँग कर	जि+त्वा=जित्वा=जीतकर
वस्+त्वा=वषित्वा=रहकर	नी+त्वा=नीत्वा=ले जाकर
चुर्+त्वा=चोरयित्वा=चुराकर	दा+त्वा=दत्वा=देकर
इकार रहित त्वा	
पच्+त्वा=पक्त्वा=पकाकर	नम्+त्वा=नत्वा=नमस्कार करके
दृश्+त्वा=दृष्ट्वा=देखकर	स्था+त्वा=स्थित्वा=ठहरकर
लभ्+त्वा=लब्ध्वा=पाकर	कृ+त्वा=कृत्वा=करके
हन्+त्वा=हत्वा=मारकर	प्रच्छ्+त्वा=पृष्ट्वा=पूछकर
सिंच्+त्वा=सिक्त्वा=सींचकर	

क्त्वा को ल्यप् (य)

यदि किसी धातु से पूर्व कोई उपसर्ग लगा हो तो त्वा को ल्यप् (य) हो जाता है । उपसर्गयुक्त धातुओं के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

गम+त्वा=गत्वा—आ+गम्+त्वा (य)=आगम्य, आगत्य=आकर

आ+नी+य=आनीय=लाकर

प्र+नम्+य=प्रणम्य=प्रणाम करके ।

उत्+स्था+य=उत्थाय=उठकर ।

वि+जि+य=विजित्य=जीतकर ।

वि+स्मृ+य=विस्मत्य=भूलकर

परि+त्यज्+य=परित्यज्य=छोड़कर ।

परा+जि+य=पराजित्य=हार कर ।

प्र+विश्+य=प्रविश्य=घुस कर ।

आदर्श अनुवाद

छात्र पढ़कर विद्वान् बनेंगे ।	छात्राः पठित्वा विद्वांसः भविष्यन्ति ।
राजीव गाँधी ने सोचकर कहा ।	राजीव गाँधी विचिन्त्य अकथयत् ।
भिखारी माँग कर चला गया ।	भिक्षुकः याचित्वा अगच्छत् ।
मैं देवता को प्रणाम करके बैठा ।	अहं देवं प्रणम्य उपविष्टः ।
भारत ने पाकिस्तान को जीतकर यश पाया ।	भारतं पाकिस्तानं विजित्य यशः प्राप्नोत् ।
तुम सवेरे उठकर पढ़ा करो ।	यूयं प्रातः उत्थाय पठत ।

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. प्रातःकाल उठकर ईश्वर का स्मरण करो ।
   2. बच्चे खेल देखकर चले गये ।
   3. चोर धन चुरा कर भाग गया ।
   4. धन पाकर गर्व मत करो ।
2. निम्नलिखित शब्दों में त्वा लगाकर रूप बताइए—
   स्था, पच्, हन्, याच्, चुर् ।
3. उपसर्गयुक्त धातुओं के त्वा को य लगाकर रूप बताइए—
   आ+दा, प्र+आप्, उत्+स्था, आ+गम्, विं+जि ।

तुमुन् (तुम्) प्रत्यय

तुमुन् प्रत्यय जिस धातु के साथ लगता है उसका अर्थ 'के लिए' कर देता है। तुमुन् के 'उन्' का लोप हो जाता है। सेट् धातुओं के साथ इ भी लगता है। कुछ उदाहरण देखिए—

इ सहित

पठ्+तुम्=पठितुम्=पढ़ने के लिए
हस्+तुम् हसितुम्=हँसने के लिए
नृत्+नर्तितुम्=नाचने के लिए
सेव्—सेवितुम्=सेवा करने के लिए
चुर्+अय+इ+तुम्=चोरयितुंम्
=चुराने के लिए
कथ्—कथयितुम्=कहने के लिए

इ रहित

पच्—पक्तुम्=पकाने के लिएं
वच्—वक्तुम्=कहने के लिए
लभ्—लब्धुम्=पाने के लिए
त्यज्—त्यक्तुम्=छोड़ने के लिए
श्रु—श्रोतुम्=सुनने के लिए
आप्+तुम्=आप्तुम्=पाने के लिए
वसु—वस्तुम्=रहने के लिए
स्मृ—स्मर्तुम=स्मरण करने के लिए

इ रहित

प्रच्छ्—प्रष्टुम्=पूछने के लिए
स्था—स्थातुम्=ठहरने के लिए
पा—पातुम्=पीने के लिए
दा—दातुम्=देने के लिए
जि—जेतुम्=जीतने के लिए

कृ+तुम्=कर्तुम्=करने के लिए
ह+तुम=हर्तुम्=हरने के लिए
दृश्+द्रष्टुम्=देखने के लिए
नी—नेतुम्=ले जाने के लिए

आदर्श अनुवाद

छात्र पढ़ने के लिए विद्यालय जाते हैं।	छात्राः पठितुं विद्यालयं गच्छन्ति।
नर्तकी नाचने के लिए स्टेज पर जाती है।	नर्तकी नर्तितुं रंगमंचे आगच्छति।

चोर चुराने के लिए गया ।	चौरः चोरयितुम् अचलत् ।
लोग कथा सुनने के लिए जाते हैं ।	नराः कथां श्रोतुं गच्छन्ति ।
तुम काम करने कहाँ जाते हो ?	यूयं कार्यं कर्तुं कुत्र गच्छथ ?

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. लोग काम करने के लिए कारखानों में (यन्त्रालयेषु) जाते हैं ।
   2. सेठ दान के लिए घर से बाहर जाते हैं ।
   3. मित्र ! मुझे पीने के लिए पानी दो ।
   4. शिष्य गुरु की सेवा करने के लिए जाते हैं ।
   5. मैं सिनेमा (चलचित्रम्) देखने के लिए जाऊँगा ।
   6. तुम शत्रुओं को जीतने के लिए जाओ ।
2. निम्नलिखित धातुओं के साथ 'तुम्' लगाइए—

   गम्, चिन्त्, सेव्, लभ्, नृत् ।
3. निम्नलिखित तुमुन्नन्तों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयुक्त करिए—

   वर्धितुम्, वस्तुम्, प्रष्टुम्, दातुम्, हसितुम् ।

पञ्चम परिच्छेद

कृत्प्रत्यय—शतृ, शानच्, क्त

धातुओं के साथ जो प्रत्यय लगकर उन्हें संज्ञा, विशेषण अथवा क्रिया बना देते हैं, ऐसे प्रत्ययों को कृत्प्रत्यय कहते हैं । यहाँ केवल तीन उपयोगी प्रत्ययों को ही देते हैं—1. शतृ, 2. शानच्, 3. क्त ।

शतृ—'करता हुआ' अर्थ को प्रकट करने के लिए परस्मैपदी धातुओं से शतृ प्रत्यय होता है । शतृ के श् और ऋ का लोप हो जाता है, केवल

'अत्' ही धातु के साथ जुड़ता है । जैसे—

पठ्+अत्=पठत्=पढ़ता हुआ

हस्+अत्+हसत्=हँसता हुआ

ऐसे ही—	गच्छत्=जाता हुआ	पतत्=गिरता हुआ
	रक्षत्=रक्षा करता हुआ	पचत्=पकाता हुआ
	वदत्=बोलता हुआ	चलत्=चलता हुआ
	पिबत्=पीता हुआ	पश्यत्=देखता हुआ
	जयत्=जीतता हुआ	नयत्=ले जाता हुआ
	स्मरत्=याद करता हुआ	कुर्वत्=करता हुआ
	लिखत्=लिखता हुआ	नृत्यत्=नाचता हुआ
	भक्षयत्=खाता हुआ	कथयत्=कहता हुआ

इत्यादि शब्द बन जाते हैं । इनके रूप हलन्त प्रकरण में दिये हैं ।

शानच्—'करता हुआ' अर्थ को प्रकट करने के लिए आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय होता है । शानच् के श् और च् का लोप हो जाता है और श् के स्थान पर म् लग जाता है; जैसे—

लभ्+मान=लभमानः=प्राप्त करता हुआ ।

सेव्+मान=सेवमानः=सेवा करता हुआ ।

वृध्+मान=वर्धमानः=बढ़ता हुआ ।

मोद्+मान=मोदमानः=प्रसन्न होता हुआ ।

यत्+मान=यतमानः=यत्न करता हुआ ।

शुभ्+मान=शोभमानः=सुशोभित होता हुआ ।

इत्यादि शब्द बनेंगे । इनके रूप नर के समान होंगे ।

इसी प्रकार—सह्, शिक्ष्, रुच्, वन्द्, भिक्ष् आदि धातुओं के साथ भी शानच् प्रत्यय का प्रयोग होता है ।

क्त—भूतकाल की क्रिया का बोध कराने के लिए क्त प्रत्यय होता है । क्त के क् का लोप हो जाता है । त ही धातुओं के साथ जुड़ता

है । **उदाहरण**–

भू+त=भूत=हुआ, हो गया ।

इसी प्रकार–जित=जीता, कृत=किया, स्मृत=स्मरण किया, मृत=मरा, श्रुत=सुना, गत=गया, पीत=पिया, स्थित=ठहरा, दत्त=दिया, सुप्त=सोया आदि शब्द बनते हैं ।

विशेष–कई धातुओं के साथ त से पूर्व इ भी लगती है । जैसे–पठति=पढ़ता, चोरित=चुराया, पतित=गिरा, सेवित=सेवा की, हसित=हँसा, कथित=कहा इत्यादि शब्द बनते हैं ।

क्त के प्रयोग में प्रायः कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त होता है; जैसे–रामेण पाठः पठितः । किन्तु अकर्मक धातुओं से–तेन हसितम् आदि क्रियाएँ, प्रथमान्त, नपुँसकलिंग और एकवचन ही होंगी ।

आदर्श अनुवाद

जाता हुआ छात्र गिर पड़ा ।	गच्छन् छात्रः अपतत् ।
लोग हँसते हुए बातें करते हैं ।	नराः हसन्तः वार्ताः कुर्वन्ति ।
सेवा करता हुआ शिष्य विद्या पाता है ।	सेवमानः शिष्यः विद्यां लभते ।
बढ़ते हुए वृक्ष सुशोभित होते हैं ।	वर्धमानाः वृक्षाः शोभन्ते ।
राम ने रावण को जीता ।	रामेण रावणः जितः ।
वह हँसा और चला गया ।	तेन हसितं गतं च ।

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करिए—
    1. पढ़ते हुए विद्यार्थी अवश्य उत्तीर्ण होते हैं ।
    2. रक्षा करते हुए सिपाही आगे बढ़ते हैं ।
    3. मैं तुम्हें याद करता हुआ प्रसन्न होता हूँ ।
    4. तुम नाचते हुए गाते हो ।
    5. लोग कष्टों को सहते हुए संसार में जीते हैं ।

6. बाग़ में फूल सुशोभित होते हुए मन को हरते हैं ।

7. शत्रु सो गये और सेना ने आक्रमण कर दिया ।

2. निम्नलिखित धातुओं के साथ शतृ प्रत्यय लगाइए—

गम्, पठ्, पत्, चुर्, नृत्, कृ ।

3. निम्नलिखित धातुओं के साथ शानच् प्रत्यय लगाइए—

सेव्, रुच्, वन्द्, मुद्, वृध् ।

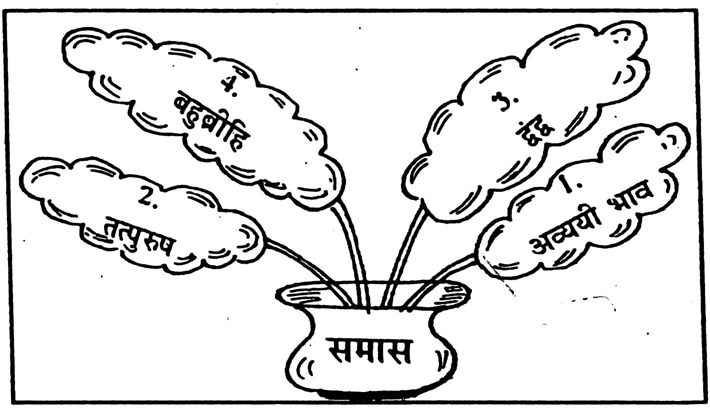
4. निम्नलिखित धातुओं के साथ क्त प्रत्यय लगाइए—

गम्, चुर्, भृ, मृ, कृ, पा, स्था, दा, पत्, जि ।

षष्ठ परिच्छेद

समास-प्रकरण

समास—दो या दो से अधिक शब्दों के बीच की विभक्ति का लोप करके एक बन जाने को 'समास' कहते हैं; जैसे—रामः च लक्ष्मणः च= रामलक्ष्मणौ ।



मुख्य समास चार हैं – 1. द्वन्द्व, 2. तत्पुरुष, 3. बहुव्रीहि और 4. अव्ययीभाव ।

1. **द्वन्द्व** — इस समास में सभी शब्द प्रधान होकर रहते हैं । इस समास में प्रायः 'च' का प्रयोग होता है ।

रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च=राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्नाः । धर्मश्च अर्थश्च=धर्मार्थौ । माता च पिता च=माता-पितरौ । कन्दं च मूलं च फलं च इति=कन्दमूलफलानि ।

2. **तत्पुरुष** — इस समास में उत्तर पद प्रधान होता है; जैसे—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः—इनमें 'पुरुष' शब्द प्रधान है ।

नोट—समस्त पद में उत्तरपद का ही लिंग होता है । तत्पुरुष समास द्वितीया विभक्ति से सप्तमी तक शब्दों के साथ होता है । पहले शब्द की विभक्तियों का लोप हो जाता है; जैसे—

शरणम् आगतः = शरणागतः । नरकं पतितः = नरकपतितः । सुखेन युक्तः = सुखयुक्तः । विद्यया हीनः = विद्याहीनः । धनाय लोभः = धनलोभः । यज्ञाय काष्ठम् = यज्ञकाष्ठम् । चौराद् भयम् = चौर-भयम् । वृक्षात् पतितः = वृक्षपतितः । देवस्य पूजा = देवपूजा । पुष्पाणां गन्धः = पुष्पगन्धः । कार्ये चतुरः = कार्यचतुरः । जले मग्नः = जलमग्नः ।

तत्पुरुष के दो भेद और भी हैं—कर्मधारय और द्विगु ।

कर्मधारय—जहाँ विशेषण और विशेष्य का अथवा उपमान और उपमेय का समास हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे—

कृष्णश्चासौ सर्पः = कृष्णसर्पः, कृष्णाश्वः । सुन्दरश्चासौ पुरुषः = सुन्दरपुरुषः ।

इसी प्रकार—चन्दर्ः इव सुन्दरः = चन्द्रसुन्दरः । पुरुषः सिंहः इव = पुरुषसिंहः ।

द्विगु—समाहार अर्थ में पहला शब्द संख्यावाची हो तो वह द्विगु कहलाता है; जैसे—

त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम् ।

पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम् ।

3. **बहुव्रीहि** — जिस समास में समस्त शब्दों से भिन्न कोई अन्य पदार्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे—

पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (कृष्ण) ।

इस समास में 'यस्य, यस्मिन्, यस्मै, येन, यस्मात्' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे—

महान् आत्मा यस्य सः = महात्मा, दश आननानि यस्य सः = दशाननः (रावण)

4. **अव्ययीभाव** — जब अव्यय या उपसर्ग के साथ संज्ञा शब्द का समास हो तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं । इसमें प्रायः पूर्व पद ही प्रधान होता है । समास हो जाने पर समस्त शब्द 'अव्यय' संज्ञक नपुंसकलिंग-सा बन जाता है । इसमें विग्रह कुछ और होता है और समास किसी और शब्द के साथ होता हैं; जैसे—

शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति । दिनम्-दिनम् इति = प्रतिदिनम् । कूलस्य समीपम् = उपकूलम् । रूपस्य योग्यम् = अनुरूपम् । एकम् एकम् प्रति = प्रत्येकम् ।

आदर्श अनुवाद

माता-पिता पुत्र की रक्षा करते हैं ।	मातापितरौ पुत्रं रक्षतः ।
युधिष्ठिर अर्जुन भीम नकुल और सहदेव भाई थे ।	युधिष्ठिरार्जुन-भीम-नकुल-सहदेवाः भ्रातर आसन् ।
विद्या से हीन का सम्मान नहीं होता ।	विद्याहीनस्य सम्मानो न भवति ।
राजा के नौकर नगर को जाते हैं ।	राजपुरुषा नगरं गच्छन्ति ।
सखि ! पीले वस्त्र वाला कृष्ण कहाँ है ?	सखि ! पीताम्बरः कृष्णः कुत्रास्ति ?
मनुष्य शक्ति के अनुसार कार्य करें ।	मनुष्याः यथाशक्ति कार्यं कुर्वन्तु ।
प्रत्येक घर में गौ होनी चाहिए ।	प्रतिगृहं गावः भवितव्याः ।

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. राम लक्ष्मण वन को गये ।
   2. राधा और कृष्ण को लोग नमस्कार करते हैं ।
   3. सुख और दुःख चक्रवत् आते हैं ।
   4. दशरथ के चार पुत्र थे—राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न ।
   5. राम का नौकर भोजन लाता है ।
   6. इन्द्रियों को जीतने वाले को (विजेतृ) जितेन्द्रिय कहते हैं ।
   7. काश्मीर तक भारत की सीमा है ।
   8. प्रतिदिन विद्या पढ़ो ।
2. निम्नलिखित शब्दों में विग्रह करिए—

   रामलक्ष्मणौ, सुखदुःखौ, प्रतिदिनम्, मोहनभृत्यः, यथाशक्ति, गोहितम्, कृष्णसर्पः ।
3. निम्नलिखित शब्दों में समास करिए—

   भरत और शत्रुघ्न, चन्द्रमा के समान मुख वाला, महान् आत्मा वाला, दिन-दिन (प्रतिदिनम्), शक्ति के अनुसार ।

सप्तम् परिच्छेद

पूरणार्थक संख्यावचक शब्द

पूरणार्थक शब्द—वे होते हैं जिनसे केवल एक निर्दिष्ट व्यक्ति का ही ज्ञान हो; जैसे— पहला—प्रथमः, दूसरा—द्वितीयः ।

शब्द	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुँसकलिंग
पहला	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
दूसरा	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
तीसरा	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्

चौथा	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पाँचवाँ	पंचमः	पंचमी	पंचमम्
छठा	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सातवाँ	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
आठवाँ	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नौवाँ	नवमः	नवमी	नवमम्
दसवाँ	दशमः	दशमी	दशमम्
ग्यारहवाँ	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
बारहवाँ	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
तेरहवाँ	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
चौदहवाँ	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
पन्द्रहवाँ	पंचदशः	पंचदशी	पंचदशम्
सोलहवाँ	षोडशः	षोडशी	षोडशम्
सत्रहवाँ	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
अठारहवाँ	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
उन्नीसवाँ	एकोनविंशः	एकोनविंशा	एकोनविंशम्
बीसवाँ	विंशः	विंशा	विंशम्
इक्कीसवाँ	एकविंशः	एकविंशा	एकविंशम्
	(एकविंशतितमः)	(एकविंशतितमा)	(एकविंशतितमम्)

इसी प्रकार मूल गणनावाचक संख्या शब्द के साथ 'तम' लगाने से पूरणार्थक संख्या बन जाती है। इनके लिंग—पुँल्लिंग तमः, स्त्रीलिंग तमा और नपुँसकलिंग तमम् होंगे। इनके रूप पुँल्लिंग में नर के समान, स्त्रीलिंग में आकारान्त लता और ईकारान्त नदी की तरह एवं नपुँसकलिंग में 'फल' के समान रूप होंगे।

पूरणार्थक शब्दों का विशेषण के रूप में अध्ययन

पुँल्लिग	नपुँसकलिंक
पहला छात्र = प्रथमः छात्रः	तीसरा फूल = तृतीयं पुष्पम्
दूसरे छात्र को = द्वितीयं छात्रम्	सातवें वर्ष में = सप्तमे वर्षे

चौथे बालक के लिए = चतुर्थाय बालाय

पन्द्रहवे घर में = पंचदशे गृहे

स्त्रीलिंग

पहली कन्या के लिए = प्रथमायै कन्यायै

तीसरी स्त्री का = तृतीयायाः नार्याः

चौथी श्रेणी में = चतुर्थ्याम् श्रेण्याम्

पच्चीसवीं लता के लिए = पंचविंशायै लतायै

आदर्श अनुवाद

दूसरी लड़की चतुर है । — द्वितीया छात्रा चतुरा अस्ति ।

पहले बालक को इनाम दो । — प्रथमाय बालाय पारितोषिकं यच्छ ।

मित्र ! चौथा फूल सूंघो । — मित्र ! चतुर्थं पुष्पं जिघ्र ।

हम 21वीं तारीख़ को जायेंगे । — वयं एकविंशायां तिथौ गमिष्यामः ।

दसवीं और ग्यारहवीं श्रेणी का मैच है । — दशम्याः एकादश्याः श्रेण्याश्च प्रतियोगिता अस्ति ।

अभ्यास

1. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. तीसरी पंक्ति का चौथा छात्र मूर्ख है ।
   2. आठवीं श्रेणी के नौ छात्र पढ़ने में चतुर हैं ।
   3. अगस्त मास की 15वीं तिथि को भारत स्वतन्त्र हुआ था ।
   4. इक्कीसवें मकान में 25 पुरुष रहते हैं ।
2. निम्नलिखित संख्याओं की संस्कृत बनाइए—
   दूसरा, पाँचवीं, चौदहवें को, बीसवीं के लिए ।
3. निम्नलिखित संस्कृत शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करिए—
   पंचमः, सप्तमी, एकादशम्, पंचदश्याम्, एकोनचत्वारिंशत्तमस्य ।

अष्टम् परिच्छेद

णिजन्त प्रकरण (प्रेरणार्थक)

एक व्यक्ति कार्य करता है या कोई कार्य होता है — उस किए जाने वाले कार्य को या होने वाले कार्य को यदि कोई अन्य प्रेरणा देता है तो वह क्रिया प्रेरणार्थक (णिजन्त) कहलाती है। इसमें धातु के साथ चुरादिगण जैसा 'अय' प्रत्यय लगा देते हैं और उसके रूप चुरादिगण की ताड् (ताडयति) आदि धातु की तरह होते हैं। चुरादिगण की धातु के साथ दुबारा 'अय' नहीं लगता; जैसे—

(पठ्) पाठ्+अय+ति=पाठयति=पढ़ाता है।

गम्+अय+ति=गमयति=भेजता है।

कुछ अन्य उदाहरण—

स्मृ—स्मारयति=याद कराता है।	दृश्—दर्शयति=दिखाता है।
कृ—कारयति=कराता है।	सेव्—सेवयति=सेवा कराता है।
श्रु—श्रावयति=सुनाता है।	नश्—नाशयति=नष्ट करता है।
स्था—स्थापयति=रखता है।	पा—पाययति=पिलाता है।

पठ् के—पाँचों लकारों का पहला रूप देखें, और चोरयति के समान रूप चलायें।

लट्—पाठयति। लृट्—पाठयिष्यति। लङ्—अपाठयत्।

लोट्—पाठयतु। विधिलिङ्—पाठयेत्।

इसी तरह उक्त धातुओं के रूप भी प्रत्येक लकार में चलाने चाहिए।

आदर्श अनुवाद

बच्चा दूध पीता है।	शिशुः दुग्धं पिबति।
माता बच्चे को दूध पिलाती है।	माता शिशुं दुग्धं पाययति।
बच्चे माता-पिता को हँसाते हैं।	शिशवः मातापितरौ हासयन्ति।
पिता पुत्र को विद्यालय भेजेगा।	पिता पुत्रं विद्यालयं गमयिष्यति।
मैं तुम्हें पानी पिलाता हूँ।	अहं त्वां जलं पाययामि।

क्या तूने पाठ सुनाया ?	किं त्वं पाठम् अश्रावयः ?
राम ने रामेश्वर की स्थापना की ।	रामः रामेश्वरम् अस्थापयत् ।

अभ्यास

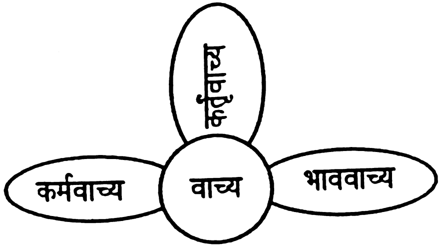
1. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करिए—
   1. मैं नौकर को भेजता हूँ ।
   2. यशोदा कृष्ण को दूध पिलाती है ।
   3. अध्यापक छात्रों को पाठ पढ़ाता है ।
   4. पण्डित लोगों को कथा सुनाता है ।
   5. विभीषण राम से रावण को मरवाता है ।
   6. गुरुजी पाठ पढ़ाओ ।
   7. माता मोहन को पाठ याद करायेगी ।
2. निम्नलिखित धातुओं के निर्दिष्ट कालों में णिजन्त रूप लिखिए—
   गम् (वर्तमान काल), हस् (भूतकाल), कृ (भविष्यत् काल), श्रु (वर्तमान काल) ।
3. निम्नलिखित क्रिया-शब्दों का प्रेरणार्थक अर्थ बताइए—
   पाययिष्यति, सेवयामः, नाशयन्तु, पाठयसि, अकारयत्, श्रावयन्तु ।

नवम् परिच्छेद

वाच्य-प्रकरण

वाच्य—क्रिया प्रकट करने के तरीके को 'वाच्य' कहते हैं । ये वाच्य तीन हैं—1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य ।

1. **कर्तृवाच्य**—जब कर्ता का क्रिया से सीधा सम्बन्ध होता है, वहाँ 'कर्तृवाच्य' होता है; जैसे—मोहन पढ़ता है=मोहनः पठति । अब तक पीछे जितने गणों की क्रियाएँ सिखाई गई हैं वे सब कर्तृ वाच्य थीं ।



2. **कर्मवाच्य**—जब क्रिया का कर्ता से सीधा सम्बन्ध न होकर कर्म से सीधा सम्बन्ध होता है वहाँ 'कर्मवाच्य' होता है। कर्मवाच्य में कर्म प्रथमा विभक्ति का और कर्ता तृतीया विभक्ति का हो जाता है; जैसे—

कर्तृवाच्य—राम पाठ पढ़ता है = रामः पाठं पठति ।

कर्मवाच्य—राम से पाठ पढ़ा जाता है = रामेण पाठः पठ्यते ।

3. **भाववाच्य**—अकर्मक धातु का अर्थ (भाव) ही जब प्रधान हो जाता है तो वहाँ 'भाववाच्य' होता है। जैसे—

कर्तृवाच्य—राम हँसता है = रामः हसति ।

भाववाच्य—राम से हँसा जाता है = रामेण हस्यते ।

(भाववाच्य केवल अकर्मक धातुओं से और प्रत्येक काल में केवल प्रथम पुरुष के एकवचन में ही एक रूप वाला होता है।)

ज्ञातव्य—किसी भी धातु से कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाते समय धातु के साथ 'य' लगाया जाता है और इसके रूप केवल आत्मनेपद में ही होते हैं। भविष्यत् काल में 'य' नहीं लगता परन्तु रूप आत्मनेपद में अवश्य होंगे ।

पठ् धातु के कर्मवाच्य में रूप

वर्तमानकाल (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
मध्यम पुरुष	पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
उत्तम पुरुष	पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

भविष्यत्काल (लृट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यते	पठिष्येते	पठिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	पठिष्यसे	पठिष्येथे	पठिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	पठिष्ये	पठिष्यावहे	पठिष्यामहे

भूतकाल (लङ्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठ्यत	अपठ्येताम्	अपठ्यन्त
मध्यम पुरुष	अपठ्यथाः	अपठ्येथाम्	अपठ्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अपठ्ये	अपठ्यावहि	अपठयामहि

आज्ञा (लोट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठ्यताम्	पठ्येताम्	पठ्यन्ताम्
मध्यम पुरुष	पठ्यस्व	पठ्येथाम्	पठ्यध्वम्
उत्तम पुरुष	पठ्यै	पठ्यावहै	पठ्यामहै

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठ्येत	पठ्येयाताम्	पठ्येरन्
मध्यम पुरुष	पठ्येथाः	पठ्येयाथाम्	पठ्येध्वम्
उत्तम पुरुष	पठ्येय	पठ्येवहि	पठ्येमहि

कुछ सकर्मक धातुओं के प्रत्येक लकार का पहला रूप

धातु	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
पच्	पच्यते	पक्ष्यते	अपच्यत	पच्यताम्	पच्येत
गम्	गम्यते	गस्यते	अगम्यत	गम्यताम्	गम्येत
दृश्	दृश्यते	द्रक्ष्यते	अदृश्यत	दृश्यताम्	दृश्येत
लिख्	लिख्यते	लेखिष्यते	अलिख्यत	लिख्यताम्	लिख्येत
पा	पीयते	पास्यते	अपीयत	पीयताम्	पीयेत
नी	नीयते	नेष्यते	अनीयत	नीयताम्	नीयेत

कृ	क्रियते	करिष्यते	अक्रियत	क्रियताम्	क्रियेत
श्रु	श्रूयते	श्रोष्यते	अश्रूयत	श्रूयताम्	श्रूयेत

इन सब के रूप ऊपर दिए गए पठ् धातु के समान होंगे ।

आदर्श अनुवाद

राजा से प्रजा की रक्षा की जाती है ।	नृपेण प्रजा रक्ष्यते ।
मुझसे चित्र देखे जाते हैं ।	मया चित्राणि दृश्यन्ते ।
तुझसे गुरु की सेवा की जाती है ।	त्वया गुरुः सेव्यते ।
हमसे पाठ पढ़ा गया ।	अस्माभिः पाठः अपठ्यत ।
नौकरों से काम किया जायेगा ।	भृत्यैः कार्य करिष्यते ।
तुमसे दूध पिया गया ।	युष्माभिः दुग्धम् अपीयत ।

वाच्य-परिवर्तन

कर्तृवाच्य को जब कर्मवाच्य में बदला जाता है तो उसे वाच्य-परिवर्तन कहते हैं; जैसे—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
अहं भोजनं भक्षयामि ।	मया भोजनं भक्ष्यते
रामः कार्यं करोति ।	रामेण कार्यं क्रियते ।
गोपालः गाः चारयिष्यति ।	गोपालेन गायः चारयिष्यन्ते ।
गच्छ, वस्तूनि आनय ।	गम्यताम्, वस्तूनि आनीयन्ताम् ।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
अहं हसामि ।	मया हस्यते ।
बालाः क्रीडन्ति ।	बालैः क्रीड्यते ।
नराः सभायाम् उपविशन्ति ।	नरैः सभायाम् उपविश्यते ।
वानराः वृक्षेषु तिष्ठन्ति ।	वानरैः वृक्षेषु स्थीयते ।

आवश्यक ज्ञातव्य—ऊपर बताया था कि भाववाच्य में अकर्मक धातुओं से प्रत्येक लकार का केवल एक ही रूप बनता है । नीचे कुछ अकर्मक धातुओं के एक-एक रूप दिए जाते हैं ।

धातु	लट्	लृट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
हस्	हस्यते	हसिष्यते	अहस्यत	हस्यताम्	हस्येत
क्रीड्	क्रीड्यते	क्रीडिष्यते	अक्रीड्यत	क्रीड्यताम्	क्रीड्येत

इसी प्रकार अकर्मक धातुओं के रूप भी प्रत्येक काल के प्रथम पुरुष के केवल एकवचन में ही बनेंगे ।

आदर्श अनुवाद

उससे हँसा जाता है ।	तेन हस्यते ।
राम से खेला जाता है ।	रामेण क्रीड्यते ।
हमसे काम किया गया ।	अस्माभिः कार्यम् अक्रियत ।
पापियों से मरा जायेगा ।	पापिभिः मरिष्यते ।
तुम धर्मात्माओं से जिया जाता है ।	युष्माभिः धर्मात्माभिः जीव्यते ।
बालक से सोया जाता है ।	बालकेन सुप्यते ।

अभ्यास

1. संस्कृत बनाइए—
    1. हम से पुस्तक पढ़ी जाती है ।
    2. तुमसे गुरुओं की सेवा की जाती है ।
    3. मुझसे पानी पिया जायेगा ।
    4. बालकों से खेला गया ।
    5. मनुष्यों से हँसा जाता है ।
    6. हम सब मनुष्यों से जिया जाता है ।
2. दृश् (लट्), कृ (लोट्), श्रु (लङ्) और पच् (लृट्) के कर्मवाच्य में निर्दिष्ट लकारों में रूप लिखिए ।
3. हस् (लोट्), जीव् (लृट्) के भाववाच्य में रूप बनाइए ।

दशम् परिच्छेद

स्त्रीप्रत्यय

संस्कृत में कुछ शब्द सदा ही पुँल्लिंग हैं; जैसे—हरि, भानु आदि । कुछ शब्द सदा ही स्त्रीलिंग हैं; जैसे— लता, प्रजा आदि और कुछ शब्द सदा नपुँसकलिंग हैं; जैसे—जल, फल आदि । किन्तु प्राणिवाचक शब्दों में पुँल्लिंग और स्त्रीलिंग होना आवश्यक है । इस परिच्छेद में पुँल्लिंग से

स्त्रीलिंग बनाने की विधि बताई जाती है ।

नीचे लिखे प्रत्यय पुँल्लिग शब्दों के साथ लगाकर उन्हें स्त्रीलिंग बना देते हैं; जैसे– आ, ई, ऊ, ति ।

1. आ—अश्व + आ = अश्वा (घोड़ी) । बाल + आ = बाला । चतुर—चतुरा । शूद्र—शूद्रा । वैश्य—वैश्या । सुत—सुता । क्षत्रिय—क्षत्रिया । चपल—चपला ।
आ लगाने के बाद उपधा के अ को इ होकर—
पाचक—पाचिका । शिक्षक—शिक्षिका, अध्यापिका, नायिका, बालिका, गायिका इत्यादि ।
2. ई—सिंह + ई = सिंही । हरिण + ई = हरिणी । मृग—मृगी । नर्तक—नर्तकी । सुन्दर—सुन्दरी । तरुण—तरुणी । कुमार—कुमारी । हंस—हंसी । ब्राह्मण—ब्राह्मणी । गौर—गौरी । गोप—गोपी इत्यादि ।
ई—(हलन्त शब्दों के साथ)—राजन् + ई = राज्ञी । विद्वस् + ई = विदुषी । बुद्धिमत् + ई = बुद्धिमती । श्रीमत् + ई = श्रीमती । गुणिन् + ई = गुणिनी । गच्छत् + ई = गच्छन्ती । वदत् + ई = वदन्ती । पठत्—पठन्ती, पिबन्ती, हसन्ती ।
ई—(उकारान्त, ऋकारान्त शब्दों के साथ) मृदु + ई = मृद्वी । साधु + ई = साध्वी । पटु—पट्वी, लघु—लघ्वी ।
3. ऊ—कुरु + ऊ = कुरूः । श्वशुर + ऊ = श्वश्रूः (सास) । पंगु—पंगूः ।
4. ति, ती—युवन् + ति = युवतिः, युवन् + ती = युवती ।

कुछ आवश्यक शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

अरण्य—अरण्यानी आचार्य—आचार्या

अर्य—अर्यी (पत्नी)

अर्य—अर्याणी, अर्या (वैश्य जाति में उत्पन्न स्त्री)

आचार्य—आचार्याणी (पत्नी) क्षत्रिय—क्षत्रियी (पत्नी)

क्षत्रीय—क्षत्रियाणी, क्षत्रिया (क्षत्रिय जाति में उत्पन्न स्त्री)

मनुष्य—मनुषी	पति—पत्नी
राजन्—राज्ञी	युवन्—युवतिः, युवती, यूनी
श्वशुर— श्वश्रूः (सास)	हय—हयी (घोड़ी)

आदर्श अनुवाद

चतुर लड़की मन्दिर जाती है।	चतुरा बालिका मन्दिरं गच्छति।
नाचने वाली ने रंगमंच पर अच्छा नाचा।	नर्तकी रंगमंचे सुन्दरम् अनृत्यत्।
विद्वान् स्त्री सम्मान प्राप्त करती है।	विदुषी नारी सम्मानं लभते।
बोलती हुई स्त्रियाँ जा रही हैं।	वदन्त्यः महिलाः गच्छन्त्यः सन्ति।
कोमल वाणी सब को आकर्षित करती है।	मृद्वी वाणी सर्वान् आकर्षति।
सास ने जवान वधू को कहा।	श्वश्रूः युवतिं वधूम् अकथयत्।

अभ्यास

1. संस्कृत में अनुवाद करिए—
    1. दशरथ की तीन रानियाँ थीं।
    2. युवति ने अपने पति से कहा।
    3. कौशल्य सज्जन (साध्वी) स्त्री थी।
    4. कैकेयी अधिक सुन्दर थी।
    5. राजा कैकेयी से प्रेम करता था।
    6. सीता विदुषी नारी थी।
    7. कौशल्या सीता की सास थी।
2. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग बनाइए—
    गायक, साधु, गुणिन्, बलवत्, अध्यापक।
3. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग में सभी विभक्तियों में रूप लिखिए—
    बालिका, युवती, वधू।

षष्ठ अध्याय

प्रथम परिच्छेद

पत्र-लेखन-विधि

संस्कृत में पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. पत्र लिखते समय सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग होना चाहिए, अप्रसिद्ध शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
2. आवश्यक बातें ही लिखनी चाहिए, अनावश्यक नहीं।
3. पत्र को संक्षिप्त ही लिखना चाहिए, बढ़ाकर नहीं।
4. पत्र में ऊपर पता, तिथि, फिर व्यक्ति को सम्बोधन, नमस्कारादि देकर समाचार लिखना चाहिए। नीचे सम्बन्धवाची शब्द और हस्ताक्षर होने चाहिएँ।
5. विभिन्न प्रकार के पत्रों में विभिन्न विषयों को नीचे दिए गए नमूनों के अनुसार लिखना चाहिए।

आदर्श पत्र

1. पिता को पत्र

केन्द्रीय-विद्यालयात्,
रामकृष्णपुरम्, नव-दिल्लीतः
तिथिः 22-12-98

पूज्याः पितृमहोदयाः !

सादरं प्रणामाः सन्तु।

अत्र कुशलम्, तत्रास्तु।

अयं समाचारः, यत् भवत्प्रेषितं कृपा-पत्रं मया प्राप्तम्, समाचारश्च ज्ञातः।

अद्यत्वे मम वार्षिको परीक्षा समीपे वर्तते । अहम् अध्ययने पूर्णतया लग्नोऽस्मि । श्रीमताम् आशीर्वादेन परीक्षायाम् अवश्यं सफलः भविष्यामि । परीक्षानन्तरं ग्रीष्मावकाशाः भविष्यन्ति । तदाऽहं गृहम् आगमिष्यामि, भवतां मातृणां च दर्शनं करिष्यामि । पूज्यायाः मातुश्चरणयोः मम प्रणामान् कथयन्तु ।

भवताम् आज्ञाकारी पुत्रः
लक्ष्मणः

शब्दार्थाः—

प्रेषितम्=भेजा हुआ । ज्ञातः=जाना । अद्यत्वे=आजकल । अध्ययने= पढ़ने में ।

2. मित्र को पत्र

13/76 राजेन्द्रनगरात्
नव-दिल्लीतः
तिथिः 25-12-98

प्रिय मित्र राकेश !

सप्रेम नमस्कारः (नमस्ते वा),

आशाऽस्ति यत् भवान् कुशलो भविष्यति । अत्रापि ईश्वरकृपया सर्वविधं कुशलं वर्तते । समाचारोऽयं यत् चिरकालानन्तरं भवत्पत्रं प्राप्य मनोऽतीव प्रसन्नं जातम् । अहमपि भवद्भिः सह होलिकामहोत्सवे क्रीडितुम् इच्छामि, परञ्च वार्षिकी परीक्षाऽपि एतेषु एव दिवसेषु भविष्यति । केवलं दिनद्वयस्यैव अवकाशो भविष्यति । अतः बाध्योऽस्मि श्रीमता सह होलिका-रंग-प्रक्षेपणे ।

मित्राय सरोजाय अपि मम नमस्कारः कथनीयः ।

भवतोऽभिन्नं मित्रम्
रामानुजः

शब्दार्थाः—

कुशली=कुशलतापूर्वक । सर्वविधम्=हर तरह का । बाध्यः=मजबूर ।

3. पुस्तक-प्रकाशक को पत्र

सेवायाम्

श्रीयुत्-प्रबन्धक-महोदयानाम्

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा॰ लि॰

888, ईस्ट पार्क रोड, नई दिल्ली ।

श्रीमन् !

अद्य अत्र वितरितं 'लघु-संस्कृत-व्याकरणस्य' विज्ञापन मया प्राप्तम् । तत्र आशुबोध्यं व्याकरणं तथा सरलाम् अनुवादपद्धतिं च पठित्वा अहम् अतीव प्रभावितोऽस्मि । अतः श्रीमान् कृपया शीघ्रमेव लघु-संस्कृत-व्याकरणस्य एकां प्रतिम् अधोनिर्दिष्टस्थाने वी॰पी॰पी॰ द्वारा प्रेषयतु ।

धन्यवादयोग्याः श्रीमन्तः ।

भवतो विश्वासपात्रम्

तिथिः 23-12-98

श्रीवत्सः, नवम—श्रेणीस्थः

मॉडर्न विद्यालयः

बाराखम्बा राजमार्गः,

नव दिल्लीतः

शब्दार्थाः—

वितरितम्=बाँटा गया । धन्यवादयोग्याः= धन्यवाद के योग्य ।

4. भाई को पत्र

5/39 लाजपतनगरात्

नव-दिल्लीतः

तिथिः 1-1-99

प्रिय भ्रातः सुरेश !

चिरंजीव (आयुष्मान् भव)

अहम् इदं श्रुत्वा अतीव प्रसन्नोऽभवम् यत् त्वं दशमश्रेण्याम् श्रेष्ठैः अंकैः उत्तीर्णः अभवः । संस्कृतविषये तव पंचसप्ततिम् प्रतिशतमंकान् पठित्वा तु

मानसं ततोऽप्यधिकं प्रासीदत् । आशासे भविष्यत्कालेऽपि इत्थमेव परिश्रमपरायणो भूत्वा परमश्रेष्ठैः अंकैः एकादश-श्रेणीमपि उत्तरिष्यसि ।

तव ज्येष्ठो भ्राता
सुवर्णकान्तः

शब्दार्थाः—

आयुष्मान्= बड़ी उम्र वाला । पंचसप्ततिम्=पचहत्तर को । प्रासीदत्=प्रसन्न हुआ ।

5. प्रार्थनापत्र

श्रीमन्तः प्रधानाचार्य-महोदयाः
विकासविद्यालयस्य,
राँची ।

माननीयाः !

सादरं प्रार्थये यत् अतीताया रात्रेः अहं शीतज्वरेण आक्रान्तोऽस्मि । अद्यापि तीव्रः ज्वरः बाधते । अस्मात् कारणात् अहं विद्यालयमागन्तुम् असमर्थोऽस्मि । अतः दिनद्वयस्य अवकाशं दत्व माम् अनुगृह्णन्तु ।

धन्यवादार्हाः भवन्तः ।

तिथिः 5-2-98

भवतामाज्ञाकारी शिष्यः
सुरेन्द्रनाथः
दशमश्रेणीस्थः

शब्दार्थाः—

अतीतायाः=बीती हुई । शीतज्वरेण=निमोनिया से । आगन्तुम्=आने के लिए । अनुगृह्णन्तु=कृपा करें ।

6. निमन्त्रण पत्र

श्रीमन्महोदयः .... ।

एतद् ज्ञात्वा श्रीमन्तः प्रसन्नाः भविष्यन्ति यत् ईश्वरकृपया मम पुत्रस्य विवाह-संस्कारः 29-9-98 तारिकायां निश्चितो जातः । भवन्तः कार्यक्रमानुसारं

सपरिवारम आमत्य उत्सवस्य शोभां वर्धयन्तु । प्रीतिभोजग्रहणं चापि न विस्मरिष्यन्ति ।

स्थानम्—25/43, राजेन्द्रनगरम्
नवदिल्ली-5

भवद्दर्शनाभिलाषी
देवेन्द्रो वर्मा

कार्यक्रमः

शनिवासरे	28-6-98	प्रातः 8 वादने गणेशपूजनम्
	28-6-98	सायम् 4 वादने प्रीतिभोजः
	28-6-98	सायम् 6 वादने वरयात्रा-प्रस्थानम्

शब्दार्थाः—

तारिकायाम्=तारीख में । प्रीतिभोजः=दावत ।

अभ्यास

1. अपने पिता को संस्कृत में पत्र लिखिए । उसमें आप अपने वार्षिक परीक्षा में पास होने का समाचार लिखिए ।
2. किसी पुस्तक-विक्रेता को पुस्तकें मँगाने के लिए संस्कृत में पत्र लिखिए ।
3. अपने भाई के विवाह का निमन्त्रण-पत्र मित्र को संस्कृत में लिख कर भेजिए ।
4. निम्नलिखित पत्र का संस्कृत में अनुवाद करिए—

सलवान स्कूल छात्रावास
दिल्ली से
तिथिः 7-7-98

श्रीमान् पूज्य पिताजी !

सादर प्रणाम ।

ईश्वर की कृपा से यहाँ सब प्रकार कुशल है । आपकी कुशलता श्री परमात्मा से शुभ चाहता हूँ ।

समाचार यह है कि पढ़ाई प्रारम्भ हो गई है । मैं नवम श्रेणी की पुस्तकें

लूँगा। मई-जून मास की फ़ीस (शुल्क) भी दूँगा। अतः कृपया दो सौ तीस रुपये भेजकर अनुगृहीत करें।

पूज्य माताजी को मेरा प्रणाम कहें।

उषा बहन को स्नेहार्पण हो।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
जगदीश मिश्र
नवम श्रेणी

द्वितीय परिच्छेद

प्रस्ताव-लेखन-विधि

संस्कृत में प्रस्ताव लिखना भी विद्यार्थी की योग्यता को प्रकट करता है, इसलिए अब परीक्षा में संस्कृत में छोटे-छोटे प्रस्ताव भी पूछे जाते हैं। अतः इस परिच्छेद में संस्कृत में छोटे-छोटे प्रस्ताव के नमूने दिए जाते हैं ताकि विद्यार्थी प्रस्ताव लिखने के तरीके समझ जाएँ।

1. संस्कृत में प्रस्ताव लिखते समय हिन्दी की तरह ही प्रस्ताव की भूमिका, लाभ, महत्त्व, दृष्टान्त और उपसंहार आदि देना चाहिए।
2. प्रस्ताव में संस्कृत के छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए और कर्ता प्रथमा विभक्ति का एवं क्रिया गण की होनी चाहिए; जैसे—गजः चलति।
3. विभक्ति, चिह्नों—ने, को, से, के द्वारा आदि का ध्यान रखकर शब्दों के उसी कारक के रूप देने चाहिएँ। तथा एकवचन द्विवचन बहुवचन का भी ध्यान रखना चाहिए; जैसे—रामः दुग्धं पिबति।
4. विशेषण और विशेष्य में एक ही लिंग, विभक्ति और वचन होना चाहिए, जैसे—मधुरं फलं वृक्षात् पतति।
5. जिस शब्द के लिंग या रूप के सम्बन्ध में संदेह हो, ऐसा शब्द

प्रयुक्त नहीं करना चाहिए ।

6. संक्षेप में यह कह सकते हैं कि भाषा सुगम, सरल, रोचक और शुद्ध हो ।

1. उद्योगः

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः तं कृत्वा नाऽवसीदति ।

आधुनिकाः सर्वे जना जानन्ति यत् धनेनैव सुखं मिलति । धनं च उद्योगं विना न लभ्यते । उद्योगेनैव मनुष्यः धनं, विद्यां, कुशलतां च लभते ।

आलस्यस्य परित्यागः कार्यस्य करणे प्रवृत्तिः उद्योग-शब्दस्यार्थः । यथा कश्चित् सिंहः सुप्तः आलस्ययुक्तो वा स्वबुभुक्षां दूरीकर्तुम् समर्थो न भवति अपितु उत्थाय पौरुषं कृत्वा मृगान् गजं वा हत्वा स्वोदरपूर्ति करोति तथैव पुरुषोऽपि परिश्रमेण बाल्ये विद्याम् पठित्व यौवने धनम् अर्जित्वा सुखेन जीवनं यापयितु समर्थो भवति ।

उद्योगेनैव मधुमक्षिकाः पुष्पेभ्यो रसं संकलय्य मधु संचिन्वन्ति । एवमेव छात्राः अपि शनैः शनैः उद्योग-परायणा भवन्तु चेत्तर्हि ते अपि उद्योगस्य साहाय्येन विद्वांसो धनिनो वा भविष्यन्ति ।

शब्दार्थाः—

करणे=करने में । बुभुक्षाम्=भूख को । अर्जित्वा=कमा कर । पिपीलिका =चींटी । संकलय्य=इकट्ठा करके ।

2. विद्या

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या

उपरि एका उक्तिः प्रदत्ता अस्ति । यस्या अयमर्थः यत् संसारे ईदृशं किं वस्तु वर्तते यत् विद्यया नहि लभ्यते अर्थात् विद्या मानवस्य सर्वाणि कार्याणि सरलतया साधयति ।

विद्या-शब्दस्य अर्थः 'ज्ञानम्' । अद्यत्वे यान् महतः पुरुषान् पश्यामः, ते बाल्ये अनेकविधं कष्टम् अनुभूय विद्याम् अपठन् । विद्या मनुष्यस्य श्रेष्ठं गुप्तं धनमस्ति । विद्या एव वास्तविकं सौदर्यं वर्तते । विदेशे विद्यैव बन्धुवत्

सहायिका भवति । शिक्षितेषु पुरुषेषु सभासु च विद्यैव पुरुषान् सम्मानयति, विद्यैव अनेकविधं यशश्च तनोति ।

विद्या-प्रभावेण लाजपतराय-महोदयः, लोकमान्यः बाल गंगाधर तिलकः, महात्मा गाँधी, श्री जवाहरः, श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथाऽन्ये नेतारः पराधीनता-युगं भारत-स्कन्धाद् दूरीकर्तु समर्थाः अभवन् । संसारे च महद् यशः प्राप्नुवन् । अतः सर्वे विद्यार्थिनः परिश्रमेण विद्यां पठन्तु ।

शब्दार्थाः—

ईदृशम्=ऐसे । अनुभूय=अनुभव करके । तनोति=फैलाती है ।

3. एकता

संघे शक्तिः कलौ युगे

सर्वे जानन्ति यत् नैकं तृणं किमपि कर्तु समर्थम् । परन्तु तैः वेष्टिता रज्जुः हस्तिनं बद्धुमपि समर्था भवति । इत्थमेव एकेन तण्डुलेन नहि ओदनं पच्यते, एकेन गोधूमकणेन नहि चूर्णं पिष्यते । तथैव एकेन पुरुषेण अपि किमपि महत्कार्यं नहि सिध्यति ।

अतः सिध्यति यत् किमपि कार्यं साधयितुं नराणां संघः परमावश्यकः । गृहे मातरः पितरः भ्रातरः एकीभूय गृहभारं वहन्तः सुखमनुभवन्ति । एवमेव मनुष्याणां समाजोऽपि देशं जातिञ्च उन्नतिपथं नेतुं समर्थो भवति । यस्मिन् राष्ट्रे सर्वा जातयः सर्वाणि राज्यानि च एकतया भेदभावं परित्यज्य व्यवहरन्ति तद्राष्ट्रं जनशक्त्या संसारस्य मुकुट-मणिरिव समुज्जवलं भवति ।

एकतायाः प्रभावेण भारतीयाः स्वदेशं भारतम् आंगलहस्तात् मोचयितुं समर्थाः अभवन् । अतः सदा सर्वैः मानवैः संघे स्थित्वा स्वशक्त्याः संचयः कर्तव्यः । अधुनाऽपि यदि वयं संघीभूय वर्तिष्यामहे तर्हि अवश्यमेव शत्रुसैनिकान् जेतुं शक्ष्यामः ।

शब्दार्थाः—

वेष्टिता=बटी हुई । रज्जुः=रस्सी । तण्डुलेन=चावल से । ओदनम्=भात । आंगलहस्तात्=अंग्रेज़ों के हाथ से । जेतुम्=जीतने में ।

4. शिष्टाचारः

शिष्टानाम् आचारः शिष्टाचारः । ये जनाः सभ्याः कुलीनाः, श्रेष्ठा भवन्ति ते शिष्टा उच्यन्ते । ते शिष्टजनाः यं यम् आचारम् अनुतिष्ठन्ति स आचार एव शिष्टाचारः सदाचारो वा कथ्यते । श्रेष्ठानां कुलीनानाम् एते आचाराः कथ्यन्ते—

तद्यथा—प्रातःकाले उत्थाय मातरं पितरं वृद्धान् गुरून् च प्रणमेत् । अथ नित्यकृत्यं कृत्वा स्वकार्ये प्रवर्तेत । वृद्धाः पितरौ च यत् यत् कर्म कर्तुम् आदिशन्तु तत् कर्म कर्तुं प्रवर्तेत । गुरूणां वृद्धानां पित्रोश्च आज्ञापालनेन बालानां तथा अन्येषामपि जनानां कल्याणं भवति, तेषाम् आयुः, धनं, विद्या, यशः, बलम्, बुद्धिः, तेजः च प्रवर्धन्ते ।

सदाचारेण एव महात्मा गाँधी, श्रीरामः, श्रीकृष्णः, बुद्धादयश्च संसारे महान्तः पुरुषाः संजाताः । अतः यदि वयं उन्नतिपदम् आरोढुम् इच्छामः, तर्हि अस्माभिः अपि श्रेष्ठैः आचरितानि कर्माणि कर्तव्यानि ।

शब्दार्थः—

शिष्टः=सभ्य । अनुतिष्ठन्ति=करते हैं । कृत्वा=करके ।

5. अनुशासनम्

कस्यापि व्यवस्थितस्य नियमसमुदायस्य पालनम् अनुशासनम् उच्यते । तद्यथा—विद्यालये अध्यापकाः विद्यालयस्य नियमानां पालनाय कथयन्ति—समये विद्यालयतम् आगच्छत, पंक्तौ प्रार्थनादिषु गच्छत, विद्यालये नियतं परिधानं धारयत, उच्चैर्मा वदत, कोलाहलं मा कुरुत । सावधाना भूत्वा पाठितं पाठं शृणुत । नान्यान् अपशब्दैः वदत, न लघून् तुदत । अथ च गुरोः पित्रोः वृद्धानां च सम्मानं कुरुत ।

एते ते नियमाः येषु चलनं विद्यार्थिनां प्रथमं कर्तव्यम् । इत्थम् अनुशासनेनैव तेषां संस्था यशः प्राप्तुम् शक्नोति, विद्यार्थिनोऽपि महतीं योग्यतां लब्धुं शक्नुवंन्ति ।

विद्यालयवत् नगरस्य देशस्य वाऽपि अनुशासननियमाः सन्ति । तद्यथा राजमार्गस्य वामहस्ते चलत, वाहनमपि वामहस्ते वाहयत । पत्रालये, चलचित्रं

द्रष्टुम् प्रवेशपत्रेभ्यः, धूम्रशकट्याम् आरोढुं, स्टेशने चटिकां नेतुं, बस-वाहनेषु आरोहणावसरे च सदा पंक्तौ एव तिष्ठत । परधनं व हरत, अन्यायं न सहध्वम् । स्वयं जीवत परान् च जीवयत । राजकरम् अवश्यं दत्त । विधान-सभा अन्यानपि यान् नियमान् देशोन्नत्यै निर्माति तेषु अवश्यं चलत— इदमेवानुशासनम्, इदमेव स्वदेशोन्नतिकरं साधनम् । अतः स्वदेशोन्नत्यै अनुशासनं सदा पालनीयम् ।

शब्दार्थाः—

परिधानम्=पहनावा । तुदत=तंग करो । वाहनम्=सवारी । धूम्रशकट्याम् =रेलगाड़ी में । चिटिकाम्=टिकट को । निर्माति=बनाती है ।

6. मम विद्यालयः

मम विद्यालयस्य नाम 'सनातनधर्मविद्यालयः' अस्ति । एषः दिल्ली नगरे, रक्तदुर्गस्य समीपे अस्ति । अस्य सम्मुखे अतीव भव्या महावीरवाटिका स्थिता अस्ति । एतस्मात् अस्य शोभा द्विगुणयति । अस्मिन् त्रिंशतसंख्याकाः छात्राः शिक्षा प्राप्नुवन्ति । स्वल्पसमये एव अनेन विद्यालयेन पर्याप्ता उन्नतिः कृताः । प्रबन्धकैः काश्चन नवीनाः कक्षा अपि निर्मापिताः । शिक्षादृष्ट्या तु अस्माकं विद्यालयः पूर्वमेव समुन्नतः वर्तते, परन्तु इदानीं प्रधानाध्यापक महोदयस्य प्रयत्नेन विद्यालये छात्राणां ज्ञानवृद्धये राष्ट्रीयधार्मिक-सामाजिकविषयेषु सुयोग्याध्यापकनां प्रतिसप्ताहं द्वे व्याख्याने अपि भवतः । एभिः व्याख्यानैः छात्रेषु चरित्रनिर्माणस्य देशसेवायाश्च भावनामुत्पदयितुं प्रयत्नः क्रियते ।

अस्माकं विद्यालये एन.सी.सी. शिक्षायाः प्रशिक्षणस्य अपि भवति । कुशलाः प्रशिक्षकाः अत्र छात्रेभ्यः सैनिकशिक्षायाः प्रशिक्षणं प्रयच्छन्ति ।

अस्य विद्यालयस्य प्रसिद्धिः तु दिल्लीनगरे महती अस्ति यतः अस्य विज्ञानविभागः विशिष्टः अस्ति । अस्य विशालाः प्रयोगशाला तु सर्वत्र प्रसिद्धः अस्ति ।

अस्माकं परमं सौभाग्यम् अस्ति यत् वयम् अस्मिन् विद्यालये शिक्षां प्राप्नुमः । वयम् आशास्महे यद एषः विद्यालयः उत्तरोत्तरं उन्नति प्राप्नुयात् ।

7. देशभक्तिः

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

स्वस्य देशस्य कृते मनुष्याणां हृदये यः आदरस्य भावः भवति स एव देशभक्तिः कथ्यते ।

माता तु बालं प्रसूय द्वित्राणि वर्षाणि यावद् दुग्ध पाययति, परञ्च मातृभूमिः यावज्जीवनं बालाय, यूने, वृद्धाय च नानाविधानि खाद्यानि यच्छति, यानि वयं भक्षयामः शरीराणि च पोषयामः । इत्थं भूमिः अनेक-प्रकाराणि फलानि उत्पादयति येषां रसान् वयं स्वदामहे, शरीरस्य पुष्टिं स्वास्थ्यं शक्ति च प्राप्नुमः ।

इत्थं मातृभूमिः अस्मान् उपकरोति । अस्याः जन्मभूमेः कृते अस्माकम् अपि कर्त्तव्य यद् वयं कायेन मनसा धनेन परमभक्त्या जन्मभूमेः मातृभूमेः भारतदेशस्य रक्षां कुर्याम ।

वयं पश्यामः यत् महाराणा प्रतापः, शिववीरः, महाराज्ञी लक्ष्मीः, लोकमान्यस्तिलकः, लाजपतरायः, महात्मा गाँधी, महामना मदनमोहन मालवीयः, सुभाषचन्द्रः, भगतसिंहः, श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथाऽन्ये बहवः देशभक्ति-परायणाः पुरुषाः मातृभूम्यै स्वप्राणान् अयच्छन् । अस्माकमपि कर्तव्यं, यदि कश्चिच्छत्रुः अस्या उपरि क्रूरां दृष्टिं कुर्यात् तदा वयं तस्य दृष्टिं छिन्दाम, अस्या रक्षायै स्वजीवनस्यापि बलिदानं कुर्याम, तदैव वयं मातृभूमेः ऋणान्मुक्तिं लब्धुं शक्ष्यामः ।

शब्दार्थाः—

गरीयसी=श्रेष्ठ । प्रसूय=जन्म देकर । स्वदामहे=हम स्वाद लेते हैं ।
द्वित्राणि =दो-तीन ।

8. प्रातःकाल-वर्णनम्

अष्टप्रहरमाने दिने प्रातःकालस्य वेला एव सर्वतोऽधिकं मनोहारिणी भवति । यतः पूर्वस्यां दिशि सूर्यः उदयति । तस्य रक्तवर्णाः किरणाः व्याप्य आकाशं शोभयन्ति । प्रातःकाले सर्वविधं शान्तं वातावरणं भवति । सुप्तोत्थिताः पक्षिणः कलरवैः मानवान् जागरयन्ति । मंन्दः सुगन्धः समीरः

वहति । निद्राऽपि स्वमाधुर्येण मनुष्यान् वशीकरोति किन्तु नायं समयः शयनस्य । प्रातःकाले उद्याने मनोहारि दृश्यं सर्वेषां मनो हरति । नद्यास्तटे सरितः कलकलः, शीतलं च जलं जनतायाः कृते सौख्यम् आवहति । पर्वतानां वनानाम् उपवनानां च मनोहरेषु हरितेषु वृक्षेषु, क्षेत्राणां शस्यश्यामलासु भूमिषु प्रकृतेः सौन्दर्य प्रसृतमिव दृश्यते । विकसितानि पुष्पाणि स्वसुगन्धिं वितरन्ति, मनांसि मोहयन्ति च ।

अस्मिन् मनोमुग्धकारिणि काले बाल-स्त्री-वृद्धेभ्यः उचितम् यत्ते प्रातः सूर्योदयात् प्रागेव उत्थाय स्वास्थ्यवर्धनाय अनावृतेषु उद्यानादिषु भ्रमन्तु प्रकृतेः शोभया च स्वमनः प्रसादयन्तु ।

शब्दार्थाः—

वेला=समय । समीरः=हवा । सरितः=नदी का । सौख्यम्=सुख । आवहति=लाता है । प्रसृतम्=फैला हुआ । दृश्यते=दिखाई देता है । प्रागेव =प्राक्+एव=पहले ही । उत्थाय=उठकर । अनावृतेषु=खुले । प्रसादयन्तु=प्रसन्न करें ।

9. वसन्तर्तुः (वसन्त+ऋतुः)

अस्माकं भारते षट् ऋतवः भवन्ति । तद्यथा—वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः, शिशिरं च । एषु सर्वेषु ऋतुषु वसन्तः ऋतुः सर्वेभ्योऽधिकं मनोहरः भवति । वसन्ते शीतस्य न्यूनता भवति, उष्णतायाः च पूर्णतया अभावो भवति । वसन्ते ऋतौ वनेषु, उपवनेषु, पर्वतेषु, क्षेत्रेषु च मन्दः, सुगन्धः, समीरः वहति । वृक्षाणां शाखासु लतासु च नवांकुराः उद्भवन्ति । प्रायः सर्वविधाः तरवः पुष्पैः आच्छादिताः भवन्ति । तैः वृक्षाणां लतानां च मनोहारिणी शोभा भवति । वृक्षेषु पक्षिणां कलरवः कर्णौ सुखयति । कोकिलानां काकल्या आम्रवृक्षाः गुंजन्ति । सर्वत्र सुरम्यं वातावरणं जायते ।

एतादृशे मनोरमे ऋतौ जनाः स्वमित्रैः स्वभार्याभिः सन्ततिभिश्च सह प्रातःकाले उद्यानेषु भ्रमन्ति, प्रसीदन्ति, स्वास्थ्यं च लभन्ते । बालाः बालिकाः च हर्षेण धावन्ति, क्रीडन्ति, मोदन्ते च ।

अस्मिन्नेव ऋतौ माघमासे शुक्लपक्षस्य पञ्चम्यां तिथौ 'वसन्तपञ्चमी' महोत्सवः भवति । तदा जनाः पीतानि वस्त्राणि धारयन्ति । पीतवर्णम् ओदनं भक्षयन्ति, पीतां यवागूं च स्वदन्ते । अनेक बालाः युवकाः अपि पीतानि विविधवर्णानि वा पतंगानि उड्डाययन्ति आनन्दम् अनुभवन्ति च ।

अस्मिन् दिने नगराद् बहिः यत्रकुत्रापि मेलकं लगति, तत्र नराः नार्यः बालाश्च गत्वा बहुविधानि मिष्टान्नानि अम्लपदार्थाश्च भुक्त्वा प्रसन्नाः जायन्ते । अत्रैव जनाः दिल्लीनगरे स्वधर्मरक्षायै आत्मनः बलिदातुः 'हकीकतरायस्य' समाधिं गच्छन्ति, सादरं श्रद्धाञ्जलिं दत्त्वा तं स्मरन्ति ।

अस्य वसन्तस्य सौन्दर्यं विलोक्यैव भगवान् श्रीकृष्णः उक्तवान्—अहं 'ऋतुनां कुसुमाकरः' (वसन्तः) अस्मि ।

शब्दार्थाः—

षट्=छः । न्यूनता=कमी । समीरः=वायु । नवांकुराः=नये कोंपल (पत्ते) । काकल्या=कोयल की कुहू-कुहू से । मोदन्ते=प्रसन्न होते हैं । ओदनम् =चावल । यवागूम्=हलवे को । भुक्त्वा=खाकर । उक्तवान्=कहा ।

10. विजयदशमी

संसारस्य सर्वेषु देशेषु महोत्सवाः भवन्ति । महोत्सवैः जनतायाम् उल्लासः, उत्साहः, प्रसादश्च उत्पद्यते । भारते वर्षेऽपि बहवः महोत्सवाः भवन्ति, यैः समये-समये जनता जागृतिं नवोल्लासं प्राप्नोति । तेषु उत्सवेषु पर्वसु वा विजय-दशमी-महोत्सवः अपि मुख्यः ।

रामः अस्मिन् दिने रावणं विजित्य तं ससैन्यं निहत्य च सीताम् प्राप्तवान् । आश्विन-मासस्य दशम्यां रामो विजयम् अलभत, अतः अयं दिवसः विजयदशमीति कथ्यते । तदा प्रभृति अद्यावधि नराः राम-विजयस्य प्रसन्नतायां रावण-कुम्भकर्ण-मेघनादादीनां कर्गलप्रतिमाः निर्माय विशालेषु क्षेत्रेषु स्थापयन्ति ।

सायंकाले राम-प्रतिरूपो नटः रावणे अग्निबाणं क्षिपति । तेन रावण-प्रतिकृतिः प्रज्वलति, इत्थम् अन्याः । प्रतिकृतयः अपि ज्वलन्ति । जनता तत्सर्वं दृष्ट्वा परमं प्रसीदति । ततः मिष्टान्नानि भक्षयन्तः सर्वे प्रसन्न-चेतसः स्व-स्वगृहं प्रति निवर्तन्ते ।

शब्दार्थाः—

उल्लासः=प्रसन्नता । प्रसादः=खुशी । विजित्य=जीतकर । प्रभृति=से । अद्यावधि=आज तक । कर्गलप्रतिमाः=कागज़ के बुत । निर्माय=बनाकर ।

11. दीपावली

पर्वाणि मनुष्याणां संस्कृतेः परिचायकं सन्ति । तैः अस्माकं प्राचीनसंस्कृतेः ज्ञानं भवति । संसारस्य सर्वेषु देशेषु विभिन्नजातीनां विभिन्नानि पर्वाणि दृश्यन्ते । दीपावली अपि भारतवर्षे हिन्दूनाम् एकं प्रधानं पर्व मन्यते । अस्मिन् एव दिने मर्यादापुरुषोत्तमो भगवान् रामः रावणं निहत्य अयोध्यां प्रत्यागतवान् । अयोध्यानिवासिनश्च तस्य स्वागताय दीपमालां प्रज्वलितं अकुर्वन् । आर्यसमाजस्य प्रवर्तकस्य महर्षेः दयानन्दस्य मृत्युरपि अस्मिन्नेव दिने अभवत् ।

केचन् मूर्खा अस्मिन् दिने धूतक्रीड़ाम् अपि कुर्वन्ति । इदं च महती कुप्रथा अस्माकं समाजे वर्तते । एवं विधा कुप्रथा परित्यज्य अस्माभिः स्वपर्वाणि माननीयानि । तदेव पर्वणामुद्देश्यपूर्तिः सम्भवेत् । तानि च संस्कृतेः परिचायकानि सम्भवेयुः ।

12. श्रीकृष्णः

संसारे यदा धर्मस्य हानिः पापानां च वृद्धिः भवति तदा भगवान् विष्णुः अवतरति भूमेश्च भारम् हरति । द्वापरयुगे कंसशिशुपाल-दुर्योधनादीनां पापाचरणं यदा अत्यधिम् अवर्धत तथा मथुरायां कंसस्य कारागारे देवकी-वसुदेवयोः गृहे श्रीकृष्णय जन्म अभवत् । देवकी तस्य रक्षायै पतिम् प्रार्थयत् । स शिशुं शूर्पे निधाय पारेयमुनम् गोकुले नन्दस्य गृहम् अनयत् । तत्रैव श्रीकृष्णस्य पालनं पुष्टिश्च अभवताम् ।

अयं बालः बाल्ये गोपबालैः, गोप-बालिकाभिश्च सह क्रीडां कुर्वन् गाः चारयन् गोकुल-जनान् सममोहयत् । एकदा कंसः श्रीकृष्णं मल्ल-युद्धाय आहूतवान् । तदा श्रीकृष्णः कंसं केशेषु गृहीत्वा तस्य प्राणान् अहरत् । पूतना-शिशुपालादीन् अपि अत्याचारिणः सोऽहन् ।

कौरव-पाण्डवानां युद्धे समुपस्थिते धर्मपक्षपातिनां पाण्डवानां पक्षे अर्जुनस्य रथवाहको भूत्वा श्रीकृष्णः युद्धविमुखाय अर्जुनाय उपदेशम् अयच्छत्—

"हे अर्जुन ! आत्मा नित्यः, शरीराणि अनित्यानि । यदि त्वं युद्धे मरिष्यसि तर्हि स्वर्गं प्राप्स्यति, यदि जेष्यसि तदा पृथिव्याः शासनं लप्स्यसे । अतः मोहं परित्यज्य युद्धाय तत्परो भव ।" अनेन उपदेशेन प्रोत्साहितः अर्जुनः युद्धाय पुनः सन्नद्धोऽभवत् ।

पाण्डवानां विजये जाते श्रीकृष्णः द्वारिकाम् अगच्छत् तत्र च महाराजः संजातः । महता प्रेम्णा धर्मेण च प्रजाम् अशास्त ।

एवं षोडशकलापूर्णो योगिराजः भगवान् श्रीकृष्णः भारतभूमेः अधर्मम् उन्मूल्य धर्मं च संस्थाप्य संसारे यशः अलभत ।

शब्दार्थः—

शूर्पे=छाज में । निधाय=रखकर । मल्लयुद्धाय=कुश्ती के लिए । आहूतवान् =बुलाया । अहन्=मारा । जीर्णानि=फटे पुराने । परित्यज्य=छोड़कर । सन्नद्धः =तैयार । उन्मूल्य=उखाड़ कर ।

13. ग्राम्यजीवनम्

केचन् पुरुषाः स्वभावतः ग्रामान् अन्ये च नगराणि प्रशंसन्ति । ग्राम्यजीवने नागरिकजीवने च पृथक् गुणदोषाः वर्तन्ते । ग्रामेषु जनानां जीवनयात्रा यद्यपि कठिना वर्तते परं तत्र केचन एवंविधाः गुणा अपि सन्ति ये नगरेषु नोपलभ्यन्ते । ग्रामेषु नागरिकजीवनस्य आकर्षकवस्तूनामभावात् ग्रामीणानामाचारः सर्वदा सुरक्षितो वर्तते । अन्यच्च ग्रामेषु वायुमण्डल-मतिस्वच्छं भवति । परन्तु नगरेषु आधुनिकयन्त्राणां बाहुल्येन वायुमण्डलं सर्वथा दूषितं भवति ।

ग्रामीणानां जीवनमपि सरलं निष्कपटं च भवति । यदि ग्रामेषु शिक्षायाः सुप्रबन्धः स्यात् तदा निसंदेहः ग्राम्यजीवनं स्वर्गतुल्यमेव भवेत । वयं आशास्महे यद् ग्रामीणानामियं त्रुटिरपि शनैः शनैः दूरीभविष्यति, तदा वस्तुतः भारते ग्राम्यजीवनम् आदर्शभूतं स्यात् ।

14. श्रीजवाहरलाल नेहरुः

नहि कोऽपि एतादृशः भारतीयः पुरुषः, यः श्रीजवाहरलालस्य नाम न जानीयात् । अयं 1889 तमे ईशवीयाब्दे प्रयागतीर्थे सुरम्ये प्रासादे अजायत । अस्य पिता श्रीमोतीलालः प्रख्यातः वाक्कीलः आसीत् । राजकीय-विधिना लालितो जवाहरः पञ्चवर्षवयस्कः अभवत् । गृहे एव च आंगलविदुषी जवाहरं पाठयति स्म । प्रवेशिका-परीक्षामुत्तीर्य विद्याध्ययनाय अयम् इंगलैंडदेशं प्रेषितः । ततः तर्कप्रवणां वाक्कीलविद्याम् प्राप्य यदाऽयं भारतं समागतः तदाऽत्र श्रीमहात्मनो गान्धिनहः सत्याग्रहः प्रचलित आसीत् ।

श्रीजवाहरलालः आंगलदेशे भारतीयानां दुर्दशाम् अपमानं बहुवारम् अपश्यत् येनास्य चेतः अखिद्यत । भारते आगत्यापि विदेशीयैः कृतम् अत्याचारं दृष्ट्वा तु अतीव अव्यथत । अतः तस्य मनसि स्व-देशभक्त्या अंकुरः प्ररूढः । येनायं महाभागः स्वतन्त्रतासंग्रामे प्राकूर्दत् । यथाशक्ति श्रीगाँधि-महोदयस्य साहाय्यम् अकरोत् । शासन-विरुद्धाचरणेन स्वतन्त्रतायै क्रान्तिकारिभिः भाषणैश्च जवाहरः गृहीतः कारागारे च क्षिप्तः । अयं बहुवारं बन्दिगृहस्यातिथिः संजातः । अनेन प्रायः द्वादशवर्षाणि कारायां महत् कष्टं सहमानेन व्यतियापितानि, किन्तु स्वतन्त्रता-प्राप्तिरूपम् उद्देश्यं नात्यजत् ।

श्रीगाँधि-जवाहरयोः महापुरुषयोः महता परिश्रमेण 1947 तमे ईशवीयाब्दे भारतं स्वतन्त्रम्जातम् । तदा प्रभृति निधन यावत् श्रीजवाहरलाल नेहरुः भारतस्य प्रधानमन्त्री आसीत् । अयं राजनीतिनिष्णातः परमदेश-भक्तः शान्तिदूतः शुचिः, त्यागवांश्च भारतं जगच्चूडामणि विधातु प्रयतमान आसीत् ।

चतुःषष्ट्यधिकस्य एकोनविंशतिशततमस्य (1964) ईशवीयाब्दस्य मई मासस्य सप्तविंशतितमायां (27) तारिकायाम् अयं महापुरुषः स्वर्गतः । सर्वैः संमिल्य तस्य शुभगतिप्राप्त्यै प्रार्थितम् ।

शब्दार्थाः—

एतादृश=ऐसा । प्रख्यातः=प्रसिद्ध । वाक्कीलः=वकील । प्रवेशिका=

मैट्रिक । तर्कप्रवणाम्=वकालत । कारायाम्=जेल में । व्यतियापितानि=बिताये । शुचिः=पवित्र व्यवहारवाला, ईमानदार । विधातुम्=करने के लिए ।

15. महात्मा गांधी

को नाम भारतीयो बालः, यः प्रातःस्मरणीयस्य महात्मनो गान्धिनो नाम न जानाति । अयं महापुरुषः काठियावाड़-प्रान्तस्थिते पोरबन्दरनाम्नि स्थाने जन्म अलभत । अस्य नाम मोहनदासः अभवत् । अस्य पिता कर्मचन्द्रः स्थानीय-राज्यस्य मन्त्री आसीत् । अस्य बाल्यं सुखेन व्यतीतम् । त्रयोदश-वर्षीयस्य एवास्य विवाहो जातः ।

1887 तमेऽब्दे सप्तदश-वर्षवयस्कः अयं प्रवेशिका-परीक्षाम् उत्तीर्य विधिशास्त्रम् अध्येतुम् आंगलदेशम् अगच्छत् । ततः 'बैरिस्टर' पदवीं प्राप्य 1891 तमेऽब्दे भारतं प्रत्यागच्छत् ।

स्वल्पं कालं यावत् अयं मुम्बापुर्यां विधिवक्तृ-विद्यायाः अभ्यासम् अकरोत् । तदैव केनचित् श्रेष्ठिना अभियोगं वीक्षितुं गान्धिमहोदयः दक्षिणाफ्रीकां प्रेषितः । अफ्रीकायां स्वकार्यं समाप्य तत्रत्यानां भारतीयानां, दुर्गतिम् अवलोक्य परमम् अव्यथत । तेषाम् उन्नत्यै उद्धाराय च सत्याग्रहं प्रवर्तितवान् । येन महात्मा गाँधी तत्र तेषाम् अधिकार-दापने सफलोऽभवत् । 1915 तमेऽब्दे सः भारतं प्रत्यागच्छत् ।

अत्रागत्य भारतीयेषु गौरांगाणाम् अत्याचारान् अपश्यत् अत्रापि च अहिंसा-पूर्वकं सत्याग्रहान्दोलनाभ्याम् अत्याचारस्य विरोधं प्रारब्धवान् । आंगल-शासन-विरुद्धाचरणेन तैः बहुवारं गृहीतः कारागारे च प्रेषितः । जनताऽपि सोल्लासं गान्धिमहोदयाय सहयोगम् अयच्छत् । स्वतन्त्रता-प्राप्त्यै महात्मा गाँधी महान्तं प्रयत्नम् अकरोत्, येन बाध्या भूत्वा आंगलीयाः 1947 तमेऽब्दे अगस्त्य-मासस्य पंचदशतारिकायां भारतं स्वतन्त्रं कृत्वा स्वदेशम् अगच्छन् ।

किन्तु परमखेदस्य विषयो यत् 1948 तमेऽब्दे एकेन दुर्बुद्धिना महापुरुषस्यास्य संहारः कृतः । सत्यपि तस्य नश्वरे शरीरे विनष्टे स यशः कायेन अस्माकं मनःसु कृताधिष्ठानः सदैव जीवति जीविष्यति च ।

16. मम प्रियं पुस्तकम्

रामायणं मम प्रियं पुस्तकं वर्तते । सांस्कृतिकदृष्ट्या सामाजिकदृष्ट्या वा दर्शनेन मानवमात्रस्य महत्त्वपूर्णं नैतिकाचारशास्त्र वर्तते । एतस्य सर्वा अपि शिक्षा नैतिक्यो व्यावहारिकाश्च सन्ति । एतस्मिन् लेखकेन दशरथसीतारामलक्ष्मण प्रभृतीनामनेकेषां पात्राणाम् उदाहरणानि दत्त्वा मानवजीवनस्य अनेकाः समस्याः समाहितः । एतस्मिन् जीवनसमस्यानां सर्वाणि समाधानानि अपि तथाविधानि वर्तन्ते यैः मानवः स्वीयं जीवनमादर्शं कर्तुं शक्नोति ।

ऐतिहासिक दृष्टयाऽपि रामायणम् अत्यन्तं महत्त्वपूर्ण वर्तते । यदि कश्चित् प्राचीनभारतीय-संस्कृतेः आधुनिक भारतीय संस्कृतेः च तुलनात्मकम् अध्ययनं कर्तुं ईहते तदा इदं महाकाव्यम् तदर्थमत्यन्तमुपादेयं वर्तते, यतोऽस्मिन् ग्रन्थे प्राचीनभारतीय संस्कृतेः विस्तृतं चित्रमुपलभ्यते ।

इत्थं चेदं महाकाव्यं संस्कृतसाहित्ये एकम् अत्यन्तं सुन्दरं ग्रन्थरत्नं कथयितुं शक्यते ।

17. भारत-क्रिकेट-क्रीडायाः देदीप्यमानः तारकः कपिल देवः

भारतीय क्रिकेटदले कपिलदेवः एकः लीजेंडः अस्ति येन् टैस्टइतिहासेषु सर्वाधिकम् विकेटं आनयत् । अस्य नाम न केवलं भारतीयं क्रिकेटे एव प्रसिद्धम्, अपितु विश्वक्रिकेट इतिहासे अपि अस्य नाम स्वर्णाक्षरेषु वर्तते । 'भारते तीव्राः गेंदबाजाः कदापि न संभविष्यति' अस्य मिथं तेन सरलतया एव न केवलं स्वक्रीडया सम्भवं कृतः वरन् सर्वाधिकं विकेटानाम् बादशाहः भूत्वा एकं आश्चर्यम् आधत्ते (स्थापितं अकरोत्) । टैस्टशृखंलायाम् अयं स्वक्रीडया सर्वं क्रीड़ाजगत् अमोहयत् । अयम् पञ्चसहस्रम् धावनांक-(रन-संख्या) चतुरशतम् विकेटान् च अलभत् । एवम् सः 'समस्व-क्षेत्रे-समर्थ' अस्या प्रतिभायां विश्वइतिहासे एकाकी एव विद्यते ।

महानायकः कपिल देवः कन्दुकप्रक्षेपणे विलक्षणः आसीत तथैव अस्य बैट-चालन-कुशलता विजयिनी च वर्तते । क्रीडाक्षेत्रे अवतरितं कपिलदेवं दृष्टवा जनाः करतलध्वनिना एनम् अभिनन्दन्ति । अनेन भारतीय-क्रिकेट-क्रीडायाः स्वरूपे महत् परिवर्तनम् आनयत् । कपिल देवः स्वराज्य—हरियाणां

क्रिकेटे उत्थाप्य विशिष्टस्थानं अलभत्। सः 'हरियाणा हरीकेन' इति नाम्ना प्रसिद्धः अभवत्।

1983-84 तमे वर्षे वैस्टइंडीजदलेन सह क्रीडाप्रतियोगितायां कपिलदेवः 83 धावनांक (रन संख्या) दत्वा 9 विकेटान् अहमदाबादे अनयनत्। एनम् लब्धवा सः भारतस्य नाम विश्वे उज्ज्वलम् अकरोत्। 1983-84 तमे वर्षे अयं भारतदलस्य नायक रूपेण अगच्छत्। 1983 तमे वर्षे एव कपिलदेवः सर्वाधिक्क विकेटान् (75) नीत्वा भारतीय रिकार्डं अलभत्। एकमेव ओवरे चतुर्षु कन्दुक प्रक्षेपणे 24 धावनांक (रन संख्या) नीत्वा एकमात्र बैट-चालन-कुशलता कपिलदेवः 1990 तमे वर्षे इंग्लैंडदेशे 'लार्ड्स' इति क्षेत्रे 'एडी हैमिंग्स' महोदयस्य कन्दुकेषु अविन्दत्। सः अविस्मरणीयपद्धत्या रोमांचक परस्थितिषु धावनांकसंग्रहम् अकरोत्।

अद्यापि कपिल देवः क्रिकेटक्रीडकानां परम-यशस्वी नायकोऽस्ति। इत्थं विश्वविश्रुतः कपिल देवः सदा विजयतेतराम्।

सप्तम अध्याय

अंग्रेजी से संस्कृत में अनुवाद

(TRANSLATION FROM ENGLISH INTO SANSKRIT)

CHAPTER I

Person and Number

There are three persons in Sanskrit :

1. First Peerson 2. Second Person 3. Third Person

1. First Person— अहम् =I, वयम्=We.
2. Second Person— त्वम् =You यूयम् =You
3. Third Person— सः =He, ते =They

and all nouns as : बालः = Boy, गोपालः, कृष्णः, नरः =Man, अश्वः = Horse, सर्पः = Snake, करः = Hand etc., are used in Third Person.

There are three numbers in Sanskrit—

1. Singular Number, 2. Dual Number,
3. Plural Number.

Examples of persons and number :

	Singular	Dual	Plural
Third Person—	सः = He	तौ =They (two)	ते = They (more than two)
Second Person—	त्वम् = You (one),	युवाम् = You (two)	यूयम् = You (more than two)
First Person—	अहम् = I,	आवाम् = We (two)	वयम् = We (more than two)

Every root of verb has three persons and three numbers, as :

पठ् = to read, वद् = to speak, चल् = to go

भ्वादिगण (Present Tense)

See the conjugations of root पठ् with subject

	Singular	Dual	Plural
Third Person—			
	सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति
	[He reads]	[They (two) read]	[They (all) read]
Second Person—			
	त्वम् पठसि	युवाम् पठथः	यूयम् पठथ
	[You (one) read]	[You (two) read]	(You (all) read]
First Person—			
	अहम् पठामि	आवाम् पठावः	वयम् पठामः
	[I read]	[We (two) read]	[We (all) read]

Similar roots as पठ् :—

क्रीड् = to play – क्रीडति	खाद् = to eat – खादति
धाव् = to run – धावति	क्रीड्, खेल् = to play – खेलति
रक्ष् = to guard – रक्षति	हस् = to laugh – हसति
पच् = to cook – पचति	भ्रम् = to walk – भ्रमति
पत् = to fall – पतति	भज् = to pray – भजति

Model Translation of Subject & Verb

He speaks	सः वदति ।
They (two) play.	तौ क्रीडतः ।
They (all) run.	ते धावन्ति ।
You (one) guard.	त्वम् रक्षसि ।
You (two) cook.	युवाम् पचथः ।

You (all) laugh.	यूयम् हसथ ।
I pray.	अहम् भजामि ।
We (two) walk.	आवाम् भ्रमावः ।
We (all) eat.	वयम् खादामः ।
Rama plays.	रामः खेलति ।
Gopal falls.	गोपालः पतति ।

Exercise 1

Translate into Sanskrit—

1. The boy speaks.
2. Krishna plays.
3. He runs.
4. They (two) guard.
5. They (all) eat.
6. You (one) laugh.
7. You (two) run.
8. You (all) walk.
9. I read
10. We (two) speak.
11. We (all) pray.

Answer—

1. बालः वदति ।
2. कृष्णः क्रीडति ।
3. सः धावति ।
4. तौ रक्षतः ।
5. ते खादन्ति ।
6. त्वम् हससि ।
7. युवाम् धावथः ।
8. यूयम् भ्रमथ ।
9. अहम् पठामि ।
10. आवाम् वदावः ।
11. वयम् भजामः ।

Exercise 1

Q. Translate into Sanskrit—

1. The boy reads.
2. He speaks.
3. They (two) play.
4. They (all) run.
5. You (one) fall.
6. You (two) laugh.
7. You (all) eat.
8. I pray.
9. We (two) guard.
10. We (all) walk.

CHAPTER II
Case (कारक)

There are eight cases of nouns :—

	Name		Symbol of Cases	Examples in Singular
1.	कर्ता	Nominative	Use for subject	बालः
2.	कर्म	Accusative	to	बालम्
3.	करण	Instrumental	by, with	बालेन
4.	सम्प्रदान	Dative	for	बालाय
5.	अपादान	Ablative	from	बालात्
6.	सम्बन्ध	Genitive	of	बालस्य
7.	अधिकरण	Locative	into, on	बाले
8.	सम्बोधन	Vocative	to call	हे, भो, बालः !

(See the declensions in all cases of नर and बाल on page 5 & 6 and learn them by heart.)

The following words to be used as बाल or नर.

Subjects	Singular	Dual	Plural
छात्रः=Student	छात्रः (One student)	छात्रौ (two students)	छात्राः (many students)
भृत्यः = Servant	भृत्यः	भृत्यौ	भृत्याः
पाचकः = Cook	पाचकः	पाचकौ	पाचकाः
पादः = Foot	पादः	पादौ	पादाः
रजकः = Washerman	रजकः	रजकौ	रजकाः
मार्जारः = Cat	मार्जारः	मार्जारौ	मार्जाराः
अध्यापकः = Teacher	अध्यापकः	अध्यापकौ	अध्यापकाः
नृपः = King	नृपः	नृपौ	नृपाः
गजः = Elephant	गजः	गजौ	गजाः
मूषकः = Rat	मूषकः	मूषकौः	मूषकाः

काकः = Crow	काकः	काकौ	काकाः
मयूरः = Peacock	मयूरः	मयूरौ	मयूराः
ईशः = God	ईशः	ईशौ	ईशाः

Similar words — सूर्यः, पुत्रः, पर्वतः, समुद्रः, वृक्षः, सिंहः, ग्रामः, देवः, कूपः, चन्द्रः, मनुष्य etc.

Model Translation of cases

The student reads the book.	छात्रः पुस्तकं पठति ।
Two men pray to God.	नरौ ईश्वरं भजतः ।
All men walk with feet (two).	नराः पादाभ्यां चलन्ति ।
You (one) eat with hand.	त्वम् हस्तेन खादसि ।
You (two) run by feet (two).	युवाम् पादाभ्यां धावथः ।
You (all) study for money.	यूयम् धनाय पठथ ।
I fall from the tree.	अहम् वृक्षात् पतामि ।
The king's servant guards.	नृपस्य भृत्यः रक्षति ।
We (all) play in the ground.	वयम् क्षेत्रे क्रीडामः ।
We (two) laugh at the cook.	आवाम् पाचके हसावः ।
Oh God ! you save the man.	हे ईश ! त्वम् मनुष्यान् रक्षसि ।

Exercise 2

Translate into Sanskrit—

1. A man goes to the village.
2. All the men pray to God.
3. We play with the ball.
4. I go there for the fruits.
5. The boy falls from the tree.
6. We guard the country.
7. Gopal eats with both hands.
8. Why do you (one) laugh ?
9. You (all) walk in the play ground.
10. Gopal's son cooks.

CHAPTER III

Gender (लिंग)

There are three genders in Sanṣkrit—

1. पुँल्लिग (Masculine gender)
2. स्त्रीलिंग (Feminine gender)
3. नपुंसकलिंग (Neuter gender)

नर, बाल, छात्र etc., words are of masculine gender. Here are given some words of neuter gender with declensions in Nominative, Accusative and Vocative :

फल = Fruit

	Singular	Dual	Plural
प्रथमा (Nominative)	फलम् (one fruit)	फले (two fruits)	फलानि (many fruits)
द्वितीया Accusative	फलम् (to one fruit)	फले (to two fruits)	फलानि (to many fruits)
सम्बोधन (Vocative)	हे फल	हे फले	हे फलानि

Rest of the declensions in all the cases are same as those of नर or बाल .

Some other words of neuter gender—

उपवनम् = Garden　　क्षीरम् = Milk

क्षेत्रम् = Ground　　कन्दुकम् = Ball

पत्रम् = Letter, leaf　　द्रव्यम् = Wealth

Some more similar words—

जलम्, नगरम्, पुष्पम्, उत्तरम्, सत्यम्, असत्यम्, चित्रम्, मित्रम्, पुस्तकम्, धनम्, वस्त्रम्, शरीरम्, कमलम्, भारतम्, विषम्, भोजनम् etc.

All these words will be declined like फल.

Some New Changeable Roots

Some more roots:—

गम् (गच्छ) = to go —गच्छति	पा (पिब) = to drink — पिबति
दृश् (पश्य) = to see — पश्यति	स्था (तिष्ठ) = to stay — तिष्ठति
दा (यच्छ) = to give — यच्छति	

Some more roots :—

जि (जय्) = to win — जयति	भू (भव) = to be — भवति
नी (नय्) = to take — नयति	स्मृ (स्मर्) = to remember — स्मरति
हृ (हर्) = to steal — हरति	

See the conjugation of above roots on pages 16 and 17

Model translation of new words and roots.

They go to the village.	ते ग्रामम् गच्छन्ति ।
You (one) see the flower.	त्वम् पुष्पम् पश्यति ।
I give the cloth to the beggar.	अहम् याचकाय वस्त्रं यच्छामि ।
We drink the milk.	वयम् दुग्धं पिबामः ।
You (all) live in the town.	यूयम् नगरे वसथ ।
The farmer takes two horses.	कृषकः अश्वौ नयति ।
The thieves steal the wealth.	चौराः द्रव्यम् हरन्ति ।
The soldiers win the war.	सैनिकाः युद्धे जयन्ति ।
The students learn the lesson.	छात्राः पाठं स्मरन्ति ।
The cat eats the rat.	मार्जारः मूषकं खादति ।
The men walk with (two) feet.	मानवाः पादाभ्यां चलन्ति ।
The fruits fall from the tree.	फलानि वृक्षात् पतन्ति ।
He is a friend of Krishna.	सः कृष्णस्य मित्रम् अस्ति ।

Exercise 3

Translate into Sanskrit :

1. The boy falls from the wall.
2. The men walk in the garden.

3. The books are for reading (पठन).
4. The son reads a letter of his father.
5. The students give the answers.
6. I read the newspaper.
7. You go to the school.
8. The cook cooks the food.
9. We see with two eyes.
10. A rich man gives money to the beggars.

CHAPTER IV
Tense (काल)

There are three tenses:—

1. लट् लकार (Present tense)
2. लङ् लकार (Past tense)
3. लृट लकार (Future tense)

Present tense has been used in the previous pages. Now future tense is being explained—

पठिष्यति पठिष्यत: पठिष्यन्ति

(Conjugations are given on pages 26-27. Learn them by heart.)

Some Indeclinable words (अव्यय)

अत्र	Here	तदा	Then	सदा	Always
अद्य	Today	तत्र	There	ह्य:	Yesterday
अपि	Also	न	Not	श्व:	Tomorrow
एवम्	So	प्रात:	in the morning	शीघ्रम्	At once
किम्	What	यत्र	Where	अत:	Therefore
कुत्र	Where	यदि	If	अद्यत्वे	Now-a-days
कदा	When	यदा	When	कथम्	How
च	And	सायम्	in the evening	पुन:	Again

Model Translation

Use of future tense

Mohan will bow to the teacher.	मोहनः अध्यापकं नंस्यति ।
The boys will play in the ground.	बालाः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडिष्यन्ति ।
The brave men will guard India.	वीराः भारतं रक्षिष्यन्ति ।
We will walk in the garden.	वयम् उद्याने भ्रमिष्यामः ।
When will you cook the meal ?	यूयम् कदा भोजनं पक्ष्यथ ?
We (two) will eat the fruits today.	आवाम् अद्य फलानि खादिष्यावः ।
They will always laugh.	ते सर्वदा हसिष्यन्ति ।
The students will go to the school.	छात्राः विद्यालयं गमिष्यन्ति ।
The king will not see the thief.	नृपः चौरं न द्रक्ष्यति ।
You (one) will give the cloth.	त्वम् वस्त्रं दास्यसि ।
I shall drink milk tomorrow.	अहम् श्वः दुग्धं पास्यामि ।
He will speak to his friends.	सः मित्रैः सह वदिष्यति ।

Exercise 4

Translate into Sanskrit :

1. Where will we stay ?
2. You will win the war.
3. I shall go to city.
4. The boys will eat the food tomorrow.
5. We will see the cinema.
6. He will play in the garden.
7. What will you drink today ?
8. All the men will guard India.
9. The students will play with the ball.
10. They willl always laugh.
11. You and I will walk tomorrow morning.

CHAPTER V

New इकारान्त Words

Declensions of इकारान्त words and उकारान्त words are given on pages 34 and 39 as कवि (poet) and साधु (saint). Learn them by heart from there. Similar other words:—

रविः	Sun	अलिः	Honey fly	असिः	Sword
अरिः	Enemy	गिरिः	Mountain	कपिः	Monkey
अतिथिः	Guest	अग्निः	Fire	उदधिः	Sea
अहिः	Snake	नृपतिः	King	हरिः	Vishnu,
ऋषिः	Saint	विधिः	Luck		God

See उकारान्त word :—

भानुः	Sun	विधुः	Moon	बाहुः	Arm
शिशुः	Baby	बन्धुः	Brother	परशुः	Axe
रिपुः	Enemy	हेतुः	Reason	ऋतु	Season
तरुः	Tree	प्रभुः	Lord	वायुः	Wind
गुरुः	Teacher	मृत्यु	Death	पशुः	Animal
शम्भुः	God	विष्णुः	God	सिन्धुः	Sea

(See pages 34 & 39 for declensions of above words.)

Past Tense

It has been used in the previous pages 40-43 as अपठत् अपठताम् अपठन् etc. Learn them by heart.

Model Translation of Past tense

The saints lived in forest.	साधवः वने अवसन् ।
I took the food in the morning.	अहम् प्रातः भोजनम् अखादम् ।
The brave men won the war.	वीराः युद्धम् अजयन् ।
The snake ran away at once.	सर्पः शीघ्रम् अधावत् ।
We saw the king in the city.	वयं नगरे नृपतिम् अपश्याम ।
Gopal's servant came here.	गोपालस्य भृत्यः अत्र आगच्छत् ।

When you gave ten paise to the beggar, he became very glad.	यदा त्वम् भिक्षुकाय दश पणान् अयच्छः सः अतीव प्रसन्नः अभवत् ।
I told him the fact.	अहम् तम् सत्यम् अवदम् ।
The wind blew and the trees fell down.	वायुः अवहत्, तरवः च अपतन् ।
Oh Lord ! where do you live.	हे प्रभो ! त्वम् कुत्र वससि ?
He prayed to the sun.	सः रविम् अभजत् ।
Those guests came to the village.	ते अतिथयः ग्रामम् आगच्छन् ।

Exercise 5

Translate into Sankrit :

1. There are six (षट्) seasons in India.
2. The rays of sun are hot (उष्ण).
3. We defeated the enemies in the battle.
4. The fire cooked our food.
5. The poets wrote many poems (कविता).
6. What is the matter ?
7. I saw the teacher and ran away.
8. The gods drank Amrita.
9. Karna gave gold (स्वर्णम्) to the Brahmanas.
10. He read the book.
11. A man fell into the well (कूप).

CHAPTER VI

ऋकारान्त Words

पितृ	= Father	भ्रातृ	= Brother	दातृ	= Giver
कर्तृ	= Doer	हन्तृ	= Murderer		

See the declensions of above words on page 43.

There are two more tenses in Sanskrit. They are used

for order and invitation by respect. These are called लोट् लकार (Imperative) आज्ञा विधि लिङ् लकार and (Potential mood) विधि-निमन्त्रणादि etc.

You can see the conjugation of पठ् and वद् in this mood on pages 44-45 and 48. Learn them by heart.

All the rest of the roots are given on the same pages.

Model Translation

Mohan, give water to your father.	मोहन ! स्वपित्रे जलं यच्छ ।
Boys, read your lessons.	बालाः ! स्वपाठान् पठत ।
Servant, go home.	रे भृत्य ! गृहं गच्छ ।
Gopal, where is your brother ?	गोपाल, तव भ्राता कुत्र अस्ति ?
The king may win the enemies.	नृपतयः शत्रून् जयन्तु ।
The men should not tell a lie.	नराः असत्यं न वदेयु ।
We may guard India.	वयम् भारतं रक्षेम ।
Those murderers ought to run.	ते हन्तारः धावेयुः ।
You must speak the truth.	यूयम् सत्यं वदेत ।
Two princes may play in the playground.	राजकुमारौ क्रीडाक्षेत्रे क्रीडेताम् ।
Those boys may learn their lesson by heart.	ते छात्राः स्वपाठं स्मरेयुः ।
He may always laugh.	सः सर्वदा हसेत् ।

Exercise 6

Translate into Sanskrit :

1. The Indians may defend India.
2. All the students may read, take milk and play.
3. May I go to the garden for a walk ?
4. You must overcome the enemy.
5. The wise men always wish salvation.

6. We should always be happy.
7. Dear friend, always speak the truth.
8. Mother, please cook the food.
9. The workers may succeed in their work.
10. The rich people may give money and clothes to the poor.

CHAPTER VII

स्त्रीलिंग (Feminine Gender)

See the declension of आकारान्त लता on page 50 and learn them by heart.

Similar words as लता = creeper.

निशा	Night	जरा	Old age	ग्रीवा	Neck
सिता	Sugar	रसना	Tongue	पिपासा	Thirst
खट्वा	Bed	महिला	Lady	क्षुधा	Hunger
वसुधा	Earth	भार्या	Wife	दया	Pity

Some other words—

कन्या, घृणा, ईर्ष्या, जंघा, व्यथा, वेदना, क्रीड़ा, कला, ललना, वाटिका, अहिंसा, सीता, पाठशाला, अध्यापिका, बालिका, स्वतंत्रता, कथा ।

आत्मनेपद

Some roots are used in परस्मैपद and some in आत्मनेपद. पठ्, वद्, etc., roots, which are given on previous pages are of परस्मैपद. Now some आत्मनेपदी roots are given here :

सेव = to serve — सेवते	लभ् = to obtain — लभते
मुद् = to be pleased — मोदते	वन्द् = to bow — वन्दते
यत् = to try — यतते	सह् = to bear — सहते
शुभ् = to brighten — शोभते	रुच् = to like — रोचते
वृध् = to grow — वर्धते	वृत् = to be — वर्तते

See the conjugation of सेव् and other similar roots in all tenses on pages 52-53.

Model Translation

The pupils serve their teacher.	शिष्याः स्वं गुरुं सेवन्ते ।
The ladies feel happy with flowers.	महिलाः पुष्पैः मोदन्ते ।
I shall obtain the wealth.	अहम् धनं लप्स्ये ।
You make an effort in study.	यूयम् अध्ययने यतध्वम् ।
We bow to our motherland.	वयम् मातृभूमिं वन्दामहे ।
The moon looks beautiful in the night.	विधुः रात्रौ शोभते ।
The babies like the sweets.	मिष्टान्नं बालकेभ्यः रोचते ।
The public may progress in their works.	प्रजा स्वकार्येषु वर्धताम् ।
You will bear the trouble.	यूयम् कष्टं सहिष्यध्वे ।
We (two) served our parents.	आवां स्वपितरौ असेवावहि ।
He tries to obtain the money.	सः धनं लब्धुं यतते ।
They bore hunger and thirst.	ते क्षुधां पिपासां च असहन्त ।

Exercise 7

Translate into Sanskrit :

1. Indians may progress in the world.
2. Wise men obtain fame in the world.
3. I bore the trouble.
4. If you bear the trouble, you will feel happy.
5. We feel pleased when we see our brothers.
6. Those boys, who bow to their parents, obtain long life, high knowledge and fame.
7. Gobind likes the books.
8. Everybody tries to improve his postion.
9. Diseases grow in old age.
10. He ran, but could not catch the train (वाष्पयानम्).

CHAPTER VIII

New Words in Feminine Gender

इकारान्त—मति = wisdom, ईकारान्त—नदी = river and उकारान्त—धेनु = cow. These words in feminine gender are given before. See the declensions of these words on pages 56-57.

Words similar to मति

प्रीतिः	Love	विपत्ति	Trouble	हानिः	Loss
भूमिः	Land	वृष्टिः	Rain	सृष्टिः	World
कीर्ति	Fame	स्मृतिः	Memory	संगतिः	Company
युक्तिः	Way	नीतिः	Policy	वृद्धिः	Progress
परिस्थितिः	Circumstances	शक्तिः	Strength	सम्मतिः	Advice
सम्पत्तिः	Weath	भक्तिः	Prayer	प्रकृतिः	Nature

Words similar to नदी

भगिनी	Sister	विदुषी	Learned woman	पत्नी	Wife
रजनी	Night	नारी	Lady	पृथ्वी	Earth
राज्ञी	Queen	पुत्री	Daughter	जननी	Mother
लेखनी	Pen	मैत्री	Friendship	पुरी	City

Words similiar to धेनु

रेणुः = Dust   रज्जुः = Rope   चञ्चुः = Beak

Now here is given तुदादिगण. All the roots of (तुद्यदिगण)are same as भ्वादिगण. See the conjugations of लिख् (write) on page 58.

Roots similar to लिख् :—

इष् (इच्छ) = to want — इच्छति
प्रच्छ् (पृच्छ्) = to ask — पृच्छति
स्पृश् = to touch — स्पृशति
मुञ्च् = to leave — मुञ्चति
क्षिप् = to throw — क्षिपति
विश् = to enter — विशति
मिल् = to meet — मिलति
सृज् = to leave — सृजति
सिच् = to water — सिञ्चति
तुद् = to whip (inflict pain) — तुदति

Model Translation

I want that I should learn.	अहम् इच्छामि यत् अहं पठानि ।
The teacher put questions to the students.	अध्यापक छात्राम् प्रश्नान् अपृच्छत् ।
Do not touch the fire.	अग्निम् मा स्पृश ।
The queen touches the flowers.	राज्ञी पुष्पाणि स्पृशति ।
The sister meets her brother.	भगिनी स्व-भ्रातरं मिलति ।
The gardener watered the trees.	मालाकारः जलेन तरून् असिंचत् ।
Hari will write on the exercise book.	हरिः पंचिकायां लेखिष्यति ।
Why did you touch the fire?	त्वम् अग्निं कथम् अस्पृशः ।
We asked our professor.	वयम् प्राध्यापकम् अपृच्छाम ।
Learned ladies stand on their own feet.	विदुष्यः स्वाश्रिताः भवन्ति ।
Now-a-days there is too much water in the river.	अद्यत्वे नद्यां बहु जलं वर्तते ।

Exercise 8

Translate into Sanskrit :

1. Wise ladies want to acquire the knowledge.
2. A good man mixes with good men.
3. Mohan watered the plants.
4. We write with pens.
5. Friendship is a good thing.
6. I left the private service.
7. All boys put questions to their teachers.
8. He bound his bedding with the rope.
9. A cow gives milk.
10. A saint gives up the sin.

CHAPTER IX

Feminine Gender and दिवादिगण

See the declensions of वधू = Bride, मातृ = Mother, and roots of दिवादिगण in all tenses, on pages 61-64.

Similar ऊकारान्त words—

श्वश्रूः = Mother-in-law   चंचू = Beak

ऋकारान्त—   दुहितृ = Daughter

In दिवादिगण 'य' is added to the roots, as you can see in conjugations, as—

नृत्यति   नृत्यतः   नृत्यन्ति etc.

Learn them by heart from pages 62-63.

Similar Roots as नृत् = Dance of दिवादिगण—

नश् = to be destroyed — नश्यति   त्रस् = to fear — त्रस्यति

दीव् = to shine — दीव्यति   सिध् = to succeed — सिध्यति

क्रुध् = to be angry — क्रुध्यति   शुष् = to become dry — शुष्यति

कुप् = to be angry — कुप्यति   भ्रम् = to walk — भ्राम्यति

सीव् = to sew — सीव्यति   तुष् = to feel happy — तुष्यति

Model Translation

The sun shines in the sky.	आकाशे भानुः दीव्यति ।
The king's enemies are destroyed.	नृपतेः शत्रवः नश्यन्ति ।
All my works are completed.	मम सर्वाणि कार्याणि असिध्यन् ।
The teacher will be angry.	अध्यापकः क्रोत्स्यति ।
The Plants were dried by the sun.	तरवः आतपेन अशुष्यन् ।

I will be pleased, if you do my work.	अहं तोक्ष्यामि यदि त्वं मम कार्य करिष्यसि ।
The new bride brightens the house.	नवा वधूः गृहे दीव्यति ।
The girls danced well.	कन्याः शोभनम् अनृत्यन् ।
You fear the monkey.	त्वं कपेः त्रस्यसि ।
We walk in the garden.	वयम् उद्याने भ्राम्यामः ।
The tailor sewed my clothes.	सौचिकः मम वस्त्राणि असीव्यत् ।
The mother feels happy with the daughter's knowledge.	माता दुहितुः योग्यतया तुष्यति ।

Exercise 9

Translate into Sanskrit :

1. The night fell and the stars and the moon shone.
2. Babies dance, sing and feel happy.
3. Wisdom will be spoiled by greed.
4. The teacher is angry with the students.
5. We want to be popular in the world due to our goodness.
6. When the bride came in the house, all the family members became polite.
7. The mother's order is obeyed by all.
8. The girls danced well and obtained the prizes.
9. The tailor sews our clothes.
10. All the work succeeds by the toil.
11. The ladies and gents are walking on the grass.

CHAPTER X

Neuter Gender (चुरादिगण)

See the declensions of वारि = Water and मधु = honey on pages 64-65 and conjugation of the roots of चुरादिगण may be

seen on page 65. Learn them by heart.

Words to be declined as मधु = Honey—

वस्तु = Thing   अश्रु = tear

Roots to be declined as चुर् = to steal—

कथ्	to say	तड्	to beat	रच्	to build
पीड्	to give trouble	पूज्	to pray	भूष्	to decorate
चिन्त्	to think	गण्	to count	क्षल्	to wash
पाल्	to protect	दण्ड्	to punish	आ+कर्ण्	to listen
भक्ष्	to eat	धृ	to wear	तुल्	to weigh

Model Translation

The king's servants stole the wealth.	नृपस्य भृत्याः धनम् अचोरयन् ।
Every man of the world thinks.	संसारस्य प्रत्येकं मानवः चिन्तयति ।
We will take rice today.	वयम् अद्य ओदनं भक्षयिष्यामः ।
I wash my clothes myself.	अहम् स्ववस्त्राणि स्वयम् प्रक्षालयामि ।
You must pray to God.	यूयम् ईश्वरं पूजयत ।
Many men go to the forest for honey.	बहवः मनुष्याः मधुने वनम् गच्छन्ति ।
Water is a very good thing.	वारि एकम् शोभनम् वस्तु अस्ति ।
When the baby weeps, the tears fall on the earth.	यदा शिशुः रोदिति, तदा तस्य अश्रूणि भूमौ पतन्ति ।
They attend to the lesson.	ते पाठम् आकर्णयन्ति ।

Exercise 10

Translate into Sanskrit

1. Ravana stole Sita.

2. Rama punished Ravana.
3. The foolish man always thinks but does not act.
4. I will eat the fruit today.
5. The washerman washes the clothes.
6. We speak the truth.
7. The ladies are shining with new clothes and costly ornaments.
8. The shopkeeper weighed less.
9. You pray to Shiva.
10. We (two) will beat you, if you do not return our books.
11. The boy pleases his teacher.
12. Mohan beats the monkey with a stick.
13. He troubled the gentlemen.

CHAPTER XI

अदादिगण and सर्वनाम words

The conjugations of अस् are given on page 68-69, and declensions of सर्वनाम words are given on pages 71 to 76. Learn them by heart.

Declensions of युष्मद् and अस्मद् are very important. Learn them by heart.

Model Translation of अदादिगण (अस्) and सर्वनाम

Bring the meal for that man.	तस्मै पुरुषाय भोजनम् आनय ।
The animals live in the forest.	पशवः वने वसन्ति ।
Mohan, who is your father ?	मोहन ! तव पिता कः अस्ति ?
What is his name ?	तस्य किम् नाम अस्ति ?
For whom do you work?	त्वम् कस्य कार्यम् करोषि ?

He will be pleased with you.	सः त्वयि प्रीणयिष्यति ।
I brought many books for you.	अहं तुभ्यं बहूनि पुस्तकानि आनयम् ।
This man is very clever.	अयं पुरुषः अतीव चतुरः अस्ति ।
Where was your house before ?	पुरा तव गृहं कुत्र आसीत् ?
Singing of those girls was very sweet.	तासां कुमारीणां गानम् अतीव मधुरम् आसीत् ।
Where is your school ?	युष्माकं विद्यालयः कुत्रास्ति ?
Our college is in the Miranda House.	अस्माकं महाविद्यालयः मिरांडा-हाउस नाम्नि स्थाने अस्ति ।
I bless you, you may be successful in the examination.	अहं तुभ्यम् आशिषं यच्छामि यत्त्वं परीक्षायां सफलः भव ।
The soldiers, who won the war, were brave.	ये युद्धम् अजयन् ते वीराः योद्धारः आसन् ।

Exercise 11

Translate into Sanskrit :

1. Bharat is our motherland.
2. Rama was the eldest son of Dasharatha.
3. They were four brothers.
4. You were a wise man in childhood.
5. We were not free before 1947.
6. But now we all are independent.
7. All the boys of our school are patriot.
8. We will serve our country sacrificing our lives.
9. There are fifty-two girl students in the ninth class.
10. Please give that man five rupees.
11. Two and two make four.
12. He was cured with the valuable medicine.

Dialogue

Mohan	—	Dear Soha, will you come with me to the bazaar ?
Sohan	—	Yes, I shall go to the bazaar certainly.
Mohan	—	What is your job there ?
Sohan	—	I shall purchase garments and shoes.
Mohan	—	I purchased my uniform yesterday.
Sohan	—	What will you buy today.
Mohan	—	Shoes only.
Sohan	—	Make haste and be ready. (Both are walking in the bazaar).
Mohan	—	Dear Sohan, see two soldiers are carrying the man with them.
Sohan	—	Oh ! come on, we will see why the man is caught by them.
Mohan	—	Yes, I also want to know.
Sohan	—	It seems that he is a thief.
Mohan	—	I also think so.
Sohan	—	Let him go, come to the fruit market.
Mohan	—	Yes, there are many shops of fruits. Do you want to purchase some ?
Sohan	—	Yes, I like mangoes. Oh fruit seller ! What is the rate of mangoes ?
Shop-keeper	—	Three rupees and fifty paise for one Kilogram.
Mohan	—	Please give me one Kilogram.

Sohan	—	Let me taste a mango, I want to know whether they are sweet or sour.
Shop-keeper	—	There is no doubt about their sweetness.
Mohan	—	Thank you, take the price.
		(Both had the mangoes and went away.)

Exercise 12

Translate into idiomatic Sanskrit :

Salwan School,
New Delhi-5
Dated 1-3-98

Respected father,

You will be pleased to learn that I have passed the Higher Secondary Examination. I got first position in my school. I received your letter the day before yesterday, but was waiting for the result. Tomorrow, a function will be held in our school by the successful students. After this our respected Principal will deliver a presidential speech on our future career. Then we will be free to join any college. I want to continue the study further. I shall come to see you, respected mother, dear sisters and brothers.

I hope to leave by the train the day after tomorrow at 9 a.m. and I shall reach the village at 4 p.m. I hope, you will feel happy to see me. I shall have your blessings there.

Everything is alright here.

I am,
Your obedient son,
Rakesh Sharma

General Exercise 13

Translate into Sanskrit :—

1. Once a hunter spread his net in a jungle and put some rice on it. Some pigeons came down to eat the rice. There paws were caught in the net. Even then they flew high up in the sky along with the net. On seeing this, the hunter was frightened. He ran after them but they had gone very far. He felt troubled but had to remain silent and returned.
2. There lived a lion in a jungle. He used to kill the animals everyday for his food. All the animals gathered together and decided to send one animal daily to the lion. The lion agreed to their proposal. All prayed to God for the early death of the lion. One day when it was the turn of the hare, the hare got the lion killed by his wisdom and all the animals were glad to hear such a news. They praised the hare.

अष्ठ अध्याय

प्रथम परिच्छेद

पर्यायवाची शब्द

एक शब्द के समानार्थक शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं । पर्यायवाची भाषा के सौन्दर्य को बढ़ाने में सहायक होते हैं । निम्नलिखित कुछ पर्यायवाची द्रष्टव्य हैः—

असुरः	—	दानवः, दैत्यः, निशाचरः, राक्षसः ।
अम्बरम्	—	गगनम्, आकाशः, नभः ।
अग्नि	—	दहनः, हुताशनः, पावकः, अनलः ।
अनङ्ग	—	मदनः, कामदेवः, मन्मथः ।
आम्र	—	पिकबन्धुः, रसालः, सहकारः ।
अमृतम्	—	सुधा, पीयूषः, सोमः ।
आलोक	—	प्रकाशः, द्युतिः, प्रभा ।
इन्द्रः	—	सुरपतिः, सुरेशः, शक्रः, पुरन्दरः ।
कमलम्	—	अम्बुजम्, सरसिजम्, पद्मम् ।
कर	—	हस्तः, पाणिः, भुजः ।
गणेश	—	गजाननः, लम्बोदरः, विनायकः ।
गंगा	—	भागीरथी, मन्दाकिनी, जाह्नवी ।
गृहम्	—	भवनम्, सदनम्, आलयः ।
गज	—	हस्ती, करी, द्विप, मातंग ।
गुरु	—	शिक्षकः, उपाध्यायः, अध्यापकः ।
चन्द्र	—	इन्दुः, सुधाकरः, निशाकरः, राकेशः ।
छात्र	—	विद्यार्थीः, अन्तेवासीः, शिष्यः ।
दुःखम्	—	पीड़ा, वेदना, कष्टम् ।

चन्द्रिका	–	ज्योत्स्ना, कौमुदी ।
जलम्	–	आपः, वारि, नीर, पानीयम् ।
देव	–	सुरः, अमरः, विबुधः ।
दिवाकर	–	भानुः, रविः, सूर्यः ।
दिनम्	–	अह, वासरः, दिवसः ।
धनी	–	धनाढ्य, धनवान्, धनिकः ।
नदी	–	तटिनी, कल्लोलिनी, सरिता ।
निशा	–	रात्रि, रजनी, यामिनी, विभा ।
पवन	–	बातः, वायुः, अनिलः, मारूत् ।
पति	–	भर्ता, स्वामी, प्रियः ।
पिता	–	जनकः, तातः, जन्मदाता ।
पट	–	वस्त्र, वासः, परिधानम्, पर्यटम् ।
पुरुष	–	मनुष्यः, जनः, नरः, पुमान ।
पवित्रम्	–	पावनम्, शुद्धम् ।
पुत्री	–	तनया, सुता, आत्मजा, तनुजा ।
पृथ्वी	–	धराः, भूमिः, वसुधा, धारिणी, क्षिति, वसुन्धरा ।
पक्षी	–	खगः, विहगः, विहंगमः ।
पर्वत	–	गिरिः, शैलम्, भूधरः, नगः ।
पय	–	दुग्धम्, क्षीरम्, स्तन्यम् ।
पुष्पम्	–	कुसुमम्, प्रसूनम्, सुमनम् ।
ब्रह्म	–	चतुराननं, विधिः, पितामहः ।
भ्रमर	–	मधुकरः, अलिः, मधुपः ।
मित्रम्	–	सुहृत्, सखा ।
मेघ	–	जलदः, दारिदः, जलधरः, बलाहकः ।
मृग	–	हरिण, कुरंगः, सारंगः ।
माता	–	जननी, धात्री, जनयित्री ।
मति	–	बुद्धि, धी, मनीषा ।

राजा	—	नृपति, भूपति, नृपः, नरेशः ।
मीनः	—	मत्स्यः, मकरः, सफरी ।
लक्ष्मी	—	श्रीः, विष्णुप्रिया, कमला, रमा ।
वनम्	—	अरण्यम्, अटवी, विपिनम्, काननम् ।
वृक्ष	—	तरुः, पादपः, विटपः ।
शम्भु	—	शिवः, हरः, महादेवः, त्र्यम्बकम् ।
शत्रु	—	अरिः, रिपुः, विपक्षः ।
शरीरम्	—	तनुः, वपुः, गात्रम्, देहः ।
हरि	—	विष्णुः, लक्ष्मीपतिः, शेषशायी ।
समुद्र	—	जलधिः, वारिधि, सिन्धु, उदधिः, सागरः ।
सिंह	—	वनराजः, हरिः, केसरिः, मृगेन्द्रः ।

द्वितीय परिच्छेद

विपरीतार्थक शब्द

जब एक शब्द का अर्थ 'विपरीत' या भिन्न होता है तब ऐसे शब्द विपरीतार्थक या विलोम कहलाते हैं । कुछ विपरीतार्थक शब्द निम्नलिखित हैं :

अमृत	—	विषम्	अल्पः	—	बहुः
अधिकम्	—	न्यूनम्	अपमानः	—	सम्मानम्
अज्ञः	—	विज्ञः	अल्पायुः	—	चिरायुः
आस्तिकः	—	नास्तिकः	आदिः	—	अनादि
आकाशः	—	पाताल	अग्रजः	—	अनुजः
आलोक	—	तिमिर	आचारः	—	दुराचारः
अनुरक्ति	—	विरक्ति	आसन्नम्	—	दूरम्

अवनति	— उन्नति	इच्छा	— अनिच्छा
इष्टम्	— अनिष्टम्	उष्णम्	— शीतम्
उदारः	— कृपणः	उत्थानम्	— पतनम्
उपस्थितः	— अनुपस्थितः	उपकारः	— अपकारः
उच्चः	— नीच	उत्तीर्णः	— अनुत्तीर्णः
कोमलः	— कठोरः	क्रयः	— विक्रयः
कृपणः	— उदार	कृष्ण	— श्वेत
कटु	— मृदु	कृतघ्न	— कृतज्ञ
चिरम्	— अचिरम्	क्रमः	— व्यतिक्रम
कुंपात्रम्	— सुपात्रम्	खल	— सज्जनः, साधु
चर	— अचर	छल	— निश्छलः
जयः	— पराजयः	जीवनम्	— मरणम्
तमः	— प्रकाशः	दुःखम्	— सुखम्
दुश्चरित्रम्	— सुच्चरित्रम्	दुर्गतिः	— सद्गतिः
देवः	— दानवः	दिनम्	— रात्रि
दुर्लभः	— सुलभ	धनी	— निर्धनः
धर्मः	— अधर्म	निषेधः	— विधिः
निर्धनः	— धनिकः	नूतनम्	— पुरातनम्
निशा	— दिवा	निराकारः	— साकारः
निन्दा	— स्तुतिः	परिचितः	— अपरिचितः
पापम्	— पुण्यम्	प्रकाशः	— अन्धकारः
प्रातः	— सायम्	परतन्त्रता	— स्वतन्त्रता

पुरातनम् — नवीनम्
पवित्रम् — अपवित्रम्
परः — निजः
बन्धनम् — मोक्ष
मूर्खः — विद्वान्
विनाशः — रक्षणम्
विधवा — सधवा
सृजनः — विनाशः
सदाचारः — दुराचारः
संरक्षकः — घातक
सम्पत्तिः — विपत्तिः
समः — विषमः
शान्तिः — अशान्तिः
शीलम् — दुश्शीलम्
सुन्दरः — कुरुपः
सज्जनः — दुर्जनः
ज्ञातम् — अज्ञातम्
सुसंगतिः — कुसंगतिः
स्वतन्त्रता — परतन्त्रता
सन्तोषः — लोभः
सुकरम् — दुष्करम्
सभ्यता — असभ्यता

मान — अपमान
परार्थ — स्वार्थ
पुराणम् — नवीनम्
निद्रा — जागरणम्
रागः — विरागः
वीर — कापुरुष
सत्यम् — असत्यम्
सुकृतम् — दुष्कृतम्
सन्धिः — विग्रहः
सुमतिः — कुमतिः
संयोगः — वियोगः
सरलम् — कठिनम्
शीघ्रम् — विलम्बम्
शिवम् — अशिवम्
स्वदेश — विदेशः
महान् — अल्प
यशः — अपयशः
सुबोधः — दुर्बोधः
संग्रहः — त्यागम्
सुगन्धिः — दुर्गन्धिः
विश्वास — अविश्वास

तृतीय परिच्छेद

संस्कृत की सूक्तियाँ

छात्र-छात्राओं के साधारण ज्ञान के लिए निम्नलिखित कुछ प्रसिद्ध सूक्तियाँ प्रस्तुत की जा रहीं हैं :

1. अति सर्वत्र वर्जयेत् – सभी वस्तुओं की अधिकता वर्जित है ।
2. दूरस्था पर्वता रम्या – पर्वत दूर से सुहावने लगते हैं ।
3. संशयात्मा विनश्यति – संशय ग्रस्त व्यक्ति नष्ट होता है ।
4. दीर्घसूत्री विनश्यति – बहुत अधिक समय सोनेवाले व्यक्ति का विनाश होता है ।
5. इष्ट धर्मेण योजयेत् – प्रिय वस्तु को धर्म से मिला दें ।
6. सर्वे गुणा कांचनमाश्रयन्ति – सभी गुण धन में ही निहित हैं ।
7. विश्वासो फलदायकः – विश्वास ही फल देता है ।
8. यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषी – प्रयत्न करने पर भी यदि कार्य सिद्ध नहीं हो तो कर्त्ता का कोई दोष नहीं रहता ।
9. उद्यमेनैव हि सिद्धयन्ति कार्याणिन मनोरथै – प्रयत्न से ही कार्य सिद्ध होते हैं, न कि केवल विचार करने से ।
10. विभातिकाया करुणापराणाम् – शरीर की शोभा करुणा, उपकार तथा जीवों पर दया करने से होती है, शरीर को सजाने से नहीं ।
11. कण्टकेनैव कण्टकम् – काँटे से काँटा निकाला जाता है ।
12. नवा वाणी मुखे मुखे – पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं ।
13. बलं प्रधानं न नयः प्रधानः – जिसकी लाठी उसकी भैंस ।
14. कीर्तियस्य स जीवति – यशस्वी पुरूष अमर होता है ।
15. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी – जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है ।

परिशिष्ट

अनुवादार्थ हिन्दी-संस्कृत-कोश

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
अखबार	— समाचारपत्रम्	इन्सपैक्टर	— निरीक्षकः
अंगीठी	— अंगारधानी	इलेक्शन	— निर्वाचनम्
अंगूठी	— अंगुलीयकम्	इन्जैक्शन	— सूच्या भेषज-भरणम्
अचार	— सन्धितम्	ईंट	— इष्टका
अजायबघर	— कौतुकागारम्	ईस्वी सन्	— खीष्टाब्दः
अनार	— दाडिमम्	उस्तरा	— क्षुरः
अफ़सोस	— खेदः	उंगली	— अंगुलिः
अमरूद	— अमृतफलम्	उपजऊ	— उर्वरा
आँसू	— अश्रु (नपुं०)	ऊसर	— ऊषरः
आग	— अग्निः	ऊन	— ऊर्णा
आटा	— चूर्णम्, पिष्टम्	ऊनी	— और्णम्
आफ़िस	— कार्यालयः	उड़द	— माषः
आवहवा	— जलवायुः	ऐनक	— उपनेत्रम्
आबादी	— जनसंख्या	ऐक्टर	— अभिनेता
आमदनी	— आयः	ओंठ	— ओष्ठः
अफ़सर	— अधिकारी	औज़ार	— यन्त्रम्
इनाम	— पुरस्कारः	कंधा	— स्कन्धः
इन्तज़ाम	— प्रबन्धः	कंघी	— कंकतिका
इशारा	— संकेतः	ककड़ी	— कर्कटी

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
कचहरी	— न्यायालयः	ख़ज़ाना	— कोषः
कड़छी	— दर्विः	ख़जांची	— कोषाध्यक्षः
कड़ाही	— कटाहः	खटमल	— मत्कुणः
कढ़ी	— क्वथिता	खट्टा	— अम्लम् (वि०)
कब्ज	— मलावरोधः	खरबूजा	— कालिङ्गः
कमर	— कटिः	खरीदार	— ग्राहकः
कलाई	— मणिबन्धः	खाँड	— सिता
कलेवा	— प्रातराशः	खांसी	— कासः
कातना	— वयनम्	खाट	— खट्वा
कालीन	— कुथः	खाज	— कण्डूः (स्त्री०)
कालेज	— महाविद्यालयः	खिचड़ी	— कृशरा
किवाड़	— द्वारम्	खिड़की	— वातायनम्
कीमत	— मूल्यम्	खुश	— प्रसन्न (वि०)
कुंजी	— कुंचिकी	खोलना	— उद्घाटनम्
कमीज़	— कंचुकम्	खीर	— पायसम्
कैमरा	— छायाचित्रयन्त्रम्	खूँटी	— नागदन्तः
कोयला	— लाहलः	गंडेरी	— इक्षुगुटिका
केला	— कदलीफलम्	गन्ना	— इक्षुः
कुत्ता	— कुक्कुरः, सारमेयः	गप्प	— गल्पः
कै	— वमनम्	ग़रीब	— दरिद्रः, निर्धनः
कूड़ा	— अवकरः	गला	— ग्रीवा
कुर्सी	— वेत्रासनम्	गली	— रथ्या
कौंच	— विश्रामासनम्	गाल	— कपोलः, गण्डः
कैंची	— कर्तनी	गिरवी	— न्यासः

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
गिलास	— पानपात्राम्	घूँघट	— अवगुण्ठनम्
गीला	— आर्द्रः (वि॰)	घूस	— उत्कोचः
गुड़	— गुड़ः	घोंसला	— नीड़ः
गुड्डी	— पतंगः	घटा	— होरा (स्त्री॰)
गुलाब	— सेवती, भूमिकमलम्	चाय	— कामरूपिका
ग़ैरहाज़िर	— अनुपस्थितः	चटनी	— तेमनम्, अवलेहः
गोद	— क्रीडः	चना	— चणकः
गोडा	— जानु	चपरासी	— भृत्यः
गर्दन	— ग्रीवा	चबाना	— चर्वणम्
गड्ढा	— गर्त्तः	चमचा	— चमसः
गेहूँ	— गोधूमः	चाँदी	— रजतम्
गेंद	— कन्दुकम्	चाकू	— छुरिका,
गोली (बन्दूक की)	— गुलिका	चाचा	— पितृव्यः
		चाची	— पितृव्या
गोली (दवा की)	— गुटिका, वटी	चावल	— तण्डुलः
		चिड़िया	— चटकः
घड़ा	— घटः	चिनगारी	— स्फुलिंगः
घड़ी	— घटिका	चिमटा	— संदंशकः
घर	— गृहम्	चींटी	— पिपीलिका
घायल	— आहतः	चीनी	— शर्करा, सिता
घाव	— व्रणः	चौक	— चतुष्पथः
घास	— तृणम्, घासः	चौकीदार	— प्रहरिन्
घी	— धृतम्	चूल्हा	— चुल्लिका
घुटना	— जानु	चूना	— सुधा

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
छत	— छदिस्, पटलम्	झाड़ू	— संमाजनी
छाता	— छत्रम्	झापड	— करतलप्रहार:
छाती	— उरस् (नपुँ॰)	झूला	— दोला
छींक	— क्षवथु:, छिक्का	टाँग	— जंघा
जज	— न्यायाधीश:	टिकट	— चिटिका, अभिज्ञानपत्रम्
जलपान	— अल्पाहार:		
जहाज़ (हवाई)	— विमान:	टोपी	— शिरस्त्राणम्, शिरस्कम्
जहाज़ (समुद्री)	— पोत:	ठण्ड	— शीतम्
		ठोढ़ी	— हनु (नपुँ॰), चिबुकम्
जूता	— पादत्राणम्		
जलेबी	— चक्रिका	डाक्टर	— चिकित्सक:
जल्सा	— उत्सव:	डाकिय	— पत्रवाहक:
जवान	— तरुण:	डाकू	— लुण्ठक:
जाँघ	— जंघा, जघनम्	डर	— भयम्
जाड़ा	— शिशिर:	डाकघर	— पत्रालय:
जादू	— इन्द्रजालम्	डायरी	— दैनन्दिनी
जादूगर	— ऐन्द्रजालिक:	ढिंढोरा	— घोषणा
जायदाद	— सम्पत्ति:	ढकना	— आच्छादनम्
ज़िला	— प्रान्त:, मण्डलम्	ढीठ	— धृष्ट:
जुकाम	— प्रतिश्याय:	ढूँढना	— अन्वेषणम्
जूठा	— उच्छिष्टम्	ढोल	— पटह:
जूड़ा	— जूट:	तकिया	— उपधानम्
जेब	— कञ्चुककोश:	तख़्त	— काष्ठफलकम्

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
तनख्वाह	— वेतनम्	दामाद	— जामाता (तृ)
तन्दूर	— आपाकः, ऊष्मकः	दवात	— मसीपात्रम्
तम्बाकू	— तमाखुः	दीवार	— भित्तिः, कुड्यम्
तम्बू	— पटमण्डपम्	दुकान	— विपणिः, आपणः
तरबूज़	— तरम्बुजम्	दुकानदार	— पण्यजीवः
तराजू	— तुला	दुकानदारी	— वाणिज्यम्
तार	— तारः, धातुसूत्रम्	दोपहर	— मध्याह्नम्
तारीख़	— तिथिः	दूध	— दुग्धम्
ताला	— तालः, विष्कम्भः	दाल (कच्ची)	—द्विदलम्
ताश	— पत्रक्रीड़ा	दाल (पक्की)	— सूपः
तेल	— तैलम्, स्नेहः	दवा	— औषधम्
तैरना	— तरणम्	दियासलाई	— दीपशलाका
तोप	— सहस्रघ्नी	दिल्ली	— इन्द्रप्रस्थम्
तवा	— ऋषीजम्	दर्जी	— सौचिकः
थकना	— श्रान्तिः	धोती	— धौतवस्त्रम्
थाली	— स्थाली	धोबी	— रजकः, निर्णेजकः
थैला	— प्रसेवः	धुआँ	— धूमः
थर्मामीटर	— तापमापकयन्त्रम्	धूप	— आतपः
दरी	— कुथः	धोखा	— छलम्
दही	— दधि (नपुँ०)	धन्यवाद	— साधुवादः
दाड़ी	— श्मश्रु (नपुँ०)	ननद	— ननान्दा (दृ)
दाद	— दद्रुः	नमक	— लवणम्
दादा	— पितामहः	नाक	नासिका
दादी	— पितामही	नाखून	— नखः

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
नाच	— नृत्यम्	पिस्तौल	— लघुनलास्त्रम्
नाना	— मातामहः	पुलिस	— रक्षापुरुषः
नानी	— मातामही	पूरी	— शष्कुली
नेशनल	— राष्ट्रिय (वि०)	पेट	— जठरः, उदरम्
नौकरी	— भृत्यता, सेवा	पैंसिल	— लेखनवर्तिका
नाई	— नापितः	पेशाब	— मूत्रम्
नाप	— मानम्	पैसा	— पणः
नींद	— निद्रा	पाउडर	— सुरभिपरागः
नींबू	— जम्बीरम्	प्याज़	— पलाण्डुः
नारियल	— नारिकेलम्	प्यास	— पिपासा
नुमाइश	— प्रदर्शनी	प्रेस	— मुद्रणालयः
पंखा (हाथ का)	— व्यजनम्, तालवृन्तः	पतीला	— स्थाली
		फ़र्श	— कुट्टमः
पंखा (बिजली का)	— विद्युद्-व्यजनम्	फुटबाल	— पादकन्दुकम्
		फ़सल	— शस्यम्
पगड़ी	— उष्णीषः, शिरोवेष्टनम्	फ़ीस	— शुल्कः
		फुन्सी	— स्फोटः
पाजामा	— शाकटम्	फुर्ती	— स्फूर्तिः
पत्ता	— पत्रम्, पर्णम्, दलः	फ़ेल	— अनुत्तीर्ण (वि०)
पत्थर	— प्रस्तरम्, पाषाणः	फ़ोटो	— प्रतिचित्रम्
परौंठा	— घृतपूर्णकरपट्टिका	फ़ोड़ा	— व्रणः
पलंग	— पर्यङ्कम्	फ़ौज	— सेना, बलम्
पाँव	— पादः	बटन	— गंडः
पागल	— उन्मत्तः	बढ़ई	— तक्षकः, वार्धुषिकः

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
बदला	— विनिमयः	भूखा	— क्षुधार्तः
बम	— अग्न्यस्त्रम् बम्बास्त्रम्, महत्स्फोटकः	भैंस	— महिषी
		भौंह	— भृकुटी
बन्दूक	— द्विनालिका, भुशुण्डी	मक्खन	— नवनीतम्
बारात	— वरयात्रा	मामा	— मातुलः
बलग़म्	— कफः, सिंघाणकम्	मामी	— मातुलानी
बाज़ार	— आपणम्, हट्टः	माथा	— मस्तकम्
बेंच	— काष्ठफलकम्	मच्छर	— मशकः
बेचनेवाला	— विक्रेता	मज़दूर	— श्रमजीविन्
बिजली	— विद्युत, तड़ित्	मज़दूरी	— वेतनम्
बिस्तर	— विष्टरम्, आस्तरणम्	मजिस्ट्रेट	— धर्माध्यक्षः
बहनोई	— भगिनीपतिः	मरहम	— व्रणलेपः
बहरा	— वधिरः	मशीन	— यन्त्रम्
बाईसिकल	— द्विचक्रिका	मालिश	— मर्दनम्
बाढ़	— आप्लावः	मिट्टी	— मृत्तिका
बातचीत	— वार्तालापः, संलापः	मिठाई	— मिष्टान्नम्
बादाम	— वातादफलम्	मिर्च	— मरीचिका
बाल्टी	— द्रोणम्	मूँछ	— श्मश्रु, मुच्छम्
बिच्छू	— वृश्चिकः	मेम्बर	— सदस्यः
भाँजा	— भागिनेयः	मेज़	— फलकः (म्)
भाई	— भ्राता (तृ), सहोदरः	मेला	— मेलकम्
भाजी	— शाकः	मक्खी	— मक्षिका
भीड़	— जनौघः	मूंग	— मुद्गः
भूख	— क्षुधा	मशीनगन	— शतघ्नी

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
मोटर	— मृत्तरः (म्)	वोट	— मतम्
महल	— सौधः	शरबत	— मधुरपेयम्,
यूनिवर्सिटी	— विश्वविद्यालयः		श्रमपरिहारकः
रजाई	— तूलाच्छादनम्	शराब	— मद्यम्
रजिस्टर	— पञ्जिका	शहर	— पुरम्
रसीद	— प्राप्तिपत्रम्	शाबास	— साधुवादः
रुपया	— रूप्यकम्, मुद्रा	शामियाना	— वितानम्
रूमाल	— करवस्त्रम्, करपटः	शिकार	— मृगया, आखेटः
रेलगाड़ी	— धूम्रशकटम्	शुक्रिया	— धन्यवादः
रेशम	— कौशेयम्	शौकीन	— आरक्तः, अनुरक्तः
रोटी	— करपट्टिका	शीशा	— दर्पणः
रेडियो	— आकाशवाणीयन्त्रम्	सास	— श्वश्रूः (स्त्री॰)
	ध्वनिक्षेपक्रयन्त्रम्	ससुर	— श्वशुरः
लकड़ी	— काष्ठम्, ईन्धनम्	साला	— श्यालः
लड्डू	— मोदकम्	साड़ी	— शाटिका
लहसुन	— लशुनम्	सिरदर्द	— शिरोवेदना
लहू	— रक्तम्	सुर्मा	— कज्जलम
लिफ़ाफा	— वेष्टितपत्रम्	सिनेमा	— चलचित्रम्
लोहार	— लौहकारः	स्टेशन	— मंचः
लीडर	— नेता	सड़क	— राजमार्गः
लायब्रेरी	— पुस्तकालयः	सीढ़ी	— सोपानम्
वकालत	— उत्तरवादः,	स्विच	— विद्युत्कुंचिका
	वाक्कीलविद्या	सुई	— सूची
व्याज	— लाभः, वार्धुष्यम्	सुनार	— स्वर्णकारः

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
सरकारी	— राजकीयः	स्लेट	— प्रस्तरफलकः, पाषाणपट्टिका
सन्	— ईशवीयाब्दः		
सन्तरा	— नागरंगः	हलवा	— संयावः, लप्सिका
संदूक	— पेटिका, मंजूषा	हक	— अधिकारः
सरसों	— सर्षपः	हजामत	— क्षौरम्
साइन्स	— विज्ञानम्	हड्डी	— अस्थि (नपुँ०)
साबुन	— मलहरणम् शोधकम्, मार्जनलेपः	हफ्ता	— सप्ताहः
		हल	— हलम्
सामान	— उपकरणम्, वस्तुजातम्	हलवाई	— सांयाविकः
		हल्दी	— हरिद्रा
सालाना	— वार्षिकम् (वि०)	हल्ला	— कोलाहलः
सिनेट	— शिष्टसभा	हाल	— वृत्तम्, समाचारः
सींग	— शृंगम्	हिम्मत	— साहसम्
सुतली	— अतसी-रज्जुः	हुक्का	— धूम्रपानसाधनम्, धूम्रपानयन्त्रम्
सुपारी	— पूगः		
सूती	— कार्पासिकम्		
सेब	— अतीसफलम्	हैज़ा	— विषूचिका
सोंठ	— शुंठः, शुंठी	होटल	— भोजनालयः
सोसायटी	— समाजः, लोकसंघः	होस्टल	— छात्रावासः
सौफ़	— छत्राबीजम्, सालेयः	हथेली	— करतलम्

- संस्कृत की प्रारंभिक शिक्षा के लिए सहायक पुस्तक।
- बाजार में उपलब्ध पुस्तकों की तुलना में अधिक उपयोगी।
- व्याकरण एवं रचना का अध्ययन एक ही पुस्तक में।
- संस्कृत अध्ययन के लिए सहायक।



पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०